आध्यात्मिक क्रान्ति गीत

2537 किलो महानिर्वाण लाडू समर्पण

2537 किलो महानिर्वाण लाडू समर्पण, 2537 श्रीफल अर्पण सहित
दीपावली महोत्सव कार्यक्रम में उद्‌बोधन/आह्वान/नियम प्रदान करते हुए
आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव।
(अतिशय क्षेत्र सीपुर, 2010)

भाव एवं शब्द

आचार्य श्री कनकनंदी

प्रस्तुति - आर्यिका क्षमाश्री आदि

आचार्य कनकनंदी द्वारा अध्यापन

आचार्य कनकनंदी स्वसंघ तथा आचार्य अभिनन्दन सागरजी गुरुदेव ससंघ को अध्यापन कराते हुए। (साधुतीर्थ पाडवा-2008)

आचार्य कनकनंदी द्वारा अध्यापन

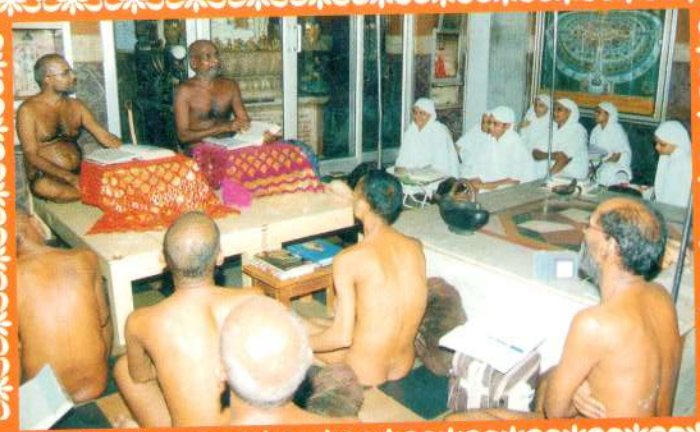

आचार्य कनकनंदी गुरुदेव स्वसंघ तथा आचार्य विरागसागरजी गुरुदेव ससंघ को समयसार ग्रन्थ का अध्यापन कराते हुए। (डूँगरपुर-2009)

आध्यात्मिक क्रान्ति गीत

भाव एवं शब्द - आचार्य श्री कनकनन्दी जी

प्रस्तुति - आर्यिका क्षमाश्री आदि द्वारा

पुण्य स्मरण

ब्र. फाल्गुनी दीदी के दस उपवास की पुण्य स्मृति में

ग्रंथांक - 196 प्रतियाँ - 1000

संस्करण - 2011 मूल्य - 51/- रु.

द्रव्यदाता (ब्र. फाल्गुनी का पूर्व गृहस्थ परिवार)

1. श्री सुदर्शन कुमार झुंबरलालजी अजमेरा, ठि. सिद्धि कॉलोनी के पीछे अरिहंत नगर, जैन मंदिर के पास, बी-21, औरंगाबाद, (महाराष्ट्र) मोबाईल : 9371996077
2. श्री छगनलाल जी मास्टर, सलूम्बर (प्रतिवर्ष 1100/- रु. देने का संकल्प)

-: प्राप्ति स्थान :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा - श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा,
चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास
उदयपुर (राज.) - 313001

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. नारायणलाल कछारा (सचिव)
55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) - 313001
फोन नं. (0294) 2491422, मो. 9214460622
E-mail : nlkachhara@yahoo.com

लेखक - आचार्य श्री कनकनन्दी जी

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय	पृ.सं.
1.	आध्यात्मिक क्रान्ति-गीत (गीत का स्वरुप एवं परिणाम)	6
	परिच्छेद-I	
	प्रार्थना एवं मंगलाचरण	
2.	आध्यात्मिक प्रार्थना	9
3.	आदिनाथ स्तुति	10
4.	सार्वभौम क्रान्ति अग्रदूत आदिनाथ भगवान्	11
5.	विश्व शान्ति प्रवक्ता महावीर भगवान्	12
6.	आतम को पाना है	13
	परिच्छेद-II	
	आध्यात्मिक क्रान्ति-गीत	
7.	आध्यात्म प्याला पीने वाला	14
8.	धर्म के अभाव में सुख नहीं	15
9.	भाव से सम्भव है परिणाम	16
10.	ज्ञान विज्ञान अविष्कारकःभारत	17
11.	सफलता के सूत्र	18
12.	विकास का अर्थ	19
13.	उदार निःस्वार्थ अहिंसा	20
14.	यह संसार असार	21
15.	जग में गणित प्रमाण	21
16.	सुयोग्य शिक्षा से क्रान्ति	22
17.	धर्म सरल है धर्म सहज है	23
18.	उपलब्धि से सदुपयोग दुर्लभ	24
19.	शिक्षा व ज्ञान में अन्तर	25
20.	आदर्श जीवन (सम्यक् दिनचर्या)	26

अ.क्र.	विषय	पृ.सं.
	परिच्छेद-III	
	क्रान्तिकारी गीत	
21.	भारत के पञ्चाश्चर्य!	28
22.	भारत की कमियाँ	29
23.	भो भारतीय आधुनिक भवो	30
24.	अप टू डेट बनने के फार्मूले	31
25.	आचार्य श्री कनकनन्दी की चिन्ता-चिन्तन-विवशता	32
26.	आधुनिक विज्ञान से परे, जिनागम विज्ञान	33
27.	जैन धर्म की प्रभावना-प्रगति कैसे हो	34
28.	नारी पूजनीया कैसे बने	35
29.	नारी नारी की अरि न बने	36
30.	सूरी कनकनंदी की भावी भावनायें	37
	परिच्छेद-IV	
	आचार्य कनकनंदी की बाल शिक्षा पद्धति	
31.	आहार दान की नवधा भक्ति	38
32.	अंजना चरित्र	39
33.	श्रीपाल चरित्र	40
34.	सीता सती चरित्र	42
35.	आहार दान की महिमा	44
36.	णमोकार मंत्र की महिमा	45
37.	आहारदान अनुमोदना का फल	46
38.	बच्चों से प्राप्त शिक्षायें	47
39.	ग्रामीण संस्कृति	48

परिच्छेद-V

गुरु गुणगान

40. गुरु विनय पद्धति 49
41. गुरु का सेवा फल 51
42. आचार्य कनकनन्दी की आध्यत्मिक यात्रा 52
43. आचार्य कनकनंदी का आह्वान 56
44. मेरे 35 वर्षीय अनुभव में आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव 56
45. मैं मूक-बधिर-एकान्तवासी क्यों बनता जा रहा हूँ? 65
46. छोटी सी उमर में बन गये वैरागी 68
47. कनकनन्दी के रंग में 69
48. वैश्विक विचारक आ.श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव का परिचय 70
49. छुल्लक कनकनन्दी मुनि बने! 71
50. उपाध्याय कनकनन्दी बने आचार्य 72
51. आचार्य श्री के अध्ययन-अध्यापन-कृतित्व 73
52. आचार्य श्री से शिक्षा पाएँ शिष्य सारे 74
53. गुरु कनकनन्दी साम्यव्रतधारी 75
54. वन्द्य चरण जिनके 77
55. आचार्य श्री का अध्ययन निराला 77
56. शत-शत वन्दन मेरे गुरु का 78
57. कनकनन्दी रवि 79
58. मोक्ष की मञ्जिल पाना है तो 80
59. गुरु सिखाते हैं गुरु पढ़ाते हैं 81
60. वैश्विक विचारक आ.कनकनन्दी जी का व्यक्तित्व 82
61. सूरी कनकनन्दी का गुणगान 82
62. कर जीवन समर्पित गुरु के द्वारे 84

63. आ. कनकनन्दी का सत्संग 84
64. कनकनन्दी गुरु की शरणा आना 85
65. कनकनन्दी गुरु को वन्दन 86
66. आचार्य श्री का व्यक्तित्व 87
67. न सुनू न किसी को सुनाऊँ 88
68. एकान्तवास क्यों? 88
69. आचार्य सूरीवर कनकनन्दी ऋषिवर 89
70. कनकनन्दी का हृदय कहे 90
71. कनकनन्दी गुरु गुणधारी 90
72. गुरुराज SSS गुरुराज 91
73. गुरु चरण में नमन 92
74. आचार्य श्री का सन्देश 93
75. गुरुवर का आदर्श हमारा कर्त्तव्य 94
76. गुरुवर को पड़गाहेंगे 95
77. प्रार्थना (गुरुवन्दना) 96

परिच्छेद-IV

पूज्य-पूजा-आराधना

78. सीपुर वाले काले-काले बड़े बाबा की जय 97
79. श्रेयांसनाथ भगवान की आरती 102
80. सीपुर को तीर्थ बनाया है 103
81. आ.श्री कनकनन्दी जी का पूजन 104
82. कनकनन्दी है नाम तुम्हारा - आरती-1 108
83. आरती-2-हमने लिया है दीपक प्रजाल 109
84. आरती-3-आरती करने आए रे गुरुवर जी तुम्हारी 110
85. विश्व मैत्री भावना 111
86. भारत के घर गली की वधशाला/यातना गृह बंद हो 112
87. आ. कनकनन्दीजी के साहित्य कक्ष की स्थापना एवं शोधकार्य सम्बन्धित विश्वविद्यालय 113

आध्यात्मिक क्रान्ति-गीत

(गीत का स्वरूप एवं परिणाम)

-आचार्य कनकनन्दी

आत्मा से सम्बन्धित को आध्यात्मिक कहते हैं। जीवन के परिवर्तन/विकास/परिमार्जन/सम्वर्द्धन/प्रगति/उत्क्रान्ति/उत्थान/सर्वोदय को क्रान्ति कहते हैं। जो गाया जावे उसे गीत कहते हैं। करोड़ों-अरबों वर्षों से ही भारत आध्यात्मिक देश रहा है। भारत में आध्यात्मिक क्रान्ति से ही समस्त क्रान्तियाँ (सामाजिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक, शैक्षणिक, शिल्प-कला, आयुर्वेदीय, वैज्ञानिक, गणितीय, औद्योगिक, आर्थिक आदि) अनुसृत-उद्भव-प्रेरित-ऊर्जस्वित रही है। इसीलिए तो भारत सार्वभौम, सम्पन्न, उन्नत, समृद्ध, विश्वगुरु रहा है। गर्भसंस्कार से पूर्व से भी आध्यात्मिक क्रान्ति के संस्कार गीत (पद्य, गाथा, श्लोक, छन्द, कारिका, मन्त्र, प्रार्थना आदि) के माध्यम से प्रारम्भ होकर शवदाह संस्कार तक अविछिन्न रूप में चलता था। इसलिए तो भारत में आध्यात्मिक क्रान्ति के शिखर पुरुष स्वरूप तीर्थंकर से लेकर गणधर, आचार्य, उपाध्याय, साधु-सन्त, ऋषि, बुद्धादि हुए तो राजनैतिक क्रान्ति के शिखर पुरुष स्वरूप चक्रवर्ती, नारायण, सम्राट से लेकर महाराजा, राजा, सेनापति, मंत्री आदि हुए। शैक्षणिक क्रान्ति के लिए विश्व धर्म सभा (विश्व के सर्वोच्च विद्यालय स्वरूप समवशरण), नालन्दा विश्वविद्यालय, तक्षशिला विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय से लेकर गुरुकुल-पाठशालायें सक्रिय थे। प्राचीन काल में प्रायः सर्वशिक्षा साहित्य रचना आदि पद्य में होती थी और छन्दबद्ध-संगीतमय-सुमधुर-लालित्यमय लयबद्ध पद्धति में होती थी। इसके प्रमाण के लिए साक्षी है- प्राचीन वैदिक, जैन, बौद्ध धर्म के धर्म, दर्शन, तर्क, न्याय, आयुर्वेद, नाटक, गणित, व्याकरण, संगीत, कला, नृत्य, शिल्प आदि के शास्त्र। गीत में लयबद्धता, मधुरता, लालित्य, प्रास आदि गुण होने से इसे एक से लेकर समूह में गा सकते हैं तथा वाद्ययंत्रों की ध्वनि से सहित-मिलाकर भी गा सकते हैं। अतः गीत (पद्य, कविता आदि) आकर्षक, कर्णप्रिय, सम्मोहक, प्रभावोत्पादक, नृत्यकारी, आनन्ददायक आदि गुणों से युक्त होने के कारण गद्य से भी पद्य अधिक मात्रा में, अधिक समय तक स्मरण रहता है। इसलिए तो प्राचीनकाल में अधिकांश ग्रंथ पद्य में लिखे गये तथा अभी तक भी देश-विदेशों में अनेक विषय पद्य में होते हैं। ऐतिहासिक

काल से अभी तक भी राजनैतिक, सामाजिक क्रान्ति में गीतों का भी योगदान रहा है।

आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए मंत्र, ऋचा, श्लोक, गाथा, दोहा, कविता आदि का सहयोग लिया जाता है। इतना ही नहीं महाभारत जैसे महायुद्ध में भी आध्यात्मिक चेतना जागृति से कर्त्तव्य बोध से अन्याय के विरुद्ध में क्रान्ति/युद्ध करने के लिए नारायण श्रीकृष्ण ने गाकर ही उद्बोधित किया जो श्रीमद् भागवतगीता रूप में प्रसिद्ध है। इस गीता से भी प्रेरित होकर आधुनिक युग में भी महात्मा गाँधी ने शोषणकारी, उपनिवेशवादी अंग्रेजी शासन के विरुद्ध सत्य-अहिंसा रूपी अलौकिक अमोघ अस्त्र-शस्त्र से युद्ध करके भारत से निष्कासित किया। इसके साथ-साथ 'वन्दे मातरम्' ''रङ्ग दे वसन्ती चोला'' आदि गीतों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। पहले बच्चों को शान्त, प्रसन्न, शिक्षा प्रदान, संस्कारदान से लेकर सुलाने के लिए भी लोरियाँ सुनाई जाती थी वह भी अध्यात्म गीत होते थे। प्रसिद्ध मदालसा स्त्रोत इसके लिए एक उत्तम उदाहरण है। विभिन्न साहित्यों में वर्णन पाया जाता है तथा लोक श्रुति से सुनने में आता है कि योग्य सङ्गीतज्ञ-गायक से गाये गये दीपक राग (गाना) से दीपक प्रज्ज्वलित हो जाते थे, मेघ मल्हार से असमय में भी बादलों से पानी की वर्षा होती थी। ऐसा ही और भी अनेक विभिन्न रागों से शिकारी (हिंस्र पशु) शिकार (शाकाहारी पशु) एक साथ शान्ति से संगीत सुनते थे। इसके लिए महान् सङ्गीतज्ञ बैजू बावरा का उदाहरण साक्षी है। ऐसा ही असमय में पुष्प-फलों का वनस्पति में आना, पशु-पक्षी, नर-नारी का आकर्षित होना, सम्मोहित होना, हर्षित-प्रसन्न होना, शान्त होना, क्रोधित होना, उद्वेलित होना, अशान्त होना, गाना (सङ्गीत, राग, मंत्र, शब्द, तरङ्ग) से सम्भव है। आधुनिक भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, मनोविज्ञान से भी उपर्युक्त विषय सत्य सिद्ध हुआ है और हो रहा है। इतना ही नहीं आधुनिक विज्ञान में सिद्ध हुआ है कि गर्भस्थ शिशु के ऊपर भी गीत-सङ्गीत का प्रभाव पड़ता है। यह भी विज्ञान में सिद्ध हुआ है कि उत्तम गीत-सङ्गीत का प्रभाव पड़ता है तो गलत गीत-सङ्गीत का गलत प्रभाव पड़ता है। इसलिए तो पाश्चात्य देशों में व्हाइट हाउस, विश्व धर्म सम्मेलन, धार्मिक कार्यक्रम से लेकर परिवार तक में भारतीय आध्यात्मिक/शास्त्रीय सङ्गीत-गाना का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। यह सब होते हुए भी दुःखद आश्चर्य है कि भारत में सिनेमा, टी.वी. प्रोग्राम, कवि सम्मेलन से लेकर सामाजिक कार्यक्रम, शादी-विवाह आदि में शब्द प्रदूषणकारी

- भाव प्रदूषणकारी, अश्लील, तुच्छ सङ्गीत-गाना का प्रयोग हो रहा है। इतना ही नहीं धार्मिक कार्यक्रमों में भी ऐसा सङ्गीत-गाना, नृत्य का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। भारत केवल आर्थिक भ्रष्टाचार में ही विश्व कीर्तिमान स्थापना करने के मार्ग में ही आगे नहीं बढ़ रहा है परन्तु सङ्गीत, नृत्य, गाना, खान-पान, वेश-भूषा, शिक्षा, नौकरी, कानून, प्रशासन, सरकार, व्यापार, चिकित्सा, स्वच्छता से लेकर धर्म तक में विभिन्न भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। यह सब होते हुए भी भारत के लोग स्वयं को शिक्षित, सभ्य, आधुनिक, बोल्ड जताते-बताते हुए भी लज्जा का अनुभव नहीं करते हैं।

इन सब कारणों से पीड़ित-प्रेरित होकर मैं हमारे संघस्थ साधु-साध्वियों, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों आदि को श्रेष्ठ गीतों की रचना करने के लिए प्रेरित करता हूँ। जब मुझे 1992 को आभास हुआ कि हमारे संघस्थ मुनि गुप्तिनन्दी, आर्यिका राजश्री, आर्यिका क्षमाश्री आदि में कवित्त्व शक्ति गुप्त रूप में, सुप्त रूप में विद्यमान है तब मैंने उन्हें गीतादि लिखने के लिए उत्साहित, प्रेरित, मार्गदर्शन किया, विषय वस्तु को शब्द संकलन रूप में - गद्य रूप में या बिना राग के पद्य रूप में देता रहा। जिससे वे प्रार्थना, वन्दना, आरती, पूजा, विधान, कविता आदि की रचना करते रहे और मैं उसे संशोधन करके मेरी पुस्तकों में प्रकाशित करता रहा। 1997-98 में जब मेरे से पृथक् विहार करने लगे तब भी उनकी रचनाओं को शिविर, कक्षा, संगोष्ठी में प्रयोग में लाता हूँ, मेरे साहित्यों में बार-बार प्रकाशित करता हूँ। मुझसे पृथक् विहार करने के बाद भी वे अनेक पूजा-विधान की रचना कर रहे हैं और प्रकाशित कर रहे हैं। उन सब साहित्यों में भी मेरी प्रेरणा के उल्लेख के साथ-साथ आशीर्वाद एवं फोटो भी प्रकाशित कर रहे हैं। 2010 को जब आर्यिका क्षमाश्री, ब्र.फाल्गुनी, ब्र.विधि मेरे पास आये तब फिर मैं पूर्वोक्त प्रोत्साहन आदि दे रहा हूँ/कर रहा हूँ। जिसके फलस्वरूप प्रस्तुत कृति प्रस्तुत है। प्रस्तुत कृति से अखिल जीव-जगत् आध्यात्मिक क्रान्ति से अनन्त-अक्षय शान्ति प्राप्त करें ऐसी पवित्र भावना के साथ-साथ रचनाकार, प्रकाशक, सदुपयोग करने वालों के लिए शुभाशीर्वाद-शुभकामनाओं से सहित-

आचार्य कनकनन्दी
अतिशय क्षेत्र - सीपुर
जिला - उदयपुर (राज.)
दि. 11-10-2010 रात्रि 11.48

परिच्छेद-I

प्रार्थना एवं मंगलाचरण

आध्यात्मिक प्रार्थना

तर्ज (तेरी पूजन को .....)

शब्द संकलन व भाव (परम पूज्य आचार्य रत्न कनकनंदी जी गुरुदेव)

प्रार्थना ऐसी कर इन्सान बन जाये तूं भी भगवान्।
प्रभु को तूं जान न पाया न उनके गुण को ध्याया।
जब तुझ पर संकट आया प्रभु द्वार पे दौड़ा आया।
सुखों के क्षणों में फिर तुझको याद नहीं आते हैं भगवान्। प्रार्थना ऐसी.....
कभी साकार को ध्याया कभी निराकार मन भाया।
जिसने जैसा भी बताया स्वारथ से शीश झुकाया।।
नहीं रहा सत्य का भान न की प्रभु की भी पहचान। प्रार्थना ऐसी.....
प्रार्थना सारी दुनियाँ करती विभिन्न मतों धर्मों से।
कोई प्रभुवर को बुलाये कोई मांगे उनसे दुआएँ।।
सबकी अपनी-अपनी पहचान फिर भी देखो है अनजान।। प्रार्थना ऐसी...
कोई कहता है ईश्वर कोई अल्ला-अल्ला कहता।
कोई ईसा, कोई साईं कोई राम कथा भी करता।।
उनके आदर्श ग्रहण न करके बना है क्यों हैवान? प्रार्थना ऐसी .....
कनकनंदी की मानो तो निज को तुम पहचानो।
निज भावों को सुधारो फिर प्रभुवर की भी जानो।।
सम्यक् रीति से गुणगान प्रार्थना देती है वरदान। प्रार्थना ऐसी

प्रस्तुति - श्रमणी क्षमाश्री

आदिनाथ स्तुति

- उपाध्याय श्री समतासागर जी

जय श्री आदि प्रभु गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।
देवों के तुम देव कहाए, प्रथम तीर्थंकर तुम कहलाए।
नगर अयोध्या जो कहलाए, राजा नाभिराय बतलाए।
सर्वारथ सिद्धि से आकर, माँ के उर में आए स्वामी।
मरु देवी माता के उर से, चैत वदी नवमी को जनमे।
चिह्न तुम्हारा वृषभ सुहाता, स्वर्ण सा रूप तुम्हारा स्वामी।
तृतीय काल में जन्म लिए थे, उसी काल में मुक्त हुए थे।
कल्पवृक्ष जब लगे विघटने, जनता आयी दुःखड़ा कहने।
सबका दुःखड़ा दूर किया है, सूर्य चन्द्र को सबने चीन्हा है।
असि मसि आदि कला सिखाई, जनता मन में अति हर्षाई।
पुत्र आपके भरत जी स्वामी, चक्रवर्ती जग में कहलाए।
दूजे सुत बाहुबली स्वामी, कामदेव जग में कहलाए।
अनन्तवीर्य सुत तुम्हारा स्वामी, प्रथम मोक्ष पधारे स्वामी।
सुता आपकी दो कहलायी, ब्राह्मी और सुन्दरी प्यारी।
उनको भी विद्या सिखलायी, अक्षर और गिनती बतलायी।
मेरी विनती सुनलो स्वामी, मुक्ति की राह बताओ स्वामी।
प्राचीन बिम्ब तुम्हारा भगवन्, चौरासी फीट उतङ्ग स्वामी।
बावनगजा सब क्षेत्रों से न्यारा, सब तीर्थों में तीर्थ है प्यारा।
आदि प्रभु की स्तुति गावे, 'समता सागर' शीश नमावे।

"सार्वभौम क्रांति के अग्रदूत आदिनाथ भगवान्"

तर्ज - (हम भूल गये.....)

शब्द संकलन - परम पूज्य वैश्विक विचारक आचार्य रत्न कनकनंदी जी गुरुदेव"

जय आदिनाथ भगवान्, कनकनंदी गाये गुणगान।
नृप नाभि ललन मरूलाल, देना हमको भी सद्ज्ञान।।
कल्पवृक्षों का गमन देख जनता अति ही घबराई थी।
आकुल-व्याकुल हो मनुशरणा में दौड़ी-दौड़ी आई थी।।
करो रक्षा-2 हे भगवान् हमें नहीं है कुछ भी ज्ञान। नृप नाभि.....
असि, मसि कृषि आदि षट्कर्म प्रभुवर ने सिखलाये थे।
कर्म-भूमी में कर्मों से जीने के भी सूत्र बतलाये थे।।
जय प्रजापति-2 भगवान् तुम्ही हो पालक दया निधान।। नृप नाभि.....
नारी शिक्षा देकर प्रभु ने नारी का मान बढ़ाया था।
इस युग में प्रथम नारी शिक्षा का प्रारंभ प्रभु ने कराया था।।
बनकर शिक्षक-2 स्वयंभू प्रभु ने दिया सभी को ज्ञान।। नृप नाभि.....
विश्वव्यापी विष्णु बनकर जो प्रजा का पालन करते थे।
विश्वकर्मा, आदिब्रह्मा, आदिसृष्टा सब कहते थे।।
सबको बना दिया गुणवान देकर सब विषयों का ज्ञान।। नृप नाभि.....
रत्नत्रयरूपी त्रिशूल से प्रभु घाति कर्म नशाये थे।
अर्द्ध कर्मों को नाश किया अर्द्ध नारीश्वर कहलाये थे।।
परम औदारिक तन धार प्रभु ने दिया धरम का ज्ञान।। नृप नाभि.....
चतुर्मुख दर्शन सबको देकर ब्रह्मा भी कहलाये थे।
सब प्राणी के गुरु होने से भूतनाथ कहलाये थे।।

दिया विश्व को ब्रह्म का ज्ञान विराजे समोशरण भगवान्। नृप नाभि.....
तप करते-करते जटा बढ़ी अतः केशी आप कहलाये थे।
श्री वृषभ चिन्ह धारी प्रभु कैलाश पे ध्यान लगाये थे।।
कैलाश पति ने उसी गिरी से प्राप्त किया निर्वाण।। नृप नाभि.....

विश्व शांति प्रवक्ता महावीर भगवान्

तर्ज - (संसार है इक नदिया)

शब्द संकलन - वैश्विक विचारक प.पू.आ.रत्न कनकनन्दी जी गुरुदेव

महावीर प्रभु जग में, अद्भुत उजियारे हैं।
आओ इनको ध्यायें, ये प्रभु हमारे हैं।।
सर्वज्ञ प्रभु बनकर, हमें राह बताई है।
केवलज्ञानी रवि ने, भवि कलि खिलाई है।।
हे ज्ञान सूर्य भगवान्! हम तेरे सहारे हैं। आओ इनको.....
प्रभुवर की वाणी ने जीना सिखलाया है।
सत्य, साम्य, सुखामृत का, शुभ सूत्र बताया है।।
तप, त्याग व संयम से, दुःख मोचन हारे हैं।। आओ इनको.....
विश्व शांति प्रवक्ता ने, हर विषय बताये हैं।
अनेकांत, अपरिग्रह के प्रसून खिलाये हैं।।
"कनकनंदी" के अनुभव में, विश्व विभु ये हमारे हैं। आओ इनको.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री

आतम को पाना है

शब्द संकलन - वैश्विक विचारक प.पू.आ.रत्न कनकनन्दी जी गुरुदेव

अरे चेत चेत चेतन तुझे आतम को पाना है।
प्रीत इससे ही लगाकर तुम्हे मुक्ति को जाना है।।
पता वहाँ का ही लेना है जहाँ तेरा ठिकाना है।
गलत पता पाकर अनादि काल से भटका।
पिता, पुत्र, मात, सुता आदि रिश्तों में अटका।।
नहीं कोई यहाँ तेरा यही अनुभव में लाना है। पता वहीं का.....
अथक श्रम जो किया तूने पसीना भी बहाया है।
रात-दिन तूँ रहा भूखा और धन बहु कमाया है।।
बड़ी बिल्डिंग बनाई है न वह साथ जाना है। पता वहीं का.....
न तू छोटा है न है बड़ा प्यारे।
न काला है न गोरा है ये रंग जड़ के हैं न्यारे।
तेरी आतम का रंग निराला है।। पता वहीं का.....
कनकनंदी कहें तुझसे कुछ बात सुन चेतन।
छोड़ पर्याय बुद्धि को तू करले निज वेदन।
शांति इस भव में पायेगा यहीं आनंद पाना है। पता वहीं का.....

प्रस्तुति - क्षमाश्री माताजी

परिच्छेद-II

आध्यात्मिक क्रान्ति गीत

"आध्यात्म प्याला पीने वाला"

तर्ज - (दिल लूटने वाले.....)

शब्द संकलन -(परम पूज्य आचार्य रत्न कनकनंदी जी गुरुदेव)

आध्यात्म का प्याला पीने वाला बन जाता मतवाला है।
सारे जग में वह रहता है सारे जग से भी निराला है।।
कोई उसे बतलाये पागल कोई कहे दिवाना है।
कोई उससे न बात करे, न समझे, देवे नाना ताना है।।
सब छोड़ के-2 जग के बंधन को निज में रमने वाला है। आध्यात्म.....
न भौतिक सुख की चाह रखे न अक्ष विषय में वह उलझे।
न धन-माया, न मद भाया उसके विचार रहते सुलझे।।
संयोग-वियोग से-2 मन को हटा समता रस चखने वाला है।
सुख के झूले में न झूले न दुख से वो घबराता है।
आध्यात्म रसिक निज आतम में आतम का ध्यान लगाता है।
इस जग में विरला होता है आध्यात्म गरिमा वाला है। सारे जग में.....
मोक्ष महल में जाने का शुभ मारग मैंने पाया है।
अब "कनकनंदी" का आतम भी मुक्ति पाने अकुलाया है।
सत, साम्य, सुखामृत का मंत्र ही तो मोक्ष पहुँचाने वाला है। सारे जग में.....
शांति पाने की चाह है तो हृदय आध्यात्म से भरलो।
संसारिक चमक-दमक को छोड़ो आत्म चमक भी लखलो।।
यही अंतिम लक्ष्य ही सबको सुख चैन दिलाने वाला है। सारे जग .....

प्रस्तुति - आर्यिका क्षमाश्री

धर्म के अभाव में सुख नहीं

तर्ज-(आदिब्रम्हा आदीश्वर.....)

शब्द संकलन-वैश्विक विचारक आध्यात्म चिंतक आचार्य रत्न कनकनंदी जी गुरुदेव

धर्म सभी को सुखकर, हितकर, ये ही परम उपकारी है।
शाश्वत जग में, शांति प्रदायक, अनंत सुख दातारी है।
धर्म गुरु है, धर्म मित्र है, धर्म से ही सब पाया है।
धर्म बिना इस जग में बन्धु, न अपना न पराया है.....2
अनाथ का नाथ, बिना स्वार्थ का सारा संकट हारी है। शाश्वत...।।
मतों में उलझे, पंथों में भूले तर्क में खुद को भ्रमाया है।
सम्यक् धर्म के मर्म को भूले, जीवन नर्क बनाया है।.....2
सम्यक् धर्म कल्पतरू है ये ही महाफल धारी है। शाश्वत...।।
धर्म के मर्म को जाने बिना, हर धर्मी, प्रभु को मानता है।
कोई पशुओं की बलि चढ़ा, पापों को बोझ बढ़ाता है।।.....2
ऐसा पाखण्ड धर्म ही भव-भव में दुखकारी है। शाश्वत.....।।
लम्बा-लम्बा तिलक लगा, कोई ब्याज पे ब्याज बढ़ाता है।
भीड़ में दानी दान दिखाकर, अपने करम छिपाता है।
धर्म कहे ऐसे नर भी, नरकों के अधिकारी हैं। शाश्वत.....।।
"कनकनंदी" की बात मान कर, सच्चे धरम को पहचानो।
बाह्य क्रिया काण्डों को तजकर, सत्य धरम को स्वीकारो।।
देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति कर, बनना मोक्ष अधिकारी है। शाश्वत.....।।

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री

"भाव से संभव है परिणाम"

तर्ज-(हे दीन बन्धु.....)

शब्द संकलन-परमपूज्य वै.आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

भावना भव नाशनी भव वर्द्धिनी भी है।
भव्यों के भवितव्य की संवर्द्धिनी भी है।
"कनकनंदी" निजानुभव से स्वभाव सुधारें।
शुभ भाव से ही शुद्धता का लक्ष्य संवारे।।

रे जीव तूँ संसार में क्यों आज तक रहा।
भाव-भावना बिना तूँ शून्य सा रहा।।
कभी सुखी कभी दुखी कभी रो पुकारे।
चारों गति में दुखी हुआ फिर भी बिसारे।। कनकनंदी.....

अशुद्ध भाव पाप का बंध कराते।
इहलोक व परलोक में दुःख द्वन्द बढ़ाते।।
धर्मात्मा सही वही जो निज को बचाले।
समता रखे सब प्राणियों से मित्रता धारे।। कनकनंदी.....

बोये बबूल बीज से न आम मिलेगा।
जैसा बनाओ भाव वैसा काम बनेगा।।
हृदय रूपी बाग को हम स्वच्छ सम्हारें।
इन्द्रिय, दमन, त्याग के शुभ बीज लगालें।। कनकनंदी.....

शुभ भावना का जल क्यारियों में बहाये।
सेवा, सहानुभूति की खाद फैलायें।।
संयम पवन की साधना से उनको निखारें।
आनंद का गुलशन सजा निज आत्मा पालें।।

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री

"ज्ञान-विज्ञान का अविष्कारक:भारत"

शब्द संकलन-वैश्विक विचारक अध्यात्म रसिक आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

सम्पूर्ण ज्ञान के ज्ञाता तीर्थंकर कहलाते हैं।
केवलज्ञान में उनके हर विषय झलक जाते हैं।।-2

आंशिक सत्य को ही न पूर्ण समझ लेना
हो कितने बड़े विज्ञानी उनको बता देना

सम्पूर्ण सत्य पाने की नयी अलख जगाते हैं।।-2 सम्पूर्ण.....

अतीत व ज्ञान विज्ञान हमने सब पाया है
नया नहीं कुछ भी यहाँ पूर्वजों ने सिखाया है।

जैसे बीज की संतति से हम वृक्ष पाते हैं।।-2 सम्पूर्ण.....

प्लावन सूत्र प्रतिपादन आर्कमिडिस कहते हैं।
यही सूत्र हमें पूर्व से अभय कुमार के मिलते हैं।।

हाथी का वजन करने यह सूत्र बताते हैं-2।। सम्पूर्ण.....

श्री आदिनाथ भगवान कला-विद्या के ज्ञाता थे
ब्राह्मी सुन्दरी के प्रथम नारी शिक्षा दाता थे

इस भारत के गौरव को अब क्यों भुलाते हैं-2।। सम्पूर्ण.....

प्रभु एक साथ सातसौ अठारह भाषा कहते थे
सब ज्ञान-विज्ञान भी उनसे ही थे प्रगटे

ब्राह्मीलिपि व गणित प्रभुवर से पाते हैं-2।। सम्पूर्ण.....

नवीं सदी में नागार्जुन रसायन विज्ञानी थे
महावीर आचार्य ब्रह्मगुप्त गणित के ज्ञाता थे

न्यूटन से पूर्व भास्कर गुरुत्वबल बताते हैं-2।। सम्पूर्ण.....

हवाई जहाज से पहले भी पुष्पक विमान था
जिसमें सोना, भोजन व्यवस्था सभी कुछ था

इच्छा से चलाकर जिसको नभ-थल में जाते थे-2।। सम्पूर्ण.....

कनकनंदी इन रहस्यों को व्यापक समझाते हैं
विस्तार से समझाकर सिद्धान्त बताते हैं

वैश्विक विचारों से भारत को जगाते हैं-2।। सम्पूर्ण.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री

"सफलता के सूत्र"

तर्ज-(तीरथ करने चली सती.....)

शब्द संकलन-परमपूज्य आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

जीवन सफल बनाने निकले बनकर जो भी त्यागी।
कनकनंदी जी उन्हें बतायें सफल सूत्र आयामी।।

सबसे पहले हम समझे अपने तन की परिभाषा।
किसके आगे हम हैं हारे कौन दे रहा है परिभाषा।
तन को इन्द्रियों ने हराया इन्द्री हराती मन को।
मन की बातें जो भी माने गले लगाये पतन को।।
तज के बाते मन की सारी छोड़ो अब मनमानी। कनकनंदी जी ....

अब तक आतम की शक्ति को हमने न पहचाना।
अनन्त शक्ति का भरा हुआ है अपने पास खजाना।।
जब आतम आगे बढ़ता है तन, मन इन्द्री हारें।
इसी क्रम से बने और ज्ञान की जोत जलालें।।
मन इन्द्रिय से भी बढ़कर है आतम शक्ति भारी। कनकनंदी जी ....

बुद्धि से आगे बढ़कर अनुकूल विचार बनाओ।
समता, शांति मय ज्ञानी बन अपने कदम बढ़ाओ।।
करके विकास तन-धन का हमने अपना बोझ बढ़ाया।
यदि मानसिक व आध्यात्मिक को नहीं अपनाया।।
व्यापक दृष्टिकोण बना के चलते केवलज्ञानी। कनकनंदी जी ....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री

विकास का अर्थ

तर्ज-(जयराम जयराम जयराम.....)

विकास का अर्थ है यहाँ पर जो अपना क्षेत्र बढ़ाते हैं।
बिना दूसरों को सताये, मंजिल अपनी पाते हैं।
जय कनकनंदी, जय कनकनंदी गुण गाते हैं। .....

आध्यात्मिक वैज्ञानिक गुरु की महिमा है अतिभारी।
अनुभव के सुमनों से जो सजा रहे फुलवारी।।
व्यर्थ की भागदौड़ से बचकर जीवन सफल बनाते हैं।
आत्म कल्याण हेतु ज्यादा समय बचाते हैं।
जय कनकनंदी, जय कनकनंदी गुण गाते हैं। .....

एकांतवास के विश्वासी निज आतम में जो रमते हैं।
नहीं किसी से कोई अपेक्षा न ही याचना करते हैं।।
कनकनंदी जी निज कनक रश्मि समज्ञान किरण विकसाते हैं।
देश-विदेश के भक्तों को निज ज्ञान निधि लुटाते हैं।
जय कनकनंदी, जय कनकनंदी गुण गाते हैं। .....

है आश्चर्य बड़ा भारी गुरुवर जंगल गाँव में रहते हैं।
शहरों के प्रदूषण से बचकर विश्व प्रभावना करते हैं।।
बिन बोले शिष्य जिनकी व्यवस्था से भाग्य जगाते हैं।
सत्य तथ्यों को गुरुवर वैज्ञानिक रीति से समझाते हैं।
जय कनकनंदी, जय कनकनंदी गुण गाते हैं। .....

विश्वविद्यालय साहित्य पढ़े कोई पी.एच.डी. शोध करे।
वैज्ञानिक, प्रोफेसर, संत गुरुवर से आकर यहाँ पढ़े।।
फिर भी गुरुवर निज आतम में रमते हैं।
चिन्तन की कर्णिकाओं में प्रभु का ध्यान लगाते हैं।।
जय कनकनंदी, जय कनकनंदी गुण गाते हैं। .....

रचनाकार - श्रमणी क्षमाश्री

''उदार निस्वार्थ अहिंसा''

तर्ज-(सुनिये दयालु भगवान्.....)

शब्द संकलन-वैश्विक विचारक आध्यामचिंतक आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

सुनलो ये प्यारे बन्धु, कुछ बात अब हमारी।
कनकनंदी कह रहे है, अहिंसा भी माँ हमारी।।

इसका पालन जो करते, वो कभी भी न मरते हैं।
रक्षा जीवों की करके, वे स्वयं अमरत्व वरते हैं।
अहिंसा से ही थमी है, सारी धरा हमारी। कनकनंदी...

न करना स्वार्थ से पालन, न ऐसा ढोंग भी रचना।
खुद ही खुद की नजर में, गिर के कैसे पहुँचो प्रभु अंगना।।
करके विश्वास अब खुद पे, बनो पुरुषार्थ के धारी।। कनकनंदी...

सभी से मैत्री हो जग में, भाव व्यापक बनाना है।
घिरे कष्टों में जो प्राणी, उन्हें ऊपर उठाना है।।
नहीं वैर भाव रखना, अहिंसा के ओ पुजारी। कनकनंदी.....

धनी हो या हो निर्धन भी, कभी अपमान न करना।
अन्याय यदि कोई करे, उसका सम्मान न करना।।
निर्भय-निडर हो बनते, अहिंसा व्रत के धारी। कनकनंदी.....

पतित हो या पावन हो, किसी से भेद न करना।
सभी में प्राण है हमसा, यही शुभ भाव नित रखना।।
नहीं किसी को क्षुद्र समझो, सबमें है जान प्यारी। कनकनंदी.....

पशु, पक्षी या एकेन्द्रिय पंचेन्द्रिय तन धारी।
सधर्मी हो या अधर्मी समभाव अधिकारी।।
सबको ही आत्मा है जिनदेव जैसी प्यारी।। कनकनंदी...

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री

''यह संसार असार''

शब्द संकलन- परम पूज्य वैश्विक विचारक आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

यह संसार असार भैया यह संसार असार।
कनकनंदी की बात मान लो त्यागो क्षुद्र विचार।।

धन को ही सब मान के बैठे जीवन में भगवान् रे।
भौतिक साधन जोड़-जोड़ कर समझे वैभववान् रे।।
धन की पूजा करके तिजोरी भरता है संसार रे। कनकनंदी...

कोई रूप का कोई यौवन का करते हैं अभिमान।
क्षण-क्षण नश्वर है यह तन यह नहीं किसी को भान।।
धन यौवन का मान त्याग दो ये सब हैं दिन-चार। कनकनंदी...

कोई पढ़ाई का दिवाना पढ़के नौकरी पाये रे।
नौकर बनकर भी बाबू अपनी अकड़ दिखाये रे।।
सच्चे ज्ञान का सार यही है जो करता उपकार। कनकनंदी...

धर्म को रूढ़ी में बाँधा औ पंथवाद को बढ़ा लिया।
खुद को सबसे धर्मी समझा औरों को अपमान किया।।
धरम अधर्म का भेद समझ कर समझो धरम का सार रे। कनकनंदी...

प्रस्तुति - क्षमाश्री

''जग में गणित प्रमाण''

तर्ज-(देख तेरे संसार.....)

शब्द संकलन - परम पूज्य वैश्विक आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

जगहितकारी सब सुखकारी दिया वीर ने ज्ञान
वही है जग में गणित प्रमाण। (2)
शुद्ध, बुद्ध, अविरूद्ध है अविचल वीर प्रभु का ज्ञान

वही है जग में गणित प्रमाण। (2)
सत् संख्या आदि को बताये, सम्यकदर्शन की विधि बताये।
सत्य को सर्वज्ञ प्रभु जाने, अस्तित्व स्वरूपी जिसे बखाने।।
ज्ञेयों को जो ज्ञान से जानें, वो सर्वज्ञ भगवान्। वही....
चारों अनुयोगों में समझाये करुणानुयोग हैं मुख्य कहाये।
ब्रह्माण्ड का सारा गणित बताये, विश्वज्ञान जिससे हो जाये।।
जीव, धर्म, अधर्म, काल का मिल जाये सद्ज्ञान। वही....
जीओ और जीने दो वाला सार्वभौम अधिकार निराला।
व्यापक सब जीवों को प्यारा सूक्ष्म जीवों का है रखवाला।।
प्रत्येक जीव है शुद्ध बुद्ध वह है ईश्वर भगवान्। वही....
''कनकनंदी'' इसको अपनायें, इसके सारे सूत्र बतायें।
विश्व को इसका रहस्य बताये, सबको सुख का मार्ग बतायें।।
नर से नारायण बनने का इसमें है संविधान। वही....

प्रस्तुति -आ. क्षमाश्री

सुयोग्य शिक्षा से क्रांति

शब्द संकलन - आचार्य कनकनंदी

जीवन में कुछ करना है तो आयोग्य शिक्षा मत सीखो।
अच्छी शिक्षा पाना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो।।
सुन्दरता, सुयोग्य संस्कारों हित जीवन मिलता है।
मुश्किल से ये नरतन पाया ये न सबको मिलता है।।
बढ़ो विचारों की सरगम ले टूटे तारों में न उलझो। अच्छी .....
साहस, निर्भय, स्वाभिमान बन तुमको सब कुछ पाना है।
सर्वोदय, सर्वांग विकास की विद्या को अपनाना है।।
केवल पढ़ने पढ़ाने को ही सच्ची शिक्षा मत समझो। अच्छी .....

वर्तमान की अच्छी शिक्षा का भी तुम अभ्यास करो।
प्राचीन संस्कृति और शिक्षा का भी पूरा ध्यान करो।।
आगे-आगे बढ़ना है तो शिक्षा समन्वय की सोचो। अच्छी .....
देश-विदेश की उच्च शिक्षा का ही कोई आधार नहीं।
सत्य, साम्य, सुख, शान्ति के बिन आतम का कोई ज्ञान नहीं।।
भीड़ बढ़ाना, भ्रष्टाचार फैलाने की शिक्षा मत सीखो। अच्छी .....
गर्भ से संस्कारित करना सुशिक्षा कहलाती है।
सम्यक् शिक्षा सर्वोदय विकास का ज्ञान दिलाती है।।
सर्वोदय शिक्षा हेतु अब ले मसाल सब साथ चलो। अच्छी .....
कनकनंदी का भाव यही है शिक्षा क्रांति लाना है।
शंखनाद शिक्षा का करके विश्व में अलग जगाना है।।
आओ मेरे पास भाइयों पाँव पसारे मत बैठो। अच्छी .....

प्रस्तुति -आ. क्षमाश्री

''धर्म सरल है धर्म सहज है''

तर्ज-(तुम्हें छोड़कर किसको देखूँ.....)

शब्द संकलन - प.पू. वैश्विक विचारक आध्यात्मिक चिंतक, वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

धर्म सरल है, धर्म सहज है, धर्म न मिलता दुनिया में।
''कनकनंदी'' जी रहस्य बताये मत भटको तुम दुनिया में।।.....
जो सबको धारण करता है धर्म वही कहलाता है।
उत्तम क्षमादि सुख स्वरूप जो इसको अपनाता है।।
पवित्र भावों से जिसने भी इसको हृदय में धार लिया।
धर्म छोड़कर कहीं नहीं सुख मिलता देखो दुनिया में। कनकनंदी.....
धर्म सरल.....

जीव अपने निज स्वभाव का जितने अंशों में त्याग करे।
उतने अंशों में अधर्मी बन दुःख से अनुराग करे।।
धर्म बिना खुद हो अशांत औरों को आक्रांत करे।
शांति पाने धर्म को धारो ये ही सच्चा दुनिया में।। कनकनंदी.....
धर्म सरल.....

कट्टरता व परम्परा से बाह्य धर्मात्मा मन बनना।
उदार हृदय सरल भावों से अपने अंतरंग में धरना।।
धर्म का बीज ऐसा बोओ जिससे मुक्ति पा जाओ।
इसके बिना हित नहीं हमारा न अटको तुम दुनिया में।। कनकनंदी.....
धर्म सरल.....

प्रस्तुति -आ. क्षमाश्री माताजी

उपलब्धि से सदुपयोग दुर्लभ

तर्ज-(ये नरकों में जाना.....)

शब्द संकलन - प.पू. वैश्विक विचारक आध्यात्मिक चिंतक, वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

ये नरतन का पाना जैनी बन जाना
श्रावक याद रखोगे कि भूल जाओगे.....
इस भव में जन्में कुछ लाभ भी मिला।
उन लाभों को पाकर अभिमान भी किया।।
उस अभिमान के फल से नरकों में जाना
व्यर्थ जीवन गँवाना। श्रावक .....
ज्ञानी बने तो अहंकार किया।
ज्ञान को बेचा या कुतर्क किया।।
इसके कुफल से ज्ञानी बन जाना
व गूंगा हो जाना। श्रावक .....

धर्मी बनाम अधर्मी बना
धर्म के नाम पे ढोंग करा
झगड़ा, कलह का कराना
प्रदूषण फैलाना।। श्रावक .....
सत्ता, शक्ति का सदुपयोग न किया।
धन और पद के मद में बहा।।
रावण, हिटलर सा मर जाना
कुख्याति को पाना।। श्रावक .....
"कनकनंदी" निज अनुभव से कहे
पतन से बचाने की बाते कहे
इनके पास में आना
सम्यक्ज्ञान का पाना। श्रावक .....

शिक्षा व ज्ञान में अन्तर

तर्ज-(समता को धारने वाले.....)

शब्द संकलन - वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव की दृष्टि से

समता को चाहने वाले ममता को हटाने वाले।
सूरी कनकनंदी गुरुवर रखते हैं भाव निराले
गुरुवर का अभिनव चिंतन है चरणों में वंदन है।। गुरुवर.....
निष्पृहवृत्ति धारी गुरुवर कई सूत्र हमें बतलाते।
शिक्षा अभिशाप न बन जाये ये ही सबको समझाते।।
शिक्षा औ ज्ञान में अन्तर समझ यदि आ जाये।
फिर देश में सुख शांति के चमन सदा खिल जाये।।
गुरुवर का जगत् आव्हानन है चरणों में वंदन है। समता .....
शिक्षा धन-वैभव देती पर सुख शांति हर लेती।
शिक्षा नौकर है बनाती अपना स्वामित्व भुलाती।।

ज्ञान सहित जो शिक्षण पहले भारत में होती।
ज्ञानमयी वह शिक्षा संस्कारों के अंकुर बोती।
आज की शिक्षा से मचा जग क्रंदन है चरणों में वंदन है। समता .....
आज की शिक्षा से हमने भौतिक साधन है पायें
उन साधन में उलझें अपना कर्त्तव्य भुलायें।।
ज्ञानी न ऐसा करते अपना कर्त्तव्य समझते
हो विश्व कल्याण हमेशा यह भाव सदा ही रखते।
ज्ञानी का होता अभिनंदन है चरणों में वंदन है। समता .....

रचनाकार - आ. क्षमाश्री माताजी

आदर्श जीवन (सम्यक् दिनचर्या)

तर्ज-(राम नाम गुण.....)

शब्द-भाव - वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

करलो आत्मविकास कि जीवन सुधरेगा,
अपना लो सद्व्यवहार कि जीवन सुधरेगा-2
प्रभु नाम लेकर के सोना, प्रभु नाम लेकर ही उठना,
करना प्रभु का ध्यान कि.....
कहाँ से आया कहाँ है जाना, क्या जीवन का लक्ष्य बनाना,
करना आत्म विचार.....
जल्दी उठना, जल्दी सोना, स्वास्थ, धन, तन व बुद्धि पाना,
समय को लो पहचान.....
जागृत होकर स्वर देखो, उसी करवट से उठो-बैठो,
सफल होय सब काम.....
उठ कर करलो निज का दर्शन, जिसमें देखो अपने प्रभुवर,
ये शुभ शकुन महान.....

प्रतिक्रमण-सामयिक करना, जिससे निर्मल आतम करना,
सफल होय दिन-रात.....
अनादिकाल की मैली चदारिया, सत्य साम्य से कर ले उजरिया,
होगा तब कल्याण.....
बड़ों का आदर और प्रणाम, छोटों को भी देना प्यार,
होग सुखी परिवार.....
जय जिनेन्द्र का मंगलाचार, सबसे करो प्रेम व्यवहार,
होवे शिष्टाचार.....
प्रातः भ्रमण से रोग नशाओ, आसन, व्यायाम व ध्यान लगाओ,
करना प्राणायाम तो.....
मंदिर जाना, पूजन करना, पूर्व दिशा मुख स्नान है करना,
मुख शुद्धिकर पहुँचो जिनवर द्वार.....
खुद भी सात्विक भोजन करना, निशि भोजन का त्याग भी करना,
बन जाये शुद्ध विचार.....
''गुरु कनकनंदी'' यह पाठ पढ़ाते, सबका जीवन आदर्श बनाते,
अपनाओं सम्यक् व्यवहार.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

परिच्छेद-III

क्रान्तिकारी गीत

भारत के पञ्चाश्चर्य!

तर्ज-(ऐ मालिक तेरे.....)

शब्द-भाव - वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

कनकनंदी कहें शुभ वचन, पञ्च आयाम का कर लो श्रवण।
जो समझ जायेगा, इन्हें अपनायेगा नश जायेंगे सारे भरम।।
है ऋषि, मुनि, वीरों की धरा, जिसमें ज्ञान विज्ञान बढ़ा
फैला संस्कृति, भाषा, कला पर्व परम्परा में आगे बढ़ा
विश्व को प्रकाश दिया खुद अंधेरे में भूला करम।। कनकनंदी.....
भारत में अध्यातम पला, संस्कृति सभ्यता से खिला
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सिद्धि जहाँ हर करम में धरम जहाँ
हर क्षेत्र में कर्त्तव्य छोड़, अब भुलाया है अपना धरम। कनकनंदी.....
भारतीय भाषा का भी ज्ञान, संगीत नृत्यादि भी है महा
भरत नाट्यम ओड़ीसी नृत्य आदि मनहर चित्र मूर्ति और कला
अब चित्रों के कार्टून हरदम, पॉप साँग से घुटता है दम। कनकनंदी.....
स्वास्थ्यवर्धक ऋतु अनुसार था सात्विक सुस्वादु आहार
दूध, छाछ, दही इसकी नदियाँ बही अब बहती है मदिरा की धार
साक्षरी राक्षस बनकर बेच दी अब सारी शरम।। कनकनंदी.....
परस्परोग्रह का सूत्र जहाँ स्वस्थ मानव तन भी वहाँ
पेट मोटा हुआ हृदय छोटा हुआ स्वारथ में अंधा हुआ
गुरुवर कहते नई शक्ति जगा चले-चले सत्य शरण।। कनकनंदी.....
आर्य महापुरुष व श्रमण भारतीय संस्कृति का चमन
भारतीय कला, भाषा, ज्ञान का भारतीय भोजन व सामाजिक गठन
ये पंच आश्चर्य महा भारत के हैं यही अमन।। कनकनंदी.....

प्रस्तुति -आ. क्षमाश्री माताजी

भारत की कमियाँ

तर्ज-(गुरुदेव आप ऐसी.....)

सूरी कनकनन्दी सबको जगा रहे हैं।
जता के भारत की कमियाँ आगाह कर रहे हैं।। सूरी.....

सत्यमेव जयते आदर्श मय ये नारा,
भूले हैं आज इसको है हीनाचार हमारा
जो कर्त्तव्य से विमुख हैं उन्हें सुज्ञान दे रहे हैं।। सूरी.....

वसुधैव कटुम्बकम् यह कहता था देश प्यारा,
विश्व गुरु कहलाने वाला भ्रष्टों से आज हारा
कर्त्तव्य जागरण का संस्कार दे रहे हैं।। सूरी.....

कृषि-ऋषि की धरा में ऋषियों की बात न माने,
कृषि प्रधान वसुधा में विषाक्त खाद भी डाले
आउट ऑफ डेट बन बीमार हो रहे हैं। सूरी.....

मातृ-पितृ देव ये नित सूत्र पढ़ रहे हैं।
किन्तु माता-पिता का अपमान कर रहे हैं
अभिशाप बड़ों का पाकर बर्बाद हो रहे हैं।। सूरी.....

शील सर्वत्र भूषण में आज है प्रदूषण,
भावों की कलुषता से करते हैं आज शोषण
अध्यात्म के देश में अपराध हो रहे हैं। सूरी.....

रचनाकार - आ. क्षमाश्री माताजी

भो भारतीय आधुनिक भवो

तर्ज-(ये तो सच है.....)

शब्द-भाव - वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का आह्वान

महान भारत संस्कृतिवान है, संत ऋषियों को स्थान है।
आध्यात्मिकता, वैज्ञानिकता, सदाचार, स्वाभिमान है। महान्.....
कनकनंदी कहे अब फिर से उठो,
जागो और जगाने का पुरुषार्थ करो। हो SSS
ध्यान अध्ययन से गुरु बताते कला,
छोड़ो फैशन व्यसन चिन्तन, मनन करो
जैसा सोचोगे वैसा बनोगे, जैसा खाओगे वैसा भावोगे
भारत का भोजन, पोशाक रखता अपनी अलग शान है।। महान्.....
विदेशों की यूज एंड थ्रो कल्चर अपनाया,
अंधानुकरण से खुद को भटकाया। हो SSS
नम्रता, सेवा, विनय, शालीनता
इनको भूलकर, चाहें अश्लीलता
आधुनिक बनने की चाह में सेवा अनुशासन विसरा दिया
शारीरिक, भौतिक सुख को ही आधुनिक कहना अज्ञान हो।। महान्.....
वैज्ञानिक सोच, अनेकांत कार्य कारण सिद्धांत को अपनाओ,होSSS
विश्व मैत्री, शान्ति समन्वय सहयोग से
प्रेममय जीवन अपना बनाओ।
भावों में सरलता, सहजता, परोपकार भाव है लाना
जैसी दृष्टि बनाओगे तुम वैसी सृष्टि का निर्माण है। महान्.....
विश्व में ज्ञान ज्योति फैलाने वाला
भारत गुरु था जग में न्यारा होSSS
गुरुकुल, नालन्दा, तक्षशिला आदि से
देश-विदेश में ज्ञान फैलाने वाला
अब भेद-भाव, ऊँच-नीच, ईर्ष्या-द्वेष से पीछे हुआ

लाओ कर्त्तव्य निष्ठा अगर तो फिर से भारत महान है। महान्.....
आधुनिकता समझ आधुनिक तुम बनो
संकीर्ण विचारों की वृत्ति तजो होSSS
हर क्षेत्र में भारत का गौरव हो, फिर से तुम प्रयास करो
धर्म शिक्षा को अपनी सुधारो आचरण वेशभूषा सम्भालो
लाओ कर्त्तव्य निष्ठा अगर तो फिर से भारत महान् है।। महान्.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

अप टू डेट बनने के फार्मूले

तर्ज-(जब कोई बात.....)

शब्द-भाव - वैश्विक विचारक आध्यात्म रसिक वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव का आह्वान

गुरु का आशीष साथ में हो,
श्रद्धा की मूरत मन में हो
हो वचनों में नाम गुरु का।। हो जीवन सफल।।
जय गुरुवर। कनकनंदी.....
सदाचार से सज्जित पाप से लज्जित रहे जीवन
भारतीय संस्कृति में सुसंस्कृत हो ये तन-मन
चरणों में शीश हमारा हो सदा आशीष तुम्हारा हो।।
हो वचनों में नाम गुरु का।। हो जीवन सफल।।
जय गुरुवर। कनकनंदी.....
अप टू डेट बनने की न नकलें अपनाये,
कहीं धोखे में आउट ऑफ डेट न हो जायें
न लिपिस्टिक लगायेंगे फैशन को बढ़ायेंगें।।
हो वचनों में नाम गुरु का। हो जीवन सफल।।
जय गुरुवर। कनकनंदी.....
सिम्पल लिविंग हाई थिंकिंग आज बनाना है,

पिछड़े भारत को फिर से आगे लाना है
समय बहुत बिगाड़ा है धन साधन नशाया है।
हो वचनों में नाम गुरु का।। हो जीवन सफल।।
जय गुरुवर। कनकनंदी.....
महावीर, बुद्ध, ईसा सी महानता भी लाना है
रेवती, टेरेसा जैसा सेवा भाव बनाना है।
गाँधी, विनोबा, जैन संतों जैसा जीवन हमारा हो
हो वचनों में नाम गुरु का।। हो जीवन सफल।।
जय गुरुवर। कनकनंदी.....
प्रगतिशील वैज्ञानिक मय सोच बनाना है,
आईन्सटीन, जगदीश, बोस, लिंकन बनना है
विश्व में शांति लाने का शुभ भाव हमारा हो
हो वचनों में नाम गुरु का।। हो जीवन सफल।।
जय गुरुवर। कनकनंदी.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

आचार्य श्री कनकनंदी जी की चिंतन-चिंता-विवशता

वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के भाव

तर्ज-(हम भूल गये.....)

कनकनंदी कहते आज भूला क्यों है सारा समाज
भारत के पतन से गुरुवर का चिंतित मन है आज

चिंता व विवशता का वर्णन गुरु लेखन प्रवचन से करते,
सब जीवों को जो सुखकर है वह उदार बात सबसे कहते।
स्वारथ मय-2 संकीर्ण विचार। छोड़ो तो होवे उद्धार।। कनकनंदी.....
ईर्ष्या, द्वेष, तृष्णा, घमंड ख्याति पूजा में डूब गये,
इक-दूजे को ठग-ठगकर ही खुद दुखों से झूझ रहे
भावों की-2 हिंसा में किये हैं कई प्राणी संहार।। कनकनंदी.....
वसुधैव कुटुम्बकम का सबमें जब शुभ दर्शन होता था,
हर प्राणी में श्री जिनवर की आत्मा का चिंतन होता था
आपस में-2 डालें फूट करते स्वारथ की बस बात।। कनकनंदी.....
जहाँ हर प्राणी की रक्षा करना धर्म हमारा कहता है,
वहाँ माता-पिता, गुरु-शिष्य का टूट गया अब रिश्ता है
सेवा, पूजा-2 तो दूर बैठे न प्रेम से पास।। कनकनंदी.....
इन सबसे बचने हेतु ही वे एकांतवास अपनाते हैं,
रहते हैं मौन अधिक समय चिंतन में ध्यान लगाते हैं
जन-जन तक-2 पहुँचना है मुश्किल अब स्वास्थ्य न देता साथ।। कनकनंदी....
भारत को विश्व गुरु बनाने का प्रयास हरदम करते हैं,
अपने शिष्यों को शिक्षा दे विश्व में भेजा करते हैं
बन जाये-2 भारत महान् गुरु की यही भावना आज।। कनकनंदी.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

आधुनिक विज्ञान से परे, जिनागम विज्ञान

तर्ज-(सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा.....)

ऐ दुनियाँ वालों सुनलो, सत्य-तथ्य जिनागम सारा।
अद्य विज्ञान से परे है, सर्वज्ञों की ये धारा।। ऐ दुनियाँ वालों।। टेक।।
आओ उदारभावी, सनम्र सत्यग्राही।
अब आपको बताएँ, यह सूक्ष्म विज्ञान धारा।। ऐ दुनियाँ वालों।। (1)

सापेक्षवाद थ्योरी, आइन्सटीन ने बताई।
अनेकान्त स्याद्वाद, परिपूर्ण है हमारा...2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (2)
भौतिक पुद्गल परमाणु, सिद्धान्त सूक्ष्मजग में।
अद्यतन विज्ञान से आगे, भगवान् ने बताया...2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (3)
क्रम विकासवाद डार्विन, अब फेल हो चुका है।
मार्गणा, जीव-समास, शाश्वत है हमारा....2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (4)
जगदीश चन्द्र बसु ने, वनस्पति जीव सुझाया।
अत्यन्त सूक्ष्म व्यापक, जीव विज्ञान हमारा...2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (5)
फ्रायड मनोविज्ञानी, मानो विश्लेषण कराएँ।
संज्ञा, कषाय, लेश्या, मनोज्ञान अभ्रान्ति वाला...2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (6)
पॅरा सॉयक्लोजी देखो, आधुनिक इस जगत में।
चमत्कार पूर्ण है ये, गुणस्थान ऋद्धि वाला...2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (7)
खगोलीय शास्त्री देखो, अपूर्ण ज्ञान वाले।
गणितीय और व्यापक, लोकालोक ये हमारा....2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (8)
आधुनिक गणित विज्ञानी, सँख्यात में है झूलें।
अनन्त सीमा वाला, आलौकिक गणित हमारा....2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (9)
आधुनिक शिक्षा है देखो, संकीर्ण, भौतिकवादी।
सर्वोदयी, सर्वाङ्गीण, अध्यात्म शिक्षाधारी....2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (10)
धर्म पूर्ण है विज्ञान, आत्मिक विश्वशान्ति कर।
विज्ञान है सत्यांश, कहते कनक सूरीवर...2।। ऐ दुनियाँ वालों।। (11)

प्रस्तुति - मुनि सुविज्ञसागर

जैन धर्म की प्रभावना-प्रगति कैसे हो

तर्ज-(जनम-जनम के पुण्य लिवाये.....)

शब्द संकलन - वैश्विक विचारक, आध्यात्म रसिक, वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

धन्य-धन्य पुण्य हमारे,

कनकनन्दी गुरुराज
धन्य हुई है भारत भूमि (2)
धन्य हुआ संसार।। कनकनंदी .....
मंगल अवसर हमने पाया,
पाया धर्म अध्यात्म भी पाया
सत्विश्वास अगर हम जगायें,
धर्म की परिभाषा समझ आ जाये
सतज्ञान की किरणों को पाकर (2)
आलौकिक पाया प्रकाश।। कनकनंदी .....
स्वपर हितकारी धर्म सरल है,
वात्सल्यमयी हितकार
माता-पिता की सेवा करना,
करना पर उपकार
संतों की सेवा में समय जो बिताये (2)
धन्य जनम वो महान्।। कनकनंदी .....
संगठन प्रभावना करे जो करावे,
करे न आडम्बर भाव
वो ही सम्यक्दृष्टि धारी,
पावे मोक्ष का द्वार
सबसे निराला सुख-शांति वाला (2)
जैन धरम है महान्।। कनकनंदी .....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

नारी पूजनीया कैसे बने

तर्ज-(भक्ति साथे भाव.....)

शब्द संकलन - वैश्विक विचारक, आध्यात्म रसिक, वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव

नारी तू महान् जो बने,

आज युग की शान तू बने (2)
मातृ शक्ति को भुला फैशन में घूमती
अंजना, सति, सीता, चंदना को भूलती
आर्य संस्कृति की रक्षा तू करे (2) आज.....
तेरे उदर से ऋषि, संत, प्रभु जन्में
फिर भी तू उस महत्व को न समझे
स्वार्थ में गर्भपात न करे (2) आज.....
अपने तन को तूने इतना सजाया
अपने ही शिशु को न दूध पिलाया
मात नाम पे कलंक क्यों धरे (2) आज.....
कनकनंदी गुरुवर विस्तार से हैं लिखते
नारी शिक्षा के ग्रंथ में पढ़के
शिक्षा यदि धारण करे (2) आज.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

नारी नारी की अरि न बने

तर्ज-(आपकी भक्ति से.....)

शब्द संकलन - वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का आह्वान

भारतीय नारी भी पहले आर्यों की शान थी।
सभ्यता शालीनता व शील से पहचान थी।। भारतीय.....
पर आज नारी ही पतन में मुख्य कारण बन रही,
कुशीलाचार, अत्याचार की नायिका बनकर खड़ी,
अपना रही है अपसंस्कृति स्वच्छता अज्ञान की।। भारतीय.....
फैशन व अंग प्रदर्शन मुख्य इनका ध्येय है
अप टू डेट नौकरी ही इनको उपादेय है।
घर में न भोजन बनाना सेवा का न भान है।। भारतीय.....
मात ममता है नहीं करुणा न प्रेम विश्वास है

सासों ने बहु को जलाया बहु सताती सास को
गर्भ में नारी की हत्या नारी ही अब कर रही।। भारतीय.....
सूरी कनकनंदी गुरुवर आज दुःखी मन से कहें
जिस नारी ने ऋषि, मुनि तीर्थंकर आदि दिये
क्यों लगी हो शीघ्र ही तुम कलयुग के आव्हानन में।। भारतीय.....
नारी सीता, अंजना व चंदना, गार्गी बने
इनके जैसा शील संयम धर्म का पालन करे
बनो आदर्श नारी गुरु की लेखनी यह कह रही।। भारतीय.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

सूरी कनकनंदी की भावी भावनायें

तर्ज-(मेरो तो आधार.....)

ज्ञान ध्यान में सदा निरत करते यही शुभ भावना
कनकनंदी गुरुदेव की सुनिये भावी भावना - 2
नव वैज्ञानिक अनुसंधान या मानव विज्ञान
भारतीय संस्कृति परम्परा का करते हैं उत्थान। करते.....
जैन धर्म की शान - 2 करते.....
विश्वविद्यालयों से अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार।
विश्वमैत्री-विश्वशांति से होवे जग उपकार।। होवे.....
विश्व का हो कल्याण - 2 करते.....
विज्ञान को जोड़े धर्म से धर्म जुड़े विज्ञान।
समाज, स्वास्थ्य पर्यावरण सुरक्षा का अभियान।। सुरक्षा.....
सर्व हितकर सुखकार - 2 करते.....
सर्वोच्च लक्ष्य है परमसत्य साम्य सुखामृत पाना।
जीवन भर विद्यार्थी रहकर जीवन सफल बनाना। जीवन.....
न समय करुँ बरबाद - 2 करते.....

रचनाकार - आ. क्षमाश्री माताजी

परिच्छेद-IV

आ. कनकनंदी की बाल शिक्षा पद्धति

आहार दान की नवधा भक्ति

तर्ज - (बच्चे मन के सच्चे.....)

वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव की बाल शिक्षा पद्धति

बच्चे लगते अच्छे हम गुरुवर जी को हैं प्यारे।
सुख की राह बताने वाले कनकनंदी जी हमारे।। बच्चे.....

हम नन्हें-नन्हें बच्चे हैं, तन मन से हम सच्चे हैं।
हमने शुद्धि से पहने कपड़े अच्छे-अच्छे हैं।।
रंगोली से सजायें हमने अपने द्वारे। बच्चे.....

चौका हमने लगाया है गुरुवर ने पढ़ाया है।
पडगाहन विधि से आहार तक सब कुछ हमें सिखाया है।।
आहार दान के फल से देखो स्वर्ग मोक्ष मिल जाते। बच्चे.....

हे स्वामी नमोस्तु-नमोस्तु कहकर हम पडगाते हैं।
अत्रो-अत्रो तिष्ठो-तिष्ठो कहने पर वे आते हैं।।
विधि मिल जाने पर गुरु आ जाते पास हमारे। बच्चे.....

तीन प्रदक्षिणा लगा नमोस्तु कहकर हम ले जायें
मन, वचन, काय शुद्धि कहकर चौके में प्रवेश करायें
उच्चासन पर बैठो स्वामी यह कहने पर गुरु पधारें। बच्चे.....

चरण धुला गंधोदक लेकर रोज गुरु को आहार दिखातें।
नवधा भक्ति व विनय भाव से रोज आहार करवाते।
आहार दे आनंद भाव से हम बाजे बजवाते।। बच्चे.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

अंजना चरित्र

वैश्विक विचारक परमपूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव की बाल शिक्षा पद्धति

तर्ज - (नगरी - नगरी.....)

पापों से नित डरना बच्चों पापों से नित डरना।
कनकनंदी गुरुवर की शिक्षा सदा हृदय में धरना।। पापों.....

इक नारी जो दुःख की मारी वन-वन डोल रही थी
दासी अकेली संग न कोई निज को कोस रही थी
दासी कहती है महारानी धैर्य हृदय में धरना। कनकनंदी.....

सास निकाले घर से बाहर पिता शरण न देते।
पति चले गये युद्ध में वापस मेरी सुद न लेते।।
मन में बार-बार कहती है प्रभु जी रक्षा करना। कनकनंदी.....

गहरे वन में शेर, भालू, चीता से न घबराये।
पुण्य उदय से मुनिवर के अंजना दर्शन पाये।।
तीन प्रदक्षिणा दे शिर नाये कहे कष्ट निज बैना। कनकनंदी.....

मुनिवर बोले हे पुत्री! अब पुण्य उदय तव आया।
जन्मेगें जो पुत्र तुम्हारे है कामदेव की काया।।
इस ही भव से पायेगा वो मुक्तिश्री का अंगना। कनकनंदी.....

मुनि वचन सुन शांति पाकर प्रभु की भक्ति में रमती।
शेर वहाँ पर आया फिर भी अंजना न डरती।।
दासी डरके नभ में घूमे अब कैसे हो बचना। कनकनंदी.....

अंजना के पुण्य उदय से देव वहाँ पर आये।

अष्टापद का रूप बनाकर शेर वहाँ से भगाये।।

जन्म लिया फिर सुन्दर बालक जंगल में क्या कहना। कनकनंदी.....

बाईस पल प्रभु की मूर्ति को कुयें में छिपाया।

इसका फल अंजना ने देखो बाइस वर्षों पाया।।

अतः ईर्ष्या में प्यारे बच्चों ऐसा कभी न करना। कनकनंदी.....

अंजन ने क्यों कष्ट उठाये बच्चों आज बताओ।

क्या शिक्षा तुमने पायी है मुझको आज सुनाओ।।

जैसे अंजना श्रद्धा न छोड़े वैसी श्रद्धा रखना। कनकनंदी.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

श्रीपाल चरित्र

वैश्विक विचारक परमपूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव की बाल शिक्षा पद्धति

तर्ज -(मधुवन के मंदिरों.....)

गुरु कनकनंदी कह रहे हैं मुनि निंदा कभी न करना।

श्रीपाल की कथा सुन मुक्तिरमा को वरना।। गुरु.....

श्रीपाल नृप ने देखो कुष्टी का तन था पाया

थे सातसौ संग साथी उनकी भी कुष्टी काया

प्रारब्ध कर्म फल को इस भव में है भुगतना। गुरु.....

एक त्यागी नग्न मुनि की सबने हंसी उड़ाई।

कुष्टी कहा था उनको बुद्धि पाप से भरमाई

तालाब में फेंक दूँगा श्रीपाल के थे वयना। गुरु.....

कुष्टी के भावों ने कुष्टी इन्हें बनाया।

सुन्दर थी जिनकी काया इस रोग ने गलाया।

अपमान भरी सभा में श्रीपाल को पड़ा सहना। गुरु.....

सरोवर के भाव ने इन्हें सागर में था गिराया

कई कष्ट तो सहे फिर भी न कष्ट को भुलाया

श्रीपाल ने इस भव में पाई गुरु की शरणा। गुरु.....

अब पुण्य का उदय भी फिर से है देखो आया

राजकुमारी मैना सुन्दरी से था ब्याह रचाया

मैना का भक्ति भावों से अभिषेक प्रभु का करना। गुरु.....

गन्धोदक छिड़का सबपे सिद्धाचक्र पाठ करती

सात दिन में सबके कष्टों को दूर करती

मैना ने देखो माना भक्ति से गुरु का कहना। गुरु.....

धरम के फल से पायी थी कंचन काया

राजा बने वो फिर से सुख में समय बिताया

श्रीपाल मुनि बनकर पहुँचे मुक्ति अंगना। गुरु.....

गुरुवर की सीख लेकर मुनि निंदा कभी न करना

चाहे रहो कहीं भी गुरुओं की सेवा करना

पाओगे अनंतसुख तुम शिक्षा हृदय में धरना। गुरु.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री

सीता सति चरित्र

वैश्विक विचारक परमपूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव की बाल शिक्षा पद्धति

तर्ज -(चाँदी की दिवार.....)

कनकनंदी गुरुवर जी कहते,
सबपे संकट आता है।
भाग्य ही जिसको ठोकर मारे,
उसे कौन अपनाता है।। कनकनंदी .....
राम की भार्या सीता की भी, गाथा बहुत पुरानी है।
जंगल-जंगल भटकी देखो, वह अवध की रानी है।।
इकनारी के अपवादों से जग जिसको ठुकराता है। भाग्य .....
तीरथ करने जाऊँ पिया को दोहला यह बतलाती है।
किंतु पति के मन में क्या है समझ नहीं वो पाती है।।
अपकीर्ति के भय से जिसको पति ही वन पहुँचता है। भाग्य .....
जैसे मुझको छोड़ा वन में, वैसे धरम न विसराना।
सेनापति तुम जाओ पिया को यह संदेश सुनवाना।।
दुःखी हृदय से छोड़ सति को सेनापति तब जाता है। भाग्य .....
रोती बिलखती सीता माता मूर्च्छित हो गिर जाती है।
वज्रजँघ नृप लेने आते हर्षित हो संग जाती है।।
जंगल में भी मंगल होता पुण्य उदय जब आता है। भाग्य .....
पुत्र जन्म की खुशखबरी ने सीता का दुःख दूर किया।
जन्मोत्सव की खुशियाँ छाई किन्तु पिता को दूर किया।।

कर्म के आगे किसकी चलती सबको नाच नचाता है। भाग्य .....
निज अधिकारों को पाने हित लवकुश अवध में जाते हैं।
राम लखन से युद्ध करें वे अपना शौर्य बताते हैं।
देख वीरता उन वीरों की सूरज भी छिप जाता है। भाग्य .....
देख वीर पुत्रों को अपने राम धन्य हो जाते हैं।
सीता को कैसे बुलवाऊँ यह विचार मन लाते हैं।
भाग्य और दुर्भाग्य मात का एक साथ में आता है। भाग्य .....
राम कहें निर्दोष सिया तुम निज कलंक को दूर करो।
राजमहल में तब ही आओ, या मेरा परित्याग करो
पंच शपथ के हेतु सिया का हृदय नहीं घबराता है। भाग्य .....
अग्नि कुंडे में गई सिया ज्यों अग्नि में जल कमल खिला।
देवों को भी शीलवती की सेवा का सौभाग्य मिला।।
शीलवती का शील निराला, पावक जल हो जाता है। भाग्य .....
मुनि निंदा के फल ने देखो, कितने दुःख दिखाये हैं।
सीता जैसी महासति ने कितने कष्ट उठाये हैं।
मुनि निंदा के फल से देखो क्या से क्या हो जाता है। भाग्य .....
सीता आर्यिका दीक्षा ले, आतम का कल्याण करे।
छेदन करके नारी वेद को, अच्युत स्वर्ग प्रयाण करे।
मात सिया के पादयुगल में, 'क्षमा' का सर झुक जाता है। भाग्य .....
इस कथा से शिक्षा मिलती बहुत सारी है।
संकट में भी धर्म न छोड़े वह ही विवेकी प्राणी है।।
सत्य पक्ष का न्यायधर ही जीवन में सफलता पाता है। भाग्य .....

प्रस्तुति -आ. क्षमाश्री माताजी

आहार दान की महिमा

वैश्विक विचारक परमपूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव
की बाल शिक्षा पद्धति
तर्ज -(तुझे सूरज कहूँ.....)

आहारदान की महिमा कनकनंदी गुरु बतलायें।
स्वर्ग, मोक्ष भोगभूमि का रिजर्वेशन भी करवायें।। आहार.....
एक राजा वज्रजंघ थे थी श्रीमति जिनकी रानी।
आहारदान की बच्चों सुनलो गुरुवर से कहानी।।
राजा वन में रानी संग द्वय मुनिवर को पड़गाहें।। आहार.....
दमधर सागर जी सेन ऋद्धिधारी मुनि आये।
नवधाभक्तिपूर्वक दान देकर अति हरषाये।
आहारदान अनुमोदन करने चतुः पशु भी पाये। आहार.....
आहारदान के फलश्रुत क्या हुआ ये भी कहते।
राजा तीर्थंकर बनते जो आदिनाथ कहलाते।।
रानी नृप श्रेयांस बनकर प्रभु का आहार कराये। आहार.....
दान के अनुमोदन से सब स्वर्ग व भोगभूमि पाये।
अंत में मंत्री पुरोहित पशु भी स्वर्ग से आये।।
आहारदान के फल से आदिनाथ के पुत्र कहाये। आहार.....
प्रभुवर कैलाश गिरी से निर्वाण महापद पायें।
जिनवर संग ये सब भी मुक्तिरमा पा जायें।।
हम भी आहार देंगें ऐसे शुभभाव बनायें। आहार.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

णमोकार मंत्र की महिमा

वैश्विक विचारक परमपूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव
की बाल शिक्षा पद्धति
तर्ज -(थोड़ा ध्यान लगा.....)

थोड़ा ध्यान लगा - 2 गुरुवर तुझको ये समझायेंगे थोड़ा.....
थोड़ा ध्यान लगा गुरुवर तुझको ये समझायेंगे एक कथा भी सुनायेंगे।।
कनकनंदी गुरुदेव तुझको मंत्र की महिमा बतायेंगें-2
कनकनंदी .....एक कथा भी सुनायेंगें।। थोड़ा.....
सेठ पद्मरुची उपदेश को सुनकर घर को जब जायें
राह में इक बैल मिला उन्हें घायल णमोकार मंत्र सुनाये
दया धर्म अनुसार -2 वृष राजा के घर जन्मे थे।। दया.....
एक कथा .....कनकनंदी .....
राजपुत्र बनकर जाति स्मरण से पूर्व जन्म याद आया
राजकुंवर ने राजा बन करके इक जैन मन्दिर बनवाया
भित्ति चित्र वृषभ का -2 चित्र देखने जो भी आयेंगे।। भित्ति चित्र.....
एक कथा .....कनकनंदी .....
इक दिन पद्मरूचि उस मन्दिर में आये चित्र देख चकराये
पच्चीस वर्ष की कथा जब याद उन्हें आये मंत्री को बतलाये
महिमा है अपार-2 णमोकार मंत्र ध्यायेंगे।। महिमा.....
एक कथा .....कनकनंदी .....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

आहारदान अनुमोदना का फल

शब्द संकलन - (वैश्विक विचारक आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव)

तर्ज -(हणवे-हणवे हणवे प्रभुजी.....)

कनकनंदी गुरुवर जी कहते, आहारदान की महिमा सुनो।
धन्यकुँवर के जीवन से, बच्चों तुम थोड़ी शिक्षा लो।। (2)
माता गई पानी भरने को, ठहरो-ठहरो ओ बाबा
मात आये बिन पाँव न छोड़ूँ , मेरे घर आओ बाबा-2
धन्य कुँवर चरणों में गिरके कहते मेरे घर आओ कनकनंदी.....
मेरी माता ने ओ बाबा, मीठी खीर बनाई।
भूख लगी थी मैंने माँगी, न देती मुझे माई।। (2)
मुनि आहार बिना न दूँगी यह कहती तुम चालो। कनकनंदी.....
ऐसा कहकर पानी भरने, जाये मेरी माता।
मानो मेरी बात ओ बाबा, चरण पकड़ सो जाता।। (2)
बालहठ के आगे मुनिवर मन में सोचे चलो। कनकनंदी.....
माता आई पानी लायी, गुरु की विधि मिलाई।
नवधा भक्ति से मुनिवर की, सारी क्रिया निभाई (2)
बेटा खुश होकर कहता है मेरी भी खीर खिलाओ। कनकनंदी.....
दान अनुमोदन से बालक का पुण्य उदय शुभ आया।
उस ही दिन देखो भाग्य ने अतिशय पुण्य बढ़ाया।। (2)
बची खीर इतनी सारी सारे नगर को जिमा दो। कनकनंदी.....
धन्य कुँवर ने अनुमोदन कर भव-भव में सुख पाया।
मुनि बनकर स्वर्गों में पहुँचे, धर्म का शुभ फल पाया।। (2)
बच्चों सुनकर कथा कुँवर की दान का लक्ष्य बनाओ। कनकनंदी.....

रचनाकार - आ. क्षमाश्री माताजी

बच्चों से प्राप्त शिक्षायें

शोध एवं शब्द संकलन-वैश्विक विचारक प.पू. आ. रत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

तर्ज -(बहुत प्यार करते हैं.....)

कनकनंदी गुरु हैं तारण-तरण
बच्चों से शिक्षा भी करते ग्रहण -2
बड़ों के गुरु कभी बच्चे भी बनते
जो ध्यान से उनको हैं समझते
उनकी वृत्ति-2 सहज और सरल।। कनकनंदी
भावों की पवित्रता आनन पे झलके
मधुर-मधुर वाणी से मन जो हरते
सिखाते हैं हमको-2 होना सरल।। कनकनंदी.....
पानी में खेले धूल लपेटे
गर्मी-ठंडी कुछ न देखें
प्राकृतिक क्रियायें-2 हैं मन-हरण।। कनकनंदी.....
ऋषि मुनिगण बालकवत् रहते
तन, मन की परवाह न करते
निर्विकार वृत्ति-2 वेश नगन।। कनकनंदी.....
बच्चे होते हैं जिज्ञासु
उत्सुकतामय ज्ञान पिपासु
सीखने की होती-2 सब कुछ लगन।। कनकनंदी.....
कनकनंदी कहते बच्चों से सीखो
उन्हें न अपने से छोटा समझो
पाँच वर्ष तक न-2 डांट न पठन।। कनकनंदी.....

प्रस्तुति -आ. क्षमाश्री माताजी

ग्रामीण संस्कृति

शोध एवं शब्द संकलन-वैश्विक विचारक प.पू. आ. रत्न श्री कनकनंदी गुरुदेव

तर्ज -(आजा सनम.....)

आओ सभी ग्रामों में चले, ग्राम जीवन में शांति हम पायेंगे।
कनकनंदी गुरु के विचार, उन्हें गाँव में दिखती बहार।। आओ.....

नगर शहर में न जा भारी प्रदूषण है।
भौतिकता की चमक में लग गया दूषण है।
मधुर, सुरम्य सरल प्रकृति का उपकार है,
सुख, शान्ति, प्रदात्री संस्कृति जहाँ मनहार है।। आओ.....

कारखाने, गाड़ी का धुआँ बेशुमार है।
हर कदम पर खतरा न कोई जिम्मेदार है,
शहर में भीड़ है शांति न प्यार है।
हर कोई जहाँ दिखता बीमार है।।, आओ.....

प्रकृति की गोद में पले ग्राम आज खुशहाल है।
स्वस्थ तन-मन को करे नदी, ताल और पहाड़ है,
खेत लहरा रहे पशु -पक्षी बुला रहे।
आओ आनंद लो यहाँ सदा बहार है, आओ.....

रुप, भाव, काम, दाम में मधुरता दिखती है,
हरी चदरिया ओढ़े धरती मन हरती है।
गाँव छोड़ जो चले तन, मन, धन लुटे,
कनकनंदी कहें नगर नरक समान है। आओ.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

परिच्छेद-V

गुरु गुणगान

गुरु विनय पद्धति

1. गुरु के सामने चुगली नहीं करना।
2. गुरु के सामने छल-कपट नहीं करना।
3. गुरु के सामने दूसरों की निंदा नहीं करना।
4. गुरु के सामने अपनी प्रशंसा नहीं करना।
5. गुरु के सामने विनय-पूर्वक प्रश्न करना।
6. गुरु की नकल नहीं करना।
7. गुरु का समय खराब नहीं करना।
8. गुरु से बहस नहीं करना।
9. गुरु की वन्दना करते समय कम से कम एक हाथ से वन्दना करना।
10. गुरु से जिद नहीं करना।
11. गुरु के चरणों को स्पर्श करते समय बायें हाथ से बायें चरण और दाहिने हाथ से दाहिने चरण को स्पर्श करना।
12. गुरु के सामने गुस्से में नहीं बोलना।
13. गुरु के सामने आसन से टिककर नहीं बैठना।
14. गुरु से सटकर नहीं बैठना।
15. गुरु के सामने जांघ पर हाथ रखकर नहीं बैठना।
16. गुरु के सामने अभद्र (आशालीन) मुद्रा में नहीं बैठना।
17. गुरु के सामने हथेलियाँ ऊपर की ओर करके बैठना।
18. गुरु के सामने बातूनी नहीं बनना।

19. गुरु सेभूल-चूक होने पर नहीं हँसना।
20. गुरु के सामने अँगड़ाई नहीं लेना।
21. गुरु के किसी काम में विघ्न नहीं डालना।
22. गुरु के सामने उँगली नहीं चटकाना।
23. गुरु की बात नहीं काटना।
24. गुरु से कोई भी वस्तु आदि दोनों हाथों से लेना और देना।
25. गुरु से भक्ति से डरना।
26. गुरु की परछाई पर पैर नहीं रखना।
27. गुरु के सामने विनय का ध्यान रखना।
28. गुरु के बारे में गलत नहीं सोचना।
29. गुरु से नाराज नहीं होना।
30. गुरु के सामने चतुराई नहीं दिखाना।
31. गुरु की अनुपस्थिति में भी उनके आसन पर नहीं बैठना।
32. गुरु के सामने दूसरों की हँसी नहीं उड़ाना।
33. गुरु के साथ चलते समय शिष्यों को गुरु के बाएँ हाथ की ओर चलना चाहिये।
34. गुरु के साथ चलते समय कम से कम उनसे एक कदम पीछे चलना।
35. गुरु के साथ चलते समय अधिक नहीं बोलना।
36. जब गुरु किसी से बात करें, तो उन्हें इस तरीके से नमस्कार नहीं करना कि उनका ध्यान विचलित हो जाये।
37. गुरु के सामने बोलना कम, सुनना अधिक।
38. गुरु जो करते हैं उसका नकल मत करो, वो जो कहते हैं, वह करो। उनके आदर्श को ग्रहण करो।

गुरु सेवा का फल

उच्चैर्गोत्रं प्रणतेर्भोगो दानादुपासनात्पूजा।
भक्तेः सुन्दररूपं स्तवनात्कीर्तिस्तपोनिधिषु।।5।।
(श्रावकाचार-समन्तभद्राचार्य)

गुरुओं को प्रणाम करने से उत्तम गोत्र की प्राप्ति होती है, दान देने से उत्तमोत्तम भोगों की प्राप्ति होती है, उपासना करने से स्वयं की पूजा होती है, भक्ति करने से कामदेव सदृश्य लावण्य युक्त शरीर की प्राप्ति होती है, स्तवन करने से कीर्ति दशों दिशाओं में फैलती है। कवि ने कहा है-

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरुदेव की गोविन्द दियो बताय।।

गंगा पापं शशि तापं दैन्यं कल्पतरूस्तथा।
पापं तापं तथा दैन्यं सर्व सज्जन संगमः।।

गंगा के स्नान से ताप नष्ट होता है, चन्द्र किरण से संताप नष्ट होता है, कल्पवृक्ष से दरिद्रता नष्ट होती है, परन्तु सज्जन (गुरु) की संगति से पाप, ताप तथा दीनता सर्व एक साथ विलीनता को प्राप्त होती है।

गुरु भक्ति सती मुक्त्यै, क्षुद्रं किं वा न साधयेत्।
त्रिलोकी मूल्य रत्नेन, दुर्लभः किं तुषोत्करः।।

यदि गुरु भक्ति से मोक्षरूपी अत्यन्त मूल्यवान वस्तु मिल सकती है, तो क्या अन्य क्षुद्र कार्यों की सिद्धि नहीं हो सकती है?

जिस अमूल्य रत्न से त्रिलोक मिल सकता है उस रत्न से क्या सामान्य तुष नहीं मिल सकता है? अर्थात् निश्चय से मिल सकता है। इसलिये हिताकांक्षियों को सतत् प्रयत्नशील होकर गुरुओं की सेवा करनी चाहिये। एक कवि ने कहा भी है -

हरि सुजन सु हेत कर, कर हरिजन सु हेत।
माल मूलक हरि देत है, हरि जन हरि ही देत।।

भगवान् की सेवा करने से भगवान धन सम्पत्ति दे सकते हैं, परन्तु गुरुओं की सेवा करने से गुरुजन, भगवान को ही दे देंगें।

प्रत्येक देश में, काल में, समाज में जो क्रांति हुई है, हो रही है और होगी उसका मूल कारण गुरु ही है। गुरु एक क्रांतिकारी, समय शोधक, नवीन-नवीन तथ्य के उन्नायक महापुरुष होते हैं। गुरु के बिना यह कार्य नहीं हो सकता है। अलेक्जेंडर (सिकन्दर) महान् बना अरस्तु के कारण चन्द्र गुप्त मौर्य दिग् विजयी बना गुरु कौटिल्य चाणक्य के कारण, शिवाजी छत्रपति बना, गुरु समर्थ रामदास के कारण। मोहनदास महात्मा गाँधी बने, श्रीमद् रायचन्द्र के कारण। इसी प्रकार ऐतिहासिक काल के पहले ही राजा महाराजा, सम्राट भी गुरुओं के चरण के सानिध्य में जाकर ज्ञान-विज्ञान, आत्मविद्या, राजनीति, अर्थशास्त्र, युद्ध विद्या, कला कौशल, ग्रहण करते हैं।

गुरु बिना सर्वे भवन्ति पशुभिः सन्निभः

गुरु के बिना मनुष्य पशु के सदृश हैं।

''गुरु बिना कौन दिखावे वाट, अवगड़ डोंगर घाट''

गुरु के बिना यथार्थ मार्ग प्रदर्शन कौन करेगा? यह संसार कंटकाकीर्ण, अत्यन्त दुःरूह भयंकर जंगलघाट के समान है। उसको पार करने के लिये गुरु रूपी मार्गदर्शक की नितान्त आवश्कता है।

आचार्य कनकनन्दी की आध्यत्मिक यात्रा

(आचार्य श्री की आध्यात्मिक क्रान्ति एवं विश्वशान्ति)

1. मार्ग निर्देशक एवं शिक्षा गुरु :- प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी गुरुदेव एवं प.पू. मर्यादा शिष्योत्तम, प्रशान्तमूर्ति आचार्य श्री भरतसागर जी गुरुदेव।

2. दीक्षा एवं शिक्षा गुरु :- प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य, वात्सल्य रत्नाकर आचार्य गुरुवर श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव।

3. प्रमुख शिक्षा गुरु :- प. पू. गणिनी आर्यिका विजयमती जी माताजी,

आचार्य श्री विद्यानन्दजी (कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली), पं. शेखरचन्दजी शास्त्री (ईसरी), पं. परमानन्द जी शास्त्री (शाहगढ़), पं. श्रेयांसकुमारजी दिवाकर (सिवनी), पं. सुमेरचन्द्रजी दिवाकर के अनुज, पं. प्रभाकरजी शास्त्री (श्रवणबेलगोला), श्री नागराजैया (हासन, कर्नाटक)

वैसे ही आचार्य श्री तीसरी कक्षा से ही अध्यापन कार्य कर रहे हैं, विशेषतः 1981 तक आचार्य श्री ने विभिन्न विधाओं का अध्ययन विभिन्न गुरुओं से किया है एवं कर रहे हैं किन्तु विशेषतः 1982 से विभिन्न विधाओं का अध्यापन कार्य कर रहे हैं और आगे भी करेंगे। प्रायः 1988 से विशेषतः शोधपूर्ण अध्ययन-लेखन, 1990 से वैज्ञानिक चैनलों से शोधपूर्ण ज्ञान कर रहे हैं।

4. क्षुल्लक दीक्षा :- अतिशय क्षेत्र पपौराजी (टीकमगढ़, म.प्र.) 1978

5. श्रमण दीक्षा :- श्रवणबेलगोला - गोम्मटेश्वर, 5 फरवरी 1981 (सहस्राब्दी महामस्तकाभिषेक के अवसर पर आ. विमलसागरजी ससंघ आ. विद्यानन्द जी ससंघ आदि प्रायः 200 साधु-साध्वी, भट्टारक चारुकीर्ति अनेक विद्वान तथा लाखों श्रद्धालुओं के संगम के अवसर पर।)

6. उपाध्याय पदवी :- 25 नवम्बर 1982, हासन (कर्नाटक) (स्व-गुरु आचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव ससंघ तथा श्रद्धालुओं के द्वारा) पदवी प्रदान महोत्सव करीब एक महीना चला। इस कार्यक्रम में अनेक भट्टारक भी उपस्थित रहे।

7. सिद्धान्त चक्रवर्ती पदवी :- 1985, शमनेवाड़ी (कर्नाटक) (उपाध्याय कनकनंदी द्वारा धवला वाचना से प्रभावित होकर आचार्य कुन्थुसागर जी स्वसंघ, आचार्य देशभूषण जी ससंघ तथा 15 से 20,000 श्रद्धालुओं के द्वारा त्रिलोक तिलक विधान के अवसर पर।)

8. एलाचार्य :- 1988, आरा (बिहार) अनेक मुनि दीक्षा के अवसर पर (स्वगुरु आचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव स्वसघं (प्रायः 35 साधु-साध्वी) तथा श्रद्धालुओं के द्वारा।)

9. विश्व धर्म प्रभाकर :- 1992 के प्रारम्भ में, दिल्ली (भारत की राजधानी)

(स्वगुरु आचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव स्वसंघ, उपाध्याय श्री आनन्द सागरजी 'मौनप्रिय' तथा 10-12000 श्रद्धालुओं के द्वारा पञ्चकल्याणक के अवसर पर।)

10. ज्ञान-विज्ञान दिवाकर :- 1992 के अन्त में, रोहतक (हरियाणा) (स्वगुरु आचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव स्वसंघ (प्रायः 35 साधु-साध्वी, 4-5000 श्रद्धालुओं के द्वारा, त्रिलोक तिलक विधान के अवसर पर।)

11. आचार्य पदवी :- 23 अप्रेल 1996, उदयपुर (राज.)
(मुनि दीक्षा के अवसर पर, स्वगुरु आचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव की 4-5 वर्षों की आज्ञा तथा आदेश पत्र एवं अनेक साधु, समाज के आग्रह के कारण। आचार्य पदवी के संस्कार आचार्य श्री अभिनन्दनसागर जी गुरुदेव। अनुमोदन एवं सानिध्य स्वसंघस्थ आचार्य पद्मनन्दी जी ससंघ। प्रायः 50-60 साधु-साध्वी तथा प्रायः 30-35000 श्रद्धालुओं की उपस्थिति तथा अनुमोदना।)

12. आचार्य रत्न :- 23 अप्रेल 1996 उदयपुर (राज.)
आचार्य पदवी संस्कार के पावन अवसर पर आचार्य श्री अभिनन्दन सागरजी गुरुदेव द्वारा प्रदत्त।

13. शिक्षण-प्रशिक्षण :- अभी तक आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव से भारत के 13 प्रदेशों के जैन-अजैन लाखों विद्यार्थी, शिक्षक, प्राध्यापक, व्याख्याता, प्राचार्य, प्रोफेसर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, उपकुलपति, वकील, जज, जैन विद्वान् आदि ने शिविर-कक्षा, स्वाध्याय, संगोष्ठी, चर्चा, शंका-समाधान आदि से लाभान्वित हुए हैं और हो रहे हैं। आचार्य गुरुवर श्री कुन्थुसागरजी स्वसंघ, आचार्य गुरुवर श्री विमलसागरजी संघस्थ, आचार्य गुरुवर श्री अभिनन्दन सागरजी संघस्थ, गणिनी आर्यिका विशुद्धमती माताजी संघस्थ (शिष्या आ. निर्मलसागरजी) साधु-साध्वी तथा अन्यान्य संघस्थ साधु-साध्वी, क्षुल्लक-क्षुल्लिकादि प्रायः 200, आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव से अध्ययन किये हैं और कर रहे हैं। आचार्य श्री विद्यासागरजी गुरुदेव संघस्थ,

आचार्य श्री सन्मतिसागरजी गुरुदेव (ज्ञानानन्द) संघस्थ तथा अन्यान्य संघस्थ प्रायः 30-40 ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियाँ भी आचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव से अध्ययन किये हैं और कर रहे हैं। प्रायः 15-20 दिगम्बर आचार्य-उपाध्याय तथा कुछ श्वेताम्बर साधु भी आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव से ज्ञानार्जन किये हैं और यह प्रक्रिया सतत प्रवाहमान है।

14. आचार्य श्री के शिष्यों के द्वारा धर्म प्रचार :- आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव के साधु-साध्वी शिष्यों के द्वारा तो भारत में तथा वैज्ञानिक, उपकुलपति प्रोफेसर आदि शिष्यों के द्वारा भारत, भारत के विश्वविद्यालयों, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, इंगलैण्ड (यूरोप), नेपाल, श्रीलंका आदि देशों में तथा वहाँ के विश्वविद्यालयों में, विश्वधर्म संसद में धर्म-दर्शन-विज्ञान का प्रचार-प्रसार हो रहा है और यह प्रक्रिया तीव्रता से बढ़ रही है। आचार्य श्री के दि., श्वे. जैन प्रोफेसरादि शिष्य भी दि., श्वे. जैन साधु-साध्वी, विद्वान्, गृहस्थों आदि को भी प्रगतिशील धर्म का अध्यापन करा रहे हैं। आचार्य श्री के ब्र. शिष्य सोहनलालजी देवड़ा भी अनेक ग्रामों में धर्म-दर्शन-विज्ञान पाठशाला प्रारम्भ करके बच्चों से लेकर प्रौढ़ तक को धर्म का संस्कार दे रहे हैं।

15. आचार्य श्री की पवित्र भावनायें एवं महान् योजनाएँ :-
स्वात्मोपलब्धि रूप मोक्ष ही आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव के सर्वोच्च अन्तिम लक्ष्य है। एतदर्थ सत्य-समता-सहिष्णुता-निष्पृहता-व्यापकता-उदारता-एकता-प्रगतिशीलता-वैज्ञानिकता-प्रभावना-शान्ति-निष्पक्षता-न्यायप्रियता-पवित्रता-क्षमा-मृदुता-सहज सरलता-संयम-मौन-एकान्तवास रूपी रत्नत्रयमय पवित्र भावनाओं की साधना तथा स्व-पर-विश्व कल्याणार्थ इन भावनाओं का विश्व स्तर पर प्रचार-प्रसार स्थापना की महान् योजनाएँ हैं।

मेरा चार-आयाम सिद्धान्त
भगवान् है मेरा परम-सत्य स्वरूप,
सिद्धान्त है स्याद्वाद-अनेकान्त रूप।
सतत साधना है मेरी स्वस्थ-समता,
उपलब्धि हो मेरी परम शान्ति रूपा।।
आ. कनकनन्दी

आचार्य कनकनंदी का आह्वान

विज्ञान आंशिक धर्म है किन्तु धर्म पूर्ण विज्ञान है।

Science is part of religion but religion is absolute science.

विश्व के समस्त जिज्ञासुओं को हमारा सादर आह्वान एवं आमंत्रण है, जो परम सत्य को धार्मिक आस्था, दार्शनिक दृष्टि तथा वैज्ञानिक प्रणाली से परिज्ञान, परिपालन व उपलब्धि करना चाहते हैं उनके लिए-

You give me co-opration, I shall give you scientific religion.

आप मुझे सहयोग दें, मैं आपको वैज्ञानिक धर्म दूँगा।

-वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

मेरे 35 वर्षीय अनुभव में आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

ॐ नमः

परम सत्य-परमतत्त्व-शांति समता-अनेकान्त स्याद्वाद के पुजारी अन्वेषक एवं रहस्य के भेदन-वेदन से माहिर अनुभवी कुशल तत्त्व वेत्ता-वै.ध.श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

लेखक - मुनि चिन्मयानंद-संघस्थ शिष्य

गुरु कृपा मुझको मिली, हो आतम उद्धार।
गुरु-चरण सेवा करुँ, पाऊँ मुक्ति द्वार।।

अभिव्यक्ति कौशल्य है, एक सफल प्रभावशाली कला है। मेरे में यह कला नहीं पनप पाई, वचनों से कुछ-कुछ कभी-कभी कह पाता हूँ, साथ ही उच्चारण में व भाषा में प्रौढ़ता भी नहीं आपाई फिर भी मेरी कलम तो परम पू. प्रातः स्मरणीय वात्सल्य रत्नाकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव के व्यक्तित्व - कृतित्व के बारे में लिखने को चल पड़ी

है। गुरुदेव के अनुपम गुणों को पूर्णतः लिखने में असमर्थ होते हुए भी यहाँ अल्प ही अवश्य लिखने को प्रयासरत हूँ। क्योंकि जिनके वन्दनीय चरणों में मैं समर्पित हुआ हूँ, जिनके पावन अमोघ सानिध्य को जीवन पर्यन्त के लिये स्वीकारा है, उनके आन्तरिक सौन्दर्य व चुम्बकीय नैतिक व्यक्तित्व (Morality) में आकर्षण का अनुभव कर बहुमान से गद्गद हो झूम उठा हूँ आनन्दित हो गया हूँ। गुणों को स्मरण कर यह चाहता हूँ कि सबल व स्व सन्मुख पुरुषार्थ से मेरे में भी शीघ्र ही ऐसे गुण प्रगट हों और लिखना इसलिये भी चाहता हूँ कि जन-जन ऐसे इन गुरुदेव के द्वारा सृजित अपूर्व कार्यकारी कल्याणकारी साहित्य का लाभ उठावें और फिर इनके चरण सानिध्य की निकटता में समर्पित होकर शीघ्र ही समुन्नत होवें।

1. गुरुदेव की आत्मानुशासन वृत्ति व गुरुओं का आशीर्वाद -

ऋषि श्रमणराज आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव सदा से परमसत्य को ही परमेश्वर मानने वाले हैं - कहते हैं Truth is God & God is Truth सत्य ही भगवान् हैं और भगवान्-भगवत् शक्ति-सम्पूर्ण शक्तियाँ सत्य की सतत खोज से प्राप्त होना संभव है। आप समझाया करते हैं-सत्यांश किसी का भी कहा हुआ हो स्वीकारो, अनुभव करो। गुरुदेव परमसत्य परमतत्व परम तृप्तिकर निज अन्तरंग चैतन्य विलास में रमणता से आत्मानुशासन वृत्ति से आल्हाद-आनन्द में तन्मय डूबे रहने वाले प्रसिद्ध आराधक हैं। प्रायः मौन व गम्भीर वृत्ति व सतत समता परिणामों सहित आप ध्यान, अध्ययन, चिन्तन, मनन, घोलन, दृढ़ निर्णीत लेखन, साहित्य सृजन जैसी सरल सहज श्रेष्ठ-ज्येष्ठ साधनाशील मुद्रा में ही सबको दिखाई देते हैं। मेरा अनुभव है गुरुश्री सबसे अलिप्त व अप्रभावित वृत्ति में बाल्यकाल से ही रहे हैं और तलस्पर्शी सार्थक ज्ञानार्जन किया है। मैंने निकट से यह भी देखा है कि इनकी विनयशीलता, जिज्ञासा, शोध-बोध वृत्ति, कारण कार्य सम्बन्धी ज्ञान, अनुशासन, समयानुबद्धता, श्रेष्ठ कार्य पद्धति से गुरुजन इनसे अति प्रभावित रहे हैं और कृपा स्नेह वात्सल्य से ओत-प्रोत रहे हैं। उनसे भरपूर आशीर्वाद इन्हें मिला है।

2. अल्प आयु में आपको ऐसा आशीर्वाद देकर आगे-आगे क्यों बढ़ाया गया?

पूत के लक्षण पालने में नजर आते हैं-यह चरितार्थ हुआ है। जब किसी व्यक्ति के भाव-व्यवहार भद्र, प्रशंसनीय कुशल नजर आवें, सरलता सहजता से प्रकृति की गोद में रहने रूप रूचि दिखाई देवे और साथ-साथ ही उसके चिन्ता व बाह्य रूचि न दिखाई देवे तथा चिन्तन व प्रयोगात्मक अनुभव दिखाई देवे तो भला उसकी पात्रता योग्यता सफलता का आंकलन कौन नहीं कर लेगा? अर्थात् अवश्यमेव कोई भी कर लेगा और विशेषगुणी पुरुष उसको मार्गदर्शन प्रोत्साहन देकर आगे-आगे बढ़ाना भी चाहेगा। बहुत-बहुत सालों पहले ही मैं देख-देख कर हर्षित हो प्रभावित होता था तथा लोगों से सुनता भी था कि उच्चशिक्षित वर्ग के अध्यापक व शिक्षा-दीक्षा देने वाले दिग्गजगुरु भी पूर्वनामधारी श्री गंगाधर जी प्रधान से प्रभावित प्रसन्न हुए हैं।

मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय-हृदयपटल पर अंकित अनुपम दृश्य 1975-76 का रहा जब ये - आप श्री ब्रह्मचारी व्रती अवस्था में सोनागिर सिद्ध क्षेत्र में उस अर्द्धरात्रि के सन्नाटे में निजी कक्ष में लालटैन के प्रकाश में अकेले गहन गम्भीर शान्त अध्ययनशील मुद्रा में तन्मय नजर आये थे- प्रथमतः हमें सबको। प.पू.आचार्य श्री विमलसागरजी भरतसागरजी, आचार्य श्री कुन्थुसागरजी, आर्यिका गणिनी माँ विजयमती माताजी आदि के विशाल संघों के विशाल प्रसिद्ध सानिध्य में होने वाले कई दिवसीय के पूजा-विधान भक्ति संगीत आदि प्रोग्राम में प्रस्तुति हेतु जयपुर की आमंत्रित श्री शान्तिनाथ भक्ति संगीत नृत्य निकेतन (निःशुल्क) की संस्थापिका - प्रधानाध्यापिका गुरुभक्त महिला कनकप्रभा जी हाड़ा के नेतृत्व में हम ज्यों ही वहाँ पहुँचे, ये महामना पूर्ण सन्तुलित त्यागमयी वात्सल्यपूर्ण प्रमुदित मुद्रा में स्वेच्छा से सहायतार्थ मौन आंशिक संकेत देकर अपनी पूर्ण-स्वाध्याय सामग्री लेकर कक्ष खाली छोड़कर बहार बरामदे में आकर शीघ्र ही पुनः अपने कार्य में लग गये जहाँ फिर भी करीब दो घंटे बाद तक जागृत चिन्तन में हमने इन्हें पाया। प्रातः काल समस्त त्यागियों की स्वाध्याय कक्षा में चले प्रश्नोत्तर में आपकी

भी विशिष्ट भूमिका भागीदारी हमने देखी। हमारे बहुमान भक्ति के प्रसंग वशात् उनमें से पूर्व परिचित गुरुओं को जब हमने ब्रह्मचारीजी की उस रात्रि की बात सुनाई तो उन्होंने भी हमको सब कुछ कहा।

उन श्रमण महापुरुषों ने अपनी कुशल पकड़ से जान लिया कि विरक्तमना आप सूत्र-सिद्धान्त के रसिक हैं, परीषहादि सह सकने में समर्थ हैं, जिनेन्द्र देव के आगम वचनों से महिमावन्त हुए हैं और तत्त्व बोध होने से आत्मउत्थान वास्ते आगे बढ़ना बहुत ही चाहते हैं। उन गुरुओं ने यह भी पहिचान लिया कि ये आगे-आगे भाव विशुद्धि वृद्धिंगत करते हुए स्वप्रभावना व जिनशासन की महती विशेष प्रभावना करते हुए जन-जन के कल्याणार्थ मार्गदर्शन देने की क्षमता से भरे हैं तथा वात्सल्यभाव इनकी रग-रग में भरपूर भरा हुआ है। मैं अपनी स्मृति से अनुभवपूर्वक लिख रहा हूँ कि आपके समता समरसी भाव, विशाल हृदय शीलता, निर्भीकता, निराडम्बरता, सहिष्णुता, व्यापक दृष्टि, अनुशासन वृत्ति, साहस, पराक्रम, तेजस्विता, निष्पक्षता और स्पष्टवादिता आदि गुणों से कोई अपरिचित नहीं है। तात्पर्य यही है कि इनके भव-भव के पुरुषार्थ से, जिनशासन की छाया में मन-वचन-काय की हुई विशुद्धि से, उपलब्धि के विशेष सदुपयोग से और वर्तमान के श्रेष्ठ भावपूर्ण क्रिया कलापों से आपके दीक्षा गुरुराज वात्सल्यमूर्ति स्याद्वाद केसरी गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी बड़े गुरुदेव ने आपको शान्ति व क्रान्ति के अग्रदूत जानकर पहिचान लिया और 1981 में 5 फरवरी श्रवणबेलगांला-गोम्टेश्वर में (सहस्त्राब्दी महामस्तकाभिषेक के अवसर पर आ. विमलसागर जी ससंघ, आ. विद्यानन्दजी ससंघ आदि प्रायः 200 साधु-साध्वी, भट्टारकचारू कीर्ति जी, अनेक विद्वान् तथा लाखों श्रद्धालुओं के संगम अवसर पर) इन पर अपना वरदहस्त रख जैनेश्वरी दीक्षा देकर आशीषपूर्व आगे-आगे बढ़ाते ही गये।

अन्य बड़े-बड़े तपस्वी अनुभवी श्रमणाचार्य प.पू.श्री देशभूषणजी म., श्री धर्मसागरजी महाराज, आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी म. आदि भी आपको खूब चाहने लगे। सहयोग देने व सहयोग लेने की कला में निपुण आप श्री से अन्य साधु भी जुड़ने लगे, महान् ग्रन्थों की प्ररूपणा के विशेष दौर चलने लगे

और बड़े गुरूदेव श्री कुन्थुसागर जी आचार्य श्री ने हासन (कर्नाटक) में चले एक माह के महोत्सव के सहित आपको उपध्याय पद प्रदान किया। 'कुन्थुविजय ग्रन्थमाला' से जो ग्रन्थों का प्रकाशन होता रहा उसमें भी प.पू.वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव को बड़े गुरुदेव ने कुछ जिम्मेदारियाँ व अधिकार प्रदान कर दिये। साथ-साथ ही शिक्षण-प्रचार-प्रसार तथा पन्थवाद-एकान्तवाद के निर्मूलन हेतु जगह-जगह तार्किकों के बीच में भेजना प्रारम्भ कर दिया। इससे आप भी जैन व जैनेत्तर लोगों में अति प्रसिद्ध हो गये।

'कुन्थु विजय ग्रन्थवाला' के संयोजक-प्रकाशक विद्वान श्री शांतिकुमार जी और हम सभी सहयोगी प्रायः सभी अवसरों गोम्टेश्वर बाहुबलि, हासन, आरा, अकलूज, सम्मेदशिखरजी आदि क्षेत्रों पर महोत्सवों-प्रवचनों तथा विशेषतः ग्रन्थों के विमोचन हेतु आचार्य प्रवर श्री देशभूषण जी आदि के पास जाते रहने से सौभाग्यशाली रहे और विशेषतः इन गुरुदेव श्री के निकट रहे।

आगम व अध्यात्म के सुमेल में पारंगत अद्भुत होंसले साहस से मर्म को आत्मसात् करने वाले अपने ये पूज्य गुरुदेव तो जैन-जैनेत्तर देश-विदेशीयों के सबके हैं, अनेक विधाओं के ज्ञान के साथ-साथ विविध धर्म-दर्शन का ज्ञान किये हुए हैं। आप सनम्र सत्यग्राही, गुणग्राही हैं और सकारात्मक सोच रखने वाले उदारमना होने से सत्यांश को भी स्वीकार लेते हैं, आदर करते हैं और तिरस्कार किसी के भी नहीं करते इसलिये पक्षपात से पार कुशल नेतृत्व गुण के धारी हैं, मैं इन सबसे शिक्षा लेता हूँ। महिमावन्त गुरुदेव सर्वसिद्धों को कोटि-कोटि बार नमन करते हुए पूर्णता के लिये लक्ष्य केन्द्रित स्वसन्मुख देखे जाते हैं। सर्वज्ञ देव की शक्ति, दिव्य वचनों की महिमा के गीत सदा गाते हैं और राजमार्ग अपनायें हुए हैं। मुझे लगता है ये अपने स्वयं की सर्वज्ञत्व शक्ति स्वरूप स्वभाव के दृढ़ आस्थावान् हैं इसलिये इतने अलौकिक गणित व कर्मसिद्धान्त आदि के भी मर्मी रहते हुए पुरुषार्थी प्रगतिशील व शान्त प्रमुदित मना रहते हैं और मैं इससे उत्तरोत्तर प्रभावित हो रहा हूँ, सोचता हूँ कि मेरे दोष-अनादि के कुसंस्कार शीघ्र दूर होवें तथा गुरुदेव प्रदत्त नवीन सुसंस्कार दृढ़ होकर गुण प्रगटे।

मेरा अनुभव है आपकी प्रामाणिकता आपके वचन व आपके द्वारा रचित साहित्य है, वो साहित्य विशेषतः जो तीस वर्ष पूर्व से सृजित कर रहे हैं जिसमें धर्म-दर्शन और विज्ञान का सुमेल पाया जाता है। प्रायः प्रत्येक वाक्य में आध्यात्मिकता का रसरूप भाव भरपूर भरा है। ऐसे शोध बोध पूर्ण रहस्य को उजागर करके वैज्ञानिकों तक की कमियों को दृढ़ता से नकारते हुए तथा ठोस आधारपूर्ण अकाट्य बिन्दुओं से सुधार रूपेण मार्गदर्शन देने वाले आप गुरुदेव सबके प्रिय पूज्य श्रद्धेय हो गये हैं भले ही वह भारत देश का प्रोफेसर वैज्ञानिक हो, चाहे वह आध्यात्मिक मार्ग का प्रेमी हो अथवा विदेशी नागरिक कोई भी हो। इन सबका आधार जैसा गुरुदेव श्री आप सहजता से बताया करते हैं; वह है सर्वज्ञतीर्थंकर के दिव्य वाणी प्रणीत सर्वआगम जहाँ जिसमें सम्पूर्ण विश्व के द्रव्यों की सत्ता-परिणमन-शक्तियों और आत्मा की अनन्त शक्तियों का पूर्ण गणितीय वैज्ञानिक स्वरूप स्पष्टतया प्ररूपित है। अतः आप महान् श्रमण-शिक्षक-वैज्ञानिक धर्माचार्य नाम से सुविख्यात हैं और इस अपेक्षा से वर्तमान के प्रथम दिगम्बर साधु हैं।

ऐसी अनुपम प्रतिभा व ज्ञान के धनी आप मुझे इसलिये भी नजर आये क्योंकि आप श्री यतिवृषभाचार्य सरीखे अलौकिक गणित के प्रयोगवान् प्रेमी, वीरसेन स्वामी जैसी पुष्ठ विचारणाशैली के गीत गाने वाले हैं और श्रीमद् कुन्द-कुन्द देव, अमृतचन्द्रसूरि, उमास्वामी, पूज्यवाद स्वामी, विद्यानन्दि स्वामी, अकलंक स्वामी, समन्तभद्र स्वामी के तथा इनके द्वारा रचित शास्त्रों-भाष्य-महाभाष्य धवला, तिलोयपण्णत्ती, समयसार, आत्मख्याति, मोक्षशास्त्र, गोम्मटसार, अष्टसहस्री, राजवार्तिक, स्वयंभूस्तोत्र, आप्तमीमांसा आदि के गीत बहुमान से गाते हैं और तो और आप तो सदैव ही सिद्धान्त-सूत्र, गाथा, श्लोक आदि को कंठाग्र किये हुए आनंद अल्हाद में वर्तन करते दिखाई देते हैं। समय-समय पर स्वसंघ तथा पर संघ के श्रमण साध्वी त्यागी व ब्रह्मचारी ब्रह्मचारिणी व अन्य विद्वान् कोई भी साथ रहें या आवें तो उनको बिना पक्षपात के समता से युक्त ज्ञानार्जन अपने दादा गुरुदेव श्री महावीरकीर्तिजी वत् कराते हैं।

3. गुरुदेव के साहित्य को प्रामाणिक क्यों माना जा रहा है?

आपके द्वारा रचित साहित्य में लिखित वाक्यों से आपके अन्तरंग के स्व-पर-हितकारक पवित्र भाव ध्वनित होते हैं तथा वे हृदय स्पर्शी हैं।

आपने सब आगमोक्त लिखा है जहाँ सर्व प्रकारेण अध्यात्म का सुमेल पाया जाता है और लगता है आप दृढ़ आस्थावान् आज्ञाप्रधानी प्रथमतः रहे हैं, साथ ही परीक्षा प्रधानी तो हैं ही। आप सर्वज्ञ परमात्मा की शक्ति महिमा व सर्वज्ञदेव के दिव्य अमोघ वचनों को स्वीकारने वाले व तद्रुप परिणमन करने वाले महान् साधक हैं और संसार व पाप से भयभीत हैं।

गुरुदेव रचित साहित्य की प्रामाणिकता का मूल आधार यह है कि आपकी प्रत्येक कृति में मूलसंघ के अग्रणी आचार्यों के सूत्र गाथायें, श्लोकादि का मुख्यता से प्ररूपण है।

आप मूल सिद्धान्तों सूत्रों को आत्मसात् किये हुए हैं, उनसे अर्थात् वस्तुस्वरूप से अपने आचरण भाव विचार प्ररूपण आदि से तनिक भी नहीं हटते हैं।

आपने अपने जीवन की प्रयोगशाला में निरीक्षण-परीक्षण वृत्ति से सूक्ष्म से सूक्ष्म रहस्य का भेदन व वेदन किया है, धर्म दर्शन और विज्ञान का समन्वय किया है। आप सदा से कहते आये हैं कि "मुझे सहयोग दो मैं आपको विज्ञानमयी धर्म दूँगा।" You give me cooperation I shall give you scientific religion.

आप परमसत्य के उपासक अन्वेषक सदा से रहे हैं और सत्य के प्रेरक/प्ररूपणा करने वाले धर्म व विज्ञान का जोड़रूप विशेष ज्ञान रखने वाले श्रमण हैं। आप कहा करते हैं कि मैं जैन धर्म के अनेकान्त स्याद्वाद से, अलौकिक गणित से, कर्म सिद्धान्त से तथा बार-बार पंच परावर्तन रूप संसार के भ्रमण के दुःखों के चिन्तन से और स्वयं के गुण-दोष के अवलोकन से विरक्तमना हुआ हूँ। आप कहते बोलते कम नजर आते हैं, प्रायः मौन, गम्भीर, प्रमुदितमना ध्यान, अध्ययन, चिन्तन, लेखन करते ज्यादा दिखाई देते हैं। कुन्दकुन्द देव, उमास्वामी, पूज्यपाद स्वामी, विद्यानन्दिस्वामी, अकलंक स्वामी, समन्तभद्रस्वामी, अमृतचन्द्रसूरि, नेमिचन्द्राचार्य व इनके द्वारा रचित महान्

शास्त्रों यथा- तिलोयपण्णत्ती, धवला, समयसार, प्रवचनसार, तत्वार्थसूत्र, सर्वार्थसिद्धी, अष्टसहस्री, राजवार्तिक, स्वयंभू स्तोत्र, आत्मख्याति और गोम्मटसार आदि के गीत बहुमान से सदा गाते हैं, इनका स्मरण करते हुए मग्न हो जाते हैं तथा सूत्र सिद्धान्त, गाथा व श्लोक आदि के कंठाग्र होने से अनुभव होने से शांति आनन्द से युक्त होते हुए साहित्य सृजन करते हैं। सदा सर्वज्ञ शक्ति, सर्वज्ञ के दिव्य केवल ज्ञान व वचनों की महिमा जय-जयकार करते हैं।

आपने अनेक प्रकार के मनोविज्ञान का अध्ययन, अनेक विधाओं का परिज्ञान व विविध धर्म दर्शन का गहन तलस्पर्शी अध्ययन किया है। तुलनात्मक अध्ययन, गुण प्रशंसा और उदार भावना जैसे गुणों के कारण कभी भी आप किसी का तिरस्कार नहीं करते, यथा अक्सर मार्गदर्शन सुझाव देने की मृदुल प्रवृति रखते हैं। पक्षपात से पार निष्पक्ष स्पष्ट आनन्ददायक वाक्य रचना करते हैं। दुस्साहस, धार्मिक रूढ़िवाद, संकीर्णता, पंथवाद का विरोध बड़े ही साहस से करते हैं।

आपका साहित्य व्यापक दृष्टिकोण युक्त होने से साम्प्रदायिकता से रहित है और सबके लिये सुख शांति सुविधा की प्रकटता के सूत्र बिन्दु देने वाला है। आपका स्वभाव, प्रवृत्ति मात्र इतनी ही नहीं है कि सब प्राणी सुखी हो जायें बल्कि आप इतनी आत्मीयता, अनुकम्पा से भरे हुए हैं कि मैं सुखी कर दूँ, सबको।

आपका साहित्य प्रायः हर समस्या के समाधान के उपाय बताने वाला है, चाहे समस्या धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक राष्ट्रीय ही क्यों न हो। शिक्षण क्षेत्र में विशेषतः वर्तमान से भी अधिक भावी ठोस सुधार विकास के लिये आपका साहित्य कार्यकारी माना जा रहा है। संस्था के website org. तथा E-mail.org पर आपका साहित्य उपलब्ध है। विश्वविद्यालय तथा स्कूल कॉलेजों में आपके साहित्य के पृथक कक्ष Seperate Department तत्परता व दूरदर्शिता से खोले जा रहे हैं। देश-विदेश से बड़ी-बड़ी संस्थाओं की माँग, आपकी कृतियों की निरन्तर आ रही है। कई विश्वविद्यालयों से स्नातक पी.एच.डी. कर रहे हैं,

साथ ही साथ M.Phile भी कर पायेंगे। ये सभी शुभ सूचक बिन्दु हैं। ये अनेक कारण हैं जिससे वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव के साहित्य को प्रिय पसन्दगी की प्राप्ति ही नहीं वरन् प्रामाणिक माना जा रहा है।''

गुरुदेव के साहित्य पठन के माध्यम से लाभान्वित होने वास्ते विदेशों से माँग आने से भक्त श्रावक शिष्य डॉ. कच्छाराजी, डॉ. सोहनराज जी तातेड़ (अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त), डायरेक्टर प्रो.बी.एल.सेठी, प्रो. प्रभातजी, प्रो. पारसमलजी, वैज्ञानिक राजमलजी, प्रो. सुशील कुमारजी, ब्र. सोहनलाल जी आदि व अन्य विद्वान भी देश-विदेशों में यथा- अमेरिका, इंगलैण्ड, श्रीलंका, नेपाल, जापान व ऑस्ट्रेलिया आदि को जाते रहे हैं और आगे भी जायेंगे। अमेरिका द्वारा Jain World Com. पर आपके साहित्य को 147 देशों में विभिन्न भाषाओं में दिखाया जा रहा है। अत्यन्त ही सुखद विश्व जगत के लाभार्थ विशिष्ट धर्मानुरागी श्रेष्ठी गुरुभक्त अमेरिका वाले श्री प्रद्युमनभाई जवेरी (इंजीनियर-भारतीय मूल) द्वारा गुरुदेव के अधिकांश साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद चल रहा है ताकि सब स्तर के लोग समझ सकें।

कई वर्षों पूर्व से पू. गुरुदेव के भक्त शिष्य होने का गौरव अनुभव करने वाले डॉ. कच्छारा जी जिन्होंने ''षट् द्रव्य की वैज्ञानिक मीमांसा'' की रचना की, उसका भी विमोचन हो गया। अतः इसका और अन्य सिद्धान्त ग्रन्थों को अंग्रेजी के माध्यम से कई श्वेताम्बर साधुओं के संघों में भी पढ़ा रहे हैं।

हे गुरुवर आचार्य भगवन्त श्रीजी! आप स्वपर हित में निरन्तर तत्पर रहते हैं। अपनी भव्य मुद्राओं व कृतियों की प्रकाशमयी किरणों से शिष्यरूपी कमलों को खिलाने महकाने वाले भास्कर-सूर्य मात्र ही नहीं है वरन् भव्य सभ्य भोले शिष्य सज्जनों के हृदय कमल पर विराजने वाले व अन्धकार को दूर करने वाले दिव्य रवि हैं। गुरुदेव आपकी महानता प्रामाणिकता, आपके साहित्य की प्रामाणिकता, आपके दिव्य अमोघ वचनों की प्रामाणिकता आपके दीर्घकालावधि से होते आ रहे सब स्तर के क्षेत्रों व व्यक्तियों के विशाल समूह में अनगिनत प्रवचनों से भी जन-जन परिचित हो गये हैं। मैं आपका शिष्य बालक आपके चरण सानिध्य से, आपके पावन भाव अभिप्राय से और अधिकाधिक

आपके अमृत अनुभव युक्त मार्ग दर्शन से प्रभावित आनन्दित प्रमुदित होता हूँ, चाहे वह डॉट सुझावरूप हो और चाहे पीठ थपथपाने रूप प्रोत्साहन हो, मैं पूर्णतया समाधानपूर्वक संतुष्ट हूँ। मेरा चिन्तन मेरा अनुभव ऐसा सक्रिय हुआ है जो अपूर्व है। सारतः इन पाँचों विशेष वर्षों में और भी विशेष शिक्षा प्रदायक आपके चरणों में सानिध्य में लगने वाले शिविर जिनमें प्रतिभा को वृद्धिंगत करने के बिन्दु प्राप्त हुए हैं। जो साध्य की साधना में जागृत प्रगतिशील रहने में सहायक होंगे; मैं लक्ष्य केन्द्रित रहकर आप जैसे गुण मेरे में प्रगट करके आपका विश्वास पात्र रहूँगा। आपके गुणस्मरण से मेरी लेखनी अभी और तत्परता से आतुर हो बढ़ रही है.....

हे आचार्य भगवन्त श्री जी! आप जो कहते हैं, करते आ रहे हैं, वही; आपकी कथनी करनी में एकता है, आपके आचार विचार तथा उच्चार में खाई नहीं है। आप वर्तमान में हुए आचार्यों चारित्र चक्रवर्ती प.पू. श्री शांतिसागरजी (दक्षिण) आचार्य श्री शांतिसागजी (छाणी)' आचार्य श्री आदिसागरजी (अंकलीकर), आचार्य श्री महावीर कीर्तिजी, आचार्य श्री देश भूषणजी, आचार्य श्री धर्मसागरजी, आचार्य श्री सन्मतिसागर जी, आचार्य श्री विद्यानन्दजी (कुन्दकुन्द भारती) आ. श्री विद्यासागरजी और दीक्षा गुरु गणाधिपति ग. आचार्य कुन्थुसागरजी गुरुदेव के गुणों व प्रशंसनीय वाक्यों को सदा प्रस्तुत करते हैं। गुरुदेव आचार्य भगवन्त श्री जी आपके पावन चरणों में मेरा-मुनि चिन्मयानंद का कोटि कोटि बार नमन।

मैं मूक-बधिर-एकान्तवासी क्यों बनता जा रहा हूँ?

(स्व-पर-विश्वकल्याण के न्यूनतम प्रयास से अधिकतम सफलता के सूत्र)

-आचार्य कनकनंदी

(1) मेरा मूक होने के कारण -

प्रथमतः शुद्ध स्वरूप से मैं सच्चिदानन्द स्वरूप अनादि-अनन्त शाश्वतिक

चैतन्य स्वरूप अमूर्तिक तत्त्व हूँ। मैं अनन्त ज्ञान, दर्शन, सुख-शान्ति-आनन्द, शक्ति का अखण्ड-निर्विकार-निष्कम्प-निःशब्द चैतन्यघन स्वरूप हूँ, अतः मेरा निज स्वरूप ही अनिर्वचनीय अनुभवगम्य है। अतः निश्चयतः मैं न बोल सकता हूँ न ही मुझे कोई सुन सकता है। मेरे अनादि प्रवाहमान अविद्या, अज्ञान, मोह, राग-द्वेषात्मक भाव-व्यवहार-कम्पन से पौद्गलिक-भौतिक कर्म सम्बन्ध से मैं विभिन्न भौतिक शरीर से आबद्ध होकर भाषा पर्याप्ति तथा तदनुकूल शारीरिक आङ्गोपाङ्ग को प्राप्त करके अनात्मरूप भाषा प्रयोग कर रहा हूँ। इस भाषा प्रयोग से जो संकल्प-विकल्प कम्पन होता है उससे पुनः कर्म बन्ध होता है। ऐसे कर्मबन्ध रहित होने के लिए भी मैं मूक (मौन, भाषा समिति, वचन गुप्ति) बनता जा रहा हूँ।

द्वितीयतः प्रायः सब कोई स्वयं को ज्ञानी, निर्दोष, श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, आदर्श मानते हैं तथा दूसरों को अज्ञानी, दोषी, निकृष्ट, नीच, अनादर्श मानकर दूसरों को अच्छा बनाने के लिए सलाह-उपदेश-निर्देश देते रहते हैं। इसके साथ-साथ सब कोई पढ़ाई, व्यापार, नौकरी, कृषि, घर-गृहस्थी के कार्य, भोग-उपभोग, फैशन-व्यसन आदि कार्य में इतने अस्त-व्यस्त-मस्त है कि किसी के पास समय ही नहीं है। ऐसी परिस्थिति में मुझे दूसरों के समय नष्ट न करके मौन रहकर ही सबके उपदेश का लाभ उठाकर स्वयं के कल्याण करने में व्यस्त-मस्त-स्वस्थ्य रहना सर्वोत्तम है। विशेष जिज्ञासु मेरी ''मौन रहो या सत्य (हित-मित-प्रिय) कहो'' कृति का अध्ययन करें।

(2) मेरा बधिर होने का कारण -

प्रथमतः पूर्वोक्त कारणों के साथ-साथ मेरा शुद्ध स्वरूप कहने-सुनने से परे है, अनुभवगम्य है। अतः मैं मौन रहकर बधिर होकर अनुभव करते का प्रयास कर रहा हूँ। द्वितीयतः प्रायः सब लोग संकीर्ण, स्वार्थपूर्ण, असत्य, मोह, माया-राग-द्वेष-अज्ञानता से युक्त, अनुभव शून्य, परनिन्दा, गर्वोक्ति, विकथा, संक्लेशकारी, रूढ़िवादी, असन्दर्भित, अनुपयुक्त, सार रहित, अहित, अप्रिय, कठोर, कर्कश, मर्मभेदी अतिकथन करते हैं जो कि मेरे लिए बाल्यकाल से ही सुनने योग्य नहीं रहा है। जब मैं बाल्यकाल से ही नहीं सुनता तो फिर अभी मेरे

जैसे स्व-पर-विश्व कल्याण के साधक जिसे बहुत कार्य करना अवशेष है वह ऐसे स्व-पर-विश्वकल्याण के लिए अनुपयुक्त अहितकारी वचन कैसे सुनेगा? अतः मैं 'बधिर' जैसी प्रवृत्ति को वृद्धि कर रहा हूँ। विशेष परिज्ञान के लिए मेरी ''तत्त्वानुचिन्तन, सर्वधर्म समता से विश्वशान्ति'' कृति का अध्ययन करें।

(3) मेरा एकान्तवासी होने का कारण-

प्रथमतः पूर्वोक्त कारणों के साथ-साथ मेरा शुद्ध स्वरूप समस्त सचित्त (समस्त जीवों के प्रति मोहासक्ति) अचित्त (समस्त भौतिक वस्तु के प्रति मोहासक्ति) सम्बन्ध से रहित एक मौलिक-शुद्ध-बुद्ध-आनन्दकन्द रूप चैतन्य तत्त्व है, द्वितीयतः प्रत्येक जीव स्व-स्वभाव-कार्य-उद्देश्य के अनुसार स्वतन्त्र रूप से परिणमन/प्रवर्तन/कार्य करने में लीन है। मेरा भाव-कर्म-उद्देश्य प्रायः दूसरों से भिन्न, विपरीत भी है। ऐसी परिस्थिति में मेरा एकान्तवास ही स्व-पर-विश्वकल्याण के लिए केवल आवश्यक या विधेय ही नहीं अपितु अनिवार्य है। इसलिए तो सत्ता-सम्पत्ति-प्रसिद्धि-प्रजा-सुन्दरता-शक्ति से युक्त शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरहनाथ आदि तीर्थंकर भी सर्वसन्यास लेकर एकान्तवनादि प्रदेशों में जाकर स्व-पर-विश्वकल्याण करने में समर्थ हो पाये। उन्होंने भी मूक (मौन), बधिर एवं एकान्तवासी होकर ही ऐसा महान् कार्य कर पाये अन्यथा सत्ता-सम्पत्ति-प्रजा आदि से युक्त होकर भी नहीं कर पाये। यथार्थ से कहें तो ऐसा करने की समर्थता ही नहीं थी। यह समर्थता तो उपर्युक्त साधना से ही प्रगट हुई भले वह समर्थता पहले भी सुप्त-गुप्त रूप में स्वयं में ही निहित थी।

भीड़ में भेड़चाल (अन्धानुकरण), भेड़िया चाल (शोषणप्रवृत्ति) होने से एकला चाल (सत्य-समता-शान्ति-सद्भाव-सद्व्यवहार की प्रवृत्ति) नहीं होती है। इसलिए तो देश-विदेशों के प्रायः हर प्रकार के महापुरुष महान् कार्य के पथ में स्वयं ही एकला ही चलते हैं भले बाद में दूसरों के लिए अनुकरणीय मार्ग बन जाता है। एकला चलने से आकर्षण-विकर्षण, राग-द्वेष, भेद-भाव, अपेक्षा, उपेक्षा-प्रतीक्षा आदि में समय-शक्ति-बुद्धि आदि का अपव्यय या दुरुपयोग नहीं होता है जिससे महान् कार्य करने में सफलता शीघ्रता से, सहजता से

प्राप्त होती है। यह है स्व-पर-विश्वकल्याण के न्यूनतम प्रयास से अधिकतम सफलता के सूत्र। विशेष परिज्ञान के लिए मेरी "एकला चलो रे" कृति तथा "अपेक्षा-उपेक्षा-प्रतीक्षा से रहित विकास" आलेख का अध्ययन करें।

संक्षिप्ततः कहें तो मेरा सर्वोच्च परम लक्ष्य है स्व-आध्यात्मिक विकास के माध्यम से स्वयं को पूर्णतः सत्य-समता-शान्तिमय बनाना है। इसके साथ-साथ आनुसङ्गिक रूप से विश्व भी ऐसा बने ऐसी पवित्र भावना है। परन्तु देश-विदेशों के प्राचीन से आधुनिक साहित्य-लेख-समाचार के साथ-साथ मेरा दीर्घकालीन लाखों-करोड़ों व्यक्तियों का अनुभव है कि प्रायः अधिकांश व्यक्तियों के भाव-उद्देश्य-व्यवहार उपर्युक्त मेरे भाव-उद्देश्य-व्यवहार से प्रायः विपरीत है भले वे किसी भी जाति-धर्म-क्षेत्र-वय के क्यों न हो। इतना ही नहीं लौकिक या धार्मिक शिक्षा-दीक्षादि सहित या रहित प्रायः अधिकांश व्यक्तियों से भी मेरा उद्देश्य आदि भिन्न या विपरीत है। अतः मेरा परम कर्त्तव्य है-मेरे उद्देश्यादि को प्राप्त करने के लिए मूक-बधिर-एकान्तवासी होकर सतत प्रबल पुरुषार्थ करना है। इसके बिना और कोई "न्यूनतम प्रयास से अधिकतम सफलता प्राप्त करने के सूत्र" सम्भवतः संभव नहीं है। (अतिशय क्षेत्र सीपुर 2010)

छोटी सी उमर में बन गये वैरागी

तर्ज -(छोटी सी उमर में.....)

छोटी सी उमर में बन गये वैरागी
गंगाधर चले आतम की ओर।
माता अति दुख से व्याकुल
सह न सके जो वियोग रे।। छोटी .....
आँचल में मैंने तुमको है पाला, तू ही तो मेरा नन्हा बाला।
तुम बिन जीना कठिन हमारा, न जाओ हमारी आँखों का तारा।।
जाओ न ललन प्यारे हमको छोड़। छोटी .....

बाग के पौधों को अब तू भुलाये,
पौधे याद में तेरी मुरझाये
सजी हाथ बगिया करके सूनी
अनजान डगर अब जायेगा
रे लाला कठिन जगत का झमेला। छोटी .....
माता रुकमणी अति घबराये, भ्रात भागिनि सब आँसु बहाये
पितु बिन तुझको कैसे पाऊँ , न सुनते चले रिश्ते तोड़ रे छोटी .....

रचनाकार - आ. क्षमाश्री माताजी

गुरु कनकनंदी के रंग में

तर्ज -(गुरु तमारा संगमा.....)

कनकनंदी के रंग में जो रंगा जायेगा
सुख शांति पा जाये-2
गुरुवर की बस चाहना प्रभु बनने की, कामना
जीवन है महान-2
बालपन से महा! गुरुवर गुण भण्डार है
सत्य जिज्ञासु, क्रांतिकारी विचार है।। क्रांतिकारी.....
प्राणी है दुखी यहाँ, अन्याय क्यों होता यहाँ
प्रश्न मन में उठ जाये। प्रश्न.....कनकनंदी.....
सब बाल खेलते पर इनको न खेल भाये।
रुक्मणी माता इन्हें देख-देख घबराये। देख.....
बाला तू मेरा तू क्यों नहीं है खेलता
सबसे न मिलने जाये। सबसे .....कनकनंदी.....
गुरुवर.....

माता को समझा कहे गंगाधर निज वचन।
वैज्ञानिक नेता बनूँ या बनूँ संत जन।। या.....
माता कहती न बेटा तू कहीं न जाये
माता मोह न कर तेरा बेटा मोक्ष को जाये। तेरा ..... कनकनंदी ...

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

वैश्विक विचारक प.पू. आचार्य रत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का परिचय

तर्ज -(फूल तुम्हें.....)

धार लिया जिसने मुनि बाना करने निज कल्याण है-2
आओ परिचय पायें उनका क्या उनकी पहचान है। धार.....
प्रथम आशीष विमलसागर का व विजयामति माँ से पाया
गंगाधर से क्षुल्लक पद आचार्य कुन्थुसागर ने दिया
गहरा चिंतन मनन अध्ययन का शुभ लक्ष्य महान है। धार.....
पुण्य उदय से क्षुल्लक जी ने मुनि बनने का विचार किया।
सूरी कुंथुसागर गुरुवर ने भावों को साकार किया।।
भरतसागर व सभी गुरुओं ने कहा ये क्षुल्लक जी महान हैं। धार.....
श्रवणबेलगोला कर्नाटक धन्य धरा मनहारी थी।
सहस्राब्दि अभिषेक महोत्सव पर भीड़ अति भारी थी।।
दो सौ संत लाखों जनता में शुभ दीक्षा का अभियान था। धार.....
कनकनंदी जी नाम प्राप्तकर कनक सम सम्मान मिला।
गम्भीर व्यक्तित्व गहन साधना का अद्भुत एक सुमन खिला।।
पांच फरवरी उन्नीस सौ इक्यासी बन गये मुनियों की शान है। धार.....
दीक्षा लेकर सत्य साम्यमय आतम ध्यान लगाया है।

एकांतवास मौन में रहकर सबका रहस्य पाया है।
देश, विदेश के सब विषयों का कर लिया ज्ञान है। धार.....
गुरुवर की प्रतिभाओं ने गुरुओं का वात्सल्य पाया था
ज्ञानी, ध्यानी देखा गुरु ने उपाध्याय बनाया था
हासन में उन्नीस सौ बयासी पाया पद महान है। धार.....
उन्नीस सौ पच्चासी समनेवाड़ी सूरी देश भूषण जी आये थे
कनकनंदी की धवला विवेचना देख अति हर्षाये थे
विशाल उत्सव में सिद्धान्त चक्री (चक्रवर्ती) पद प्रदान किया। धार.....
सतत् ज्ञान की लगन ने अभीक्ष्ण ज्ञानी पद दिलवाया
उन्नीस सौ सत्तासी आरा में ऐलाचार्य पदवी को पाया
रोहतक उन्नीस सौ इक्यानवे में ज्ञान विज्ञान दिवाकर की शान है। धार.....
उन्नीस सौ नब्बे दिल्ली शहर में आनंद सागर मुनि मिले
पंचकल्याण के उत्सव में गुरु विश्व धर्म प्रभाकर पदवी लहे
भारत को विश्व गुरु बनाने का जिनका अभियान है। धार.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

क्षुल्लक से कनकनंदी मुनि बने

तर्ज -(नीले गगन के तले.....)

नीले गगन के तले, बाहुबली जी खड़े।
श्रवण बेलगोल, कनकनंदी क्षुल्लक से मुनि बने।।
लाखों जनता, ढ़ीशत साधू, संघों को आनंद मिले।
केश घुंघराले, काले-काले केंशलोच करें।।
नयन सुलोचन, कमल विमोचन, महाव्रतों को वरें।
सौम्य मुद्रा, शांति मूरत, सबका मन जो हरे।।

आचार्य श्री कुंथुसागर, मन में मोद करें।

तुमसा शिष्य गुरु ने पाया, विश्व में नाम करें।।

सूरीगण जो वहाँ उपस्थित, सबका आशीष मिलें।

लघुवय में ग्रंथ करे विवेचन, सबको विस्मय लगे।।

जैन धर्म की शान बनकर, धर्म प्रभावना करें।

स्वाभिमान मय चाल निराली, दृढ़ वैराग्य धरें।।

गहन चिंतन, गम्भीर व्यक्तित्व आनन पर झलकें।

ब्रह्म बिहारी, विश्व विचारी आतम ध्यान करें।।

इक पल इक पल व्यर्थ न जाये हर पल ज्ञान करें।

ऐसे गुरु ही निज संयम से मुक्ति रमा को वरें।।

'क्षमा' गुरु की भक्ति करके भवोदधि पार करे।

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

उपाध्याय कनकनंदी-बने आचार्य

तर्ज -(मैं तो भूल.....)

कनकनंदी बने आचार्य, मुक्ति को ब्याहन चले।

उदयपुर में उत्सव था महान, हजारों लोग जुड़े।। कनकनंदी.....

ज्ञानी और ध्यानी, गुरुवर हमारे

सूरी अभिनंदन सागर पधारे हो SSS

आये पद्मनंदी-2 महाराज। मुक्ति.....

आचार्य संस्कार विधि करायें।

गुरु कुन्थुसागर की आज्ञा निभायें-हो SSS

सूरी रत्न-2 पदवी पाये महान। मुक्ति.....

आचार्य बनकर, दीक्षा शिक्षा भी देते

सूरी संघो को ज्ञानी बनाते। हो SSS

जिससे बढ़ती है-2 गुरुवर की शान। मुक्ति.....

सोनगिरि में विमल, कुंथु, सूरी मिले थे

सत्तर साधू कनकनंदी से पढ़े थे-हो SSS

संत पाये-2 ज्ञान भण्डार। मुक्ति.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

आचार्य श्री के अध्ययन अध्यापन कृतित्व

तर्ज -(संघ सहित श्री कुंदकुंद गुरु.....)

आचार्य कनकनंदी गुरुवर ने लिखे ग्रन्थ हैं सविस्तार

किन गुरुओं से शिक्षा पाई किनकी प्रेरणा रही मंझार

कुंथुसागर, विजयमति, विमलसागर थे महागुरुराज

भरतसागर, सूरी विद्यानंदि से पाया श्रुत आधार

पंडित शेखर, चंद, परमानंद प्रभाकर आदि से ले कुछ ज्ञान

बढ़ाया निज अभ्यास से गुरु ने जैसे बीज से वृक्ष महान

आध्यात्मिक विषय, आलौकिक गणित व अध्यात्म मनोविज्ञान

शिक्षा, धार्मिक, सामाजिक, दार्शनिक आदि विषय महान

इन विषयों में शोधपूर्ण दो सौ ग्रंथ हैं विद्यमान

ग्रंथ रचे पर बिन याचन के तजे नहीं निज पद स्वाभिमान

विश्व विद्यालय में भी स्थापित शतआलय इनकी पहचान

इनको पढ़कर शोधार्थी भी पा जाते शोधमय ज्ञान

प्रोफेसर, डाक्टर, कुलपति, वैज्ञानिक भी लेते हैं ज्ञान

संत भी जिनसे स्वाध्याय कर करते आतम का कल्याण

विदेशों में भी शिष्य गुरु के पहुँचे लेकर ये अभियान

अमेरिका, लंदन, मेलबार्न, नेपाल, श्रीलंका व जापान
'क्षमा' शरण में अर्जी करती है गुरु देना मुझको ज्ञान
जब तक मुक्ति मिले न मुझको मिलते रहें श्री चरण महान्

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

आचार्य श्री से शिक्षा पायें शिष्य सारे

तर्ज -(कितना प्यारा तेरा.....)

श्री गुरुवर के द्वारे आये, कनकनंदी से शिक्षा पाये।
ज्ञान निधि पा जायें, गुरु शिष्य तुम्हारे सब शीश झुकायें।। गुरु.....
पर संघो के मुनि गुरु को भी आप पढ़ाये
श्रमण बनते ही गोमटेश में आगम रहस्य बतायें
देख आपकी प्रज्ञा दो सौ संत खुश हो जाये।। गुरु.....
मुनि बनकर उस ही वर्ष में पाठक पदवी पायें।
धवला जैसे बड़े ग्रंथ मुनि त्यागी को पढ़ायें
श्वेताम्बर, दिगम्बर, जैन, अजैन भी शिक्षा पायें।। गुरु.....
ज्ञान, विज्ञान के धनी ऋषियों के हो ईश
सूरी पद्मनंदी ने ली प्रथम सीख
ज्ञान की ज्योति तुमसे पायें, देवनंदी हर्षायें।। गुरु.....
विद्यानंदि, करूणानंदी पंचविशंति मुनिराज
पन्द्रह माताजी पढ़े, श्री गुरुवर के पास।। गुरु.....
स्वसंघ में सब शिक्षा पाये गुरु पास तुम्हारे।। गुरु.....
सोनागिर शुभ तीर्थ में विमल सूरी का संघ
सत्तर, अस्सी शिक्षा लेते उपाध्याय मुनिवृंद
विरागसागर मुनिवर आये वो भी शिक्षा पाये।। गुरु.....

हस्तिनापुर पँहुचे गुरु, गुरु कुंथु सिंधु के संग
ज्ञानमति माताजी चालीस त्यागी वृंद
समयसार का शिविर लगाये शत विद्वान वहाँ पर आयें।। गुरु.....
उदयपुर नगर महा गुरुवर को अति भाये
सूरी अभिनंदन ऋषि व पद्मनन्दी जी आये
साठ श्रमण व अन्य त्यागी ज्ञान रश्मियाँ पायें।। गुरु.....
ईडर में विशुद्धमति ससंघ लाभ उठाये,
गुरुवर संगोष्ठि शिविर आदि कई लगायें।
देश-विदेश के शिष्य लाखों शिक्षा पायें। गुरु.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

गुरु कनकनंदी साम्यव्रतधारी

तर्ज -(संदेशे आते हैं.....)

गुरुवर ज्ञानी हो, दृढ़ वैरागी हो।
गुरु कनकनंदी, साम्यव्रत धारी हो।।
कुंथु के तारे हो, सभी से न्यारे हो, गुरुओं के प्यारे हो।
ऋषियों के तारण हारे हो। हो SSS
अनुभव धारी हैं, समता पुजारी हैं।
निष्पृहवृत्ति भी सभी से न्यारी है।
विश्वविद्यालयों में साहित्य तुम्हारा है।
ग्रंथों की रचना में लेख मनहारा है।।
तुम्हारी मूरत से अनुभव झलकता है
तपस्या से आनन अलग चमकता है
लगन ऐसी लागी, मन में भक्ति जागी, बनूँ मैं वैरागी

तुम्हारे गुण गाकर जनता हर्षे है। हो SSS
विश्व विज्ञानी हैं, बड़े ही ध्यानी हैं।
बहु भाषाओं में लेखन प्रणाली है।।
अमेरिका, जापान में शिक्षण जिनका चले।
भूटान, श्रीलंका में धार्मिक प्रचार फैले।।
आपके साहित्य ये विदेशों में जाते हैं।
उनको पढ़कर जन ज्ञान बढ़ाते हैं।।
लगन तुम्हें लागी, प्रभु से मिलना है, साधना जंगल में ही तुमको करना है।
तुम्हारे चरणों में शत्-शत् वन्दन है। हो SSS.....
ऐ भटकते हुये वैरागी चलो, ले चलूँ मैं तुम्हें उन चरणों में चलो।
उनके पास चले, उनकी बात सुने, उनके चरणों की छाँव तले।।
वो बैठे गुरु जहाँ-जहाँ, उनकी सभा है वहाँ-वहाँ।
रूक जावे वो चरण जहाँ, ज्ञान गंगा बहती है वहाँ।।
जो उनकी शरणा में आयेगा, ज्ञान के मोती पा जायेगा।
है जग में पावन नाम जिनका, अनुभव हरे दुःख मन का।
अनुभव हरे दुःख मन का, है जग पावन नाम जिनका।।
सूरिवर हैं सबके, ऋषिवर हैं सबके
गुरुवर कनकनंदी यतिवर हम सबके
गुरुवर शरणा दो, चरणों की रज दे दो
'क्षमा' का भव से अब उद्धार करो। हो SSS

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

वन्द्य चरण जिनके.....

आचार्य कनकनंदी की विशेषता

तर्ज -(ज्योति कलश छलके.....)

वन्द्य चरण जिनके.....2
जिनके सन्मुख विश्व हुआ है, नतमस्तक मन से.....2
वन्द्य चरण जिनके.....2
अध्यात्म की ज्योति जलाएँ, धर्म-दर्श-विज्ञान मिलाएँ
घट-घट में सबके.....2 वन्द्य चरण जिनके.....

हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, दिक्श्वेताम्बर जैनी भाई
आकर शोध करें.....2 वन्द्य चरण जिनके.....

देश-विदेश में जाकर प्रतिनिधि, गुरुवर का अभियान प्रचारें
भावे तन-मन से .....2 वन्द्य चरण जिनके.....2

वैश्विक दृष्टि सब अपनाएँ, ऐसी भावना है गुरुवर की
'सुविज्ञ' कहे मन से.....2 वन्द्य चरण जिनके

प्रस्तुति-मुनि सुविज्ञसागर

आचार्य श्री का अध्ययन निराला

तर्ज -(जहाँ डाल-डाल पर.....)

गुरु कनकनंदी जी बहा रहे हैं ज्ञान की अद्भूत धारा
गुरु देते ज्ञान उजाला-2
हर विषय कसौटी पर कसते हैं निज अनुभव के द्वारा
गुरु देते ज्ञान उजाला-2

चौदह भाषा के ज्ञाता बनकर ज्ञान की ज्योति जलाये। ज्ञान.....
व्याकरण, गणित, विज्ञान धरम से नव चिंतन बतलाये।। नव.....
इतिहास, कथा, साहित्य पढ़ाकर बनाते भावों को आला। देते.....
स्वप्न, शकुन, सामुद्र शास्त्र का भी जो ज्ञान बतायें। भी.....
संविधान ज्ञान व सभी शिक्षा के न्यारे सुमन खिलायें।। न्यारे.....
शोधपूर्ण समीक्षाओं से जिनने है सबको सम्हाला। देते.....
विभिन्न पत्र पत्रिकाओं व वैज्ञानिक चैनल अध्ययन। वैज्ञानिक.....
हो हिन्दु, वेद, बुध, ईसाई, दिगम्बर या श्वेताम्बर।। दिगम्बर.....
सबके ग्रन्थों का अध्ययन करने वाला है संत निराला। देते.....
आयुर्वेद, स्वास्थ्य विषयक सम्पूर्ण विषय अवलोकन। सम्पूर्ण.....
देश-विदेश के दर्शन न्याय आदि का भी अध्ययन।। आदि.....
भ्रष्टाचारी, अन्याय, अनीति को जो हटाने वाला। देते.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

शत-शत वन्दन मेरे गुरु का

तर्ज -(ऐ मेरे वतन के लोगों.....)

जिन दर्शन जिन वंदन का दुनिया में बजता डंका।
गुण गाऊँ में कनकनंदी जी शत-शत वंदन मेरे गुरु का।।
छत्तीस गुणों के धारी, नग्न रूप मनहारी।
अरु करुणा निधि के धारी, अभिवदंन करूँ गुरु का।।
जिनके चरणों की रज से, मिथ्यात्व ये मिट सकता है। गुण.....
बालपन में ब्रह्मचर्य धारा, एकांतवास अपनाया।
अरु नाना विधाओं का जिसने, आध्यात्मिक ज्ञान प्रगटाया।।
इनकी मृदु वाणी सुनके हर प्राणी सुधर सकता है।

बालक के जैसा सरल, माता के जैसा कोमल।
स्वाभिमानी हृदय है, पवित्र भावना निर्मल।।
इनका आश्रय पाकर के जीवन ये बदल सकता है। गुण.....

रचनाकार-विधि

"कनकनंदी रवि"

तर्ज -(सूरज की गर्मी से.....)

हमने दरश जबसे पाया गुरुवर पाया अमन सुख पाया।
वात्सल्य की शीतल छाया में हमने ज्ञानमृत पाया।। गुरुदेव-4
मिथ्या अन्धेरे में भटका ये मन, दिखता नहीं था उजाला।
"कनकनंदी रवि" की किरणों ने , हमारा अन्तस सम्हाला।। हमारा.....
डगमगाते कदम थे हमारे, मिला गुरु का साया। वात्सल्य.....
सत्यग्राही दृष्टि जिनकी, सत्यामृत है पिलाती।
समता सखी जिनके संग रहकर, आत्मशांति दिलाती।। आत्मशांति.....
घनघोर भ्रष्टाचारी की छाई, बदली से मन घबराया। वात्सल्य.....
देश, विदेश के जैनी-अजैनी, शिष्यों को जो पढ़ाये।
रहस्यमयी विषयों को बताकर, विदेशों में पहुंचाये।। विदेशों.....
डॉक्टर, प्रोफेसर, धनपति, कुलपति सबने लाभ। वात्सल्य.....
दृढ़ता से बढ़ते कदम गुरुवर के, अभिमान को दूर भगाये।
स्वाभिमान अपना जगाकर, सद्गुण आगे बढ़ाये।। सद्गुण.....
सद्गुण का अनुकरण करने, शिष्यों ने कदम बढ़ाया। वात्सल्य.....
नहीं किसी से धन की इच्छा, न दीनता की भिक्षा।
न ही किसी से राग न द्वेष, ना ही अनैतिक शिक्षा।। ना ही.....
अन्याय, अनीति का खण्डन करके, सत्पथ पर कदम बढ़ाया।
वात्सल्य.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

मोक्ष की मंजिल पाना है तो

वैश्विक विचारक प.पू. आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव

तर्ज -(मोक्ष की मंजिल.....)

मोक्ष की मंजिल पाना है तो, सत्य डगर पे चल।
कनकनंदी जी गुरु बताते, शाश्वत सत्य अटल।। जय...8 जय बोलो हर पल 2
जैन धर्म है व्यापक, शाश्वत सार्वभौम कहलाये।
जीव स्वयं सुख-दुःख का कर्त्ता, स्वयं ही मुक्ति पाये।।
इस ब्रह्माण्ड में अनंतानंत सिद्ध प्रभु हैं निकल
द्रव्य, क्षेत्र अरु काल, भाव से पुरुषार्थ जगाता चल।। जय जय बोलो हर पल 2
जैन धर्म के अधिकारी सब ही प्राणी कहलाते।
पशु, पक्षी व देव, नारकी भी धरम अपनाते।।
अधर्म से नर नरक में जाते, धर्म से पाते स्वर्ग में महल
स्वर्ग मोक्ष उनको मिलता जो करे भाव निर्मल।।जय जय बोलो हर पल 2
जैन धर्म में करोड़ों अरबों सूर्य चन्द्र बतलाये।
भौतिक कर्म परमाणु का सूक्ष्म विज्ञान समझाये।।
प्रत्येक हृदय का अस्तित्व अलग है मौलिक अविचल
अनेकांत व स्याद्वाद सिद्धांत यहाँ निश्चल।। जय जय बोलो हर पल 2
बाह्य आडम्बर क्रिया को ही धर्म नहीं स्वीकारे।
भाव शुद्धता बिन जो भी है उसको परिहारे।।
असत से सत चेतन अचेतन की उत्पत्ति नहीं है अविचल
स्वस्वरूप दिलाने वाला ये ही है मंजिल।। जय जय बोलो हर पल 2

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

गुरु सिखाते हैं, गुरु पढ़ाते हैं

तर्ज -(सुख आते हैं.....)

गुरु सिखाते हैं, गुरु पढ़ाते हैं।
कनकनंदी गुरुवर से, सब ज्ञान पाते हैं।। गुरु.....
आते जाते संत इन्हें याद करते हैं
गुरु का नाम करते हैं। गुरु.....
छोटी सी उमर में गुरु आज्ञा पाली
सारे संघ की बागडोर संभाली
अनुशासन करते हुये भी निज कर्त्तव्य करते हैं
समता में रहते हैं। गुरु का.....
स्वसंघ परसंघ के सूरीगण को पढ़ाते
आर्यिका माता त्यागी वृंद भी आते
आते-जाते संत गुरु गुण याद करते हैं। गुरु का नाम.....गुरु.....
गुरु ने ज्ञान भण्डारा खोला है।
इनके जीवन में संतों का मेला है।
चाहे कोई आये चाहे जाये गुरु व्यस्त रहते हैं।
नित अनुभव करते हैं। गुरु.....
गुरुवर से सीखो कैसे जीना है।
इक-इक क्षण भी अनमोल नगीना है
संयममय जीवन में नहीं ये दोष लगाते हैं। गुरु.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

वैश्विक विचारक प.पू. आचार्य रत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का व्यक्तित्व

तर्ज -(जनम जनम का साथ.....)

कनकनंदी गुरुवर जी खोले ज्ञान पिटारा। हो ज्ञान पिटारा
जो भी शरणा आये पाये ज्ञान भण्डारा।। कनकनंदी.....

निष्पृहवृत्तिधारी भव्यों के हितकारी।
सच्ची राह बताते, हो अनुभव भण्डारी।।

सही दिशा की सही दशा में देना ज्ञान भण्डारा। कनकनंदी.....

सर्वजीव हितकारी सर्वजीव सुखकारी।
गणितमयी विज्ञानी जैनधर्म उपकारी।।

जो विभाव भावों को जीते जैनी वो कहलाता। कनकनंदी.....

जो समता को धारे श्रम से कर्मों को मारे।
श्रमण वही कहलाते जाते मुक्तिद्वारे।।

श्रद्धा, विवेक, क्रियावान ही श्रावक है गुणवाला। कनकनंदी.....

मुक्तिपथ को पंथवाद में बहुत अधिक उलझाया।
सरल, सहज भावों को हमने आज भुलाया।।

व्यापक, उदारभाव बनाकर पाये मुक्तिद्वारा। कनकनंदी.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

सूरी कनकनंदी का गुणगान

तर्ज -(दिल जाने जिगर.....)

सूरी कनकनंदी का गुणगान करो रे
आशीष लो गुरु से कल्याण करो रे-आशीष.....

गुरुवर हमारे हैं जग से निराले,
पढ़ते-पढ़ाते और ज्ञानी बनाते
अज्ञान नशायें ज्ञानी बनायें-2
इनके चरणों में ज्ञानी बनो रे। कल्याण.....

साक्षरी राक्षस इनको न भाये
कोरी शिक्षा भ्रष्टाचार मचाये
प्रदुषण, हिंसा का ताण्डव कराये-2
इनसे अनुशासित, संस्कार गहो रे। कल्याण.....

सभी विषयों का करते हैं ज्ञान
चर्चा करे देश-विदेशी विज्ञान
गुरुवर हैं करते अध्ययन निरन्तर-2
समय का उपयोग इनके जैसा करो रे। कल्याण.....

कैसे है सोना, कैसे है उठना
कैसे है खाना, कैसे है पीना
सम्यक जीवन के आदर्श बताते -2
निरोगी काया का लाभ वरो रे। कल्याण.....

शिविरों के माध्यम से सब कुछ सिखाते
योगासन ध्यान व प्राणायाम कराते
सुखी जीवन के सूत्र समझाते
सुख शांति जीवन में प्राप्त करो रे। कल्याण.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

कर जीवन समर्पित गुरु के द्वारे

तर्ज -(जहाँ ले चलोगे.....)

जहाँ गुरु रहेंगें, वहीं हम रहेंगें।
जो स्वामी कहेंगें, वही हम करेंगें।। जहाँ.....
कर जीवन समर्पित गुरु के द्वारे
गुरु शिष्य का जीवन संवारे
जैसे माली से -2 सुमन संवरते।। जहाँ.....
न कोई इच्छा न कोई उपेक्षा
अध्यात्म की दे दो शिक्षा
जो गुरु कहते शिष्य वो करते।। जहाँ.....
भव-भव में कर्मों ने हमको घुमाया
गुरु बिन सम्यकदर्शन न पाया
गुरु के चरण में सब पाप कटते।। जहाँ.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

आचार्य कनकनंदी का सत्संग

तर्ज -(दिल तो पागल है.....)

पहली-पहली बार ये अवसर आया है।
कनकनंदी का सत्संग पाया है।। हम तो झूमेगे, नाचे गायेंगे
पुण्य कमायेंगे, मोक्ष जायेंगे

ज्ञानी, ध्यानी गुरु हमारे हैं।
मौन में रहते जग से न्यारे हैं।।
लिखना, पढ़ना ही जिन्हें भाया है।
विद्यार्थी रहने का व्रत अपनाया है।। हम तो झूमेगे, नाचे गायेंगे

नित समता में रहते अनुशासन भी करते
सत्य व्रत पालें सबको खुश रखते
हैं बालब्रह्मचारी मुक्ति को पाना है
वैश्विक बनकर एकांतवास सुहाया है।। हम तो झूमेगे, नाच गायेंगे
हित, मित, प्रिय वचन व्यवहारी हैं।
अन्याय भ्रष्टचारी के परिहारी हैं।।
गुरुवर ने जीवन से अनुभव पाया है।
अनुभव से जीवन महान् बनाया है।। हम तो झूमेगे, नाच गायेंगे
निष्पृहवृत्ति पर बहु ग्रन्थ जो लिखते
याचना न करते न बोली करवाते,
जो इनके पास आते सब कुछ पा जाते
गुरुवर के गुणों की अद्भुत माया है। हम तो झूमेगे, नाच गायेंगे

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

कनकनंदी गुरु की शरणा आना

तर्ज -(आदमी जिन्दगी और ये आत्मा.....)

कनकनंदी गुरु की शरणा आना।
उनसे ज्ञान के मोती तू पा लेना।।
ये धर्म को सिखाये वो है ऋषीवरा-वो है ऋषीवरा ये धर्म .....
सत्य के पथ का मार्ग बताते गुरु,
अहिंसा की परिभाषा सिखाते गुरु
आध्यात्मिक ज्ञान दिलाते गुरु
पतित से पावन बनो ये बताते गुरु
आओ - आओ अनुभव से शिक्षा पा लेना -उनसे ..... ये धर्म .....
कमियों से भी शिक्षा लेते गुरु,

संस्कृति की शिक्षा सिखाते गुरु
मुश्किलों में धैर्य बढ़ाते गुरु,
एकांत का सेवन कराते गुरु
सद्वृत्तियों को तू धारण करना - उनसे.....ये धर्म .....
स्वस्वरूप का भान कराते गुरु,
हेय, उपादेय का ज्ञान कराते गुरु
निज चैतन्य भावना भाते गुरु
पंथवाद की उलझन मिटाते गुरु
साम्यवाद की भावना को जगाना - उनसे..... ये धर्म .....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

कनकनंदी गुरु को वंदन

तर्ज -(हे गुरुवर शत-शत वन्दन.....)

कनकनंदी गुरु को वंदन
चरणों में शत-शत वन्दन -4
हे अध्यातम अभिलाषी,
भक्तजनों के विश्वासी -2
बड़े भाग्य से भक्तजनों को-2
आप मिले हैं अविकारी। कनकनंदी.....
हे महान् अनुभवधारी,
विश्व विज्ञानी हितकारी-2
परम तत्व निज अनुभूति का - 2
करते क्षण-क्षण गुरु चिंतन। कनकनंदी.....
हैं विशाल जग ज्ञानाधार,
विश्व पा रहा ज्ञान का सार-2
गुरु का ज्ञान शिष्यों ने पाया-2

पाकर करते हैं वन्दन। कनकनंदी.....
हे अभिनव अनुपम योगी,
तुमसे सारी कमियाँ हारी-2
कई-कई भव्य आगे बढ़ते हैं
कर न्योछावर तन, मन, धन। कनकनंदी.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

"आचार्य श्री का व्यतित्त्व

तर्ज -(कोयल कूके हूक.....)

बादल झूमें सावन आयें, कनकनंदी गुरु के गुण गायें।
भौतिकता से बाहर आजा शिक्षा पाने रे.....।।
सच्चे सुख की राह बताने गुरु बुलाये रे।
हैं अद्भुत गुरुवर ज्ञानी, वैश्विक विचार के धारी।
वीतरागी, निग्रन्थ दिगम्बर, छोड़ दिया सारा आडम्बर।
वैज्ञानिक हो या प्रोफेसर, शिक्षक हो या कोई अफसर।।
अनुभव इनका पाने इनको गुरु बनाये रे। सच्चे सुख की .....
गुरुवर करूणा की मूरत हैं, हमें इनकी आज जरूरत है।
क्रांतिकारी जग उपकारी, नव-नव चिंतन के व्यापारी।
निष्प्रभ को प्रभावन करते, हतप्रभ हृदयों को भी भरते।।
विश्व भी जिनकी ज्ञान रश्मि का लाभ उठायें रे। सच्चे सुख की .....
नानाभाषा के हैं ज्ञाता, नाना धरमों के अध्येता।
लोहा भी कंचन बन जाता, जो इनकी शरणा में आता।
समर्पण हमको भी करना है, अपनी गागर को भरना है।
गुरु ज्ञान की गंगा में सबको नहलायें रे। सच्चे सुख की .....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

"न सुनु न किसी को सुनाऊँ"

भाव एवं शब्द संकलन - प.पू. आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

तर्ज -(अपने पिया की.....)

मैं न सुनु न किसी को सुनाऊँ।
अपने आतम का मैं तो ध्यान लगाऊँ।।
सबकी सुनते-सुनते मैंने चतुर्गति में भ्रमण किया।
कभी न आतम को अपनाया इसी कारण दुःखी हुआ।।
स्वारथ मय जग से प्रीत हटाऊँ। मैं न सुनु.....।
सुनने और सुनाने में ही समय मेरा बरबाद हुआ।
कलहकारी वचनों से जग में वाद विवाद हुआ।।
अब कान बंद करके ध्यान लगाऊँ। मैं न सुनु.....।
संकीर्ण स्वार्थमय यह जग सारा माया मोह का जाल है।
राग द्वेष अज्ञान भरा पर निन्दा घमंड विशाल है।।
बचपन से घबराऊँ मैं तो स्व को बचाऊँ। मैं न सुनु.....।
कनकनंदी वहाँ कान लगायें जो आध्यात्म की बात सुनाए।
समता, शांति को अपनाये सत्य, तथ्य की खोज लगाए।।
अपने कानों का सदुपयोग लगाऊँ। मैं न सुनु.....।

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

"एकांतवास क्यों"

भाव एवं शब्द संकलन - प.पू. आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

तर्ज -(मैं दर्शन ज्ञान.....)

आतम रस में रम जाने को एकांतवास अपनाया है।
निज आतम अनुभव पाने अब इस जग से मोह हटाया है।।

है शुद्ध बुद्ध अविकार मयी है मम स्वरूप आनंदमयी।
निज चैतन्य जगाने को निज का ही ध्यान लगाया है। निज.....
तीर्थंकर चक्री कामदेव होते हैं सब वैभवधारी
ये भी बन जाते वनवासी ये बोध इन्हीं से पाया है।। निज.....
महलों में रहने वालों को सुख शांति कभी न मिल पायी।
इस हेतु आत्म शांति पाने जंगल का लक्ष्य बनाया है।। निज.....
मैं हूँ अनन्त शक्ति धारी किन्तु कर्मों से सुप्त-गुप्त।
सोई शक्ति को जगाने हित एकांतवास अपनाया है।। निज.....
चल रे चेतन तूँ अपने संग इस जग में नहीं भटकना है।
मिथ्या मोह के बंधन से पल-पल अपने को बचाया है।। निज.....
है कनकनंदी का भाव यही बस मोक्ष परम पद पाना है।
एकांतवासी बनकर ही जीवन को सुखी बनाया है।

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

आचार्य सूरीवर कनकनंदी ऋषिवर

तर्ज -(हे शारदे माँ.....)

आचार्य सूरीवर, कनकनंदी ऋषीवर
अज्ञान को हर, ज्ञान का दो वर-2
करूँ नित्य पूजा, करूँ नित्य भक्ति
तुम्हारे शरण में बढ़े ज्ञान भक्ति
वैज्ञानिक प्रवर्तक हो संयम के योगी
तुम्हीं से तो मिलती अध्यात्म की ज्योति।। अध्यात्म....आचार्य .....
गुरु तेरी वाणी है माता हमारी
दे आगम की शिक्षा करे निर्विकारी,
बिन माँझी के नाव गुरुवर चले ना

तिरादो गुरुवर वा नाव हमारी। वो.....आचार्य .....
तेरी चरण रज को माथे लगाऊँ,
अध्यात्म वैज्ञानिक धर्म को पाऊँ
जयवंत रहें सदा मेरे गुरुवर
तेरी प्रेरणा से मुक्ति को पाऊँ। मुक्ति.....आचार्य .....

रचनाकार-विधि

कनकनंदी का हृदय कहे

तर्ज -(है यही समय की पुकार.....)

कनकनंदी का हृदय कहे, भारत को आज बचा लो।
विश्व की रक्षा हेतु तुम सब, मिलके कदम बढ़ा लो।। जय माँ भारती.....
जहाँ अत्याचार पापाचारी प्रतिदिन बढ़ती जाती है। प्रतिदिन.....
न एकता न साम्यवाद ये भारत की बरबादी है।। ये भारत.....
हिंसा भ्रष्टाचार मिटाकर अनेकान्त अपना लो।। विश्व....जय माँ भारती....
जहाँ गांधी, सुभाष, महात्माओं ने विश्व हेतु बलिदान दिया। विश्व.....
भारत माँ को बचाने हेतु मारकाट को सहन किया। मारकाट.....
जरा बढ़ो, सुनो आवाज दर्द की सतपथ को अपना लो।विश्व....जय माँ भारती....
जहाँ पशुओं की हत्या करते वस्तु में मिलावट करते हैं। वस्तु.....
हम कैसे हैं अहिंसक जो इन सबका समर्थन करते हैं।। इन.....
है कनकनंदी का भाव यही तुम फिर से क्रांति कर दो। विश्व....जय माँ भारती....

रचनाकार-विधि

कनकनंदी गुरु गुणधारी

तर्ज -(पंछी बनूं.....)

शांति पाऊँ, समता वरूँ, गुरु चरण में।

आत्मशांति प्राप्त करूँ, गुरु शरण में।। आत्मशांति.....
कनकनंदी गुरु गुणधारी, इनका चिंतन जगत दुखहारी
हम इनको समझे समझाये, इनकी वाणी का लाभ उठाये
पाप हरूँ, ताप हरूँ, आज चरण में। आत्मशांति.....
मैंने ज्ञान के सूत्र हैं पाये, मेरे हृदय को जो भाये
मैंने पाया गुरु का सहारा, अब दूर न भव का किनारा,
सेवा करूँ, आज्ञा पालूँ, आज चरण मैं। आत्मशांति.....
हे गुरुवर समता के दाता, हो आत्मगुणों के त्राता
''क्षमा'' गुरु चरण पखारे, निज आतम रतन सँवारे,
गुण पाये, गीत गायें, आज चरण में। आत्मशांति.....

रचनाकार-आ. क्षमाश्री माताजी

गुरुराज SSS गुरुराज

तर्ज -(हे राम.....)

गुरुराज SS गुरुराज SS गुरुराज SS गुरुराज SS
कुंथु गुरु से, दिक्षा धारी 2
बन ने हेतु, जो आत्मपुजारी
कनकनंदी कहलायें।।.....गुरुराज SS ....
गोमटेशगिरी, धन्य हुई थी।
दीक्षा स्थली बनकर, गूँज रही थी।
पावन क्षण थे महान।। गुरुराज SS ....
गुरुवर ज्ञानी, मोहतम हारे
ज्ञान की ज्योति, से सब को उजारे
गुरुवर ज्ञान रवि.....गुरुराज SS ....

साँवलिया छवि, मनको लुभाये
संस्कृति समता की अलख जगाये
सरल शांत मुस्कान.....गुरुराज SS ....
भावनायें भाते, शांती अमन की
कामनायें करते, तारण तरण की
''फाल्गुनी'' करे, नमस्कार.....गुरुराज SS ....

''गुरु चरण में नमन''

तर्ज -(रात कली इक.....)

धन्य हमारे भाग्य जगे हैं, गुरु चरण में नमन करें।
सूरी कनकनंदी को ध्याकर, पाप ताप का वमन करें।। धन्य.....
वैश्विक विचारक, पाप निवारक, निष्पृहवृत्ती धारी।
समता सखी का साथ निभाते, सत्य महाव्रतधारी।।
इनके चरणों में जो आये, उसका जीवन सुमन खिले। धन्य.....
सिद्धान्त चक्री, अभीक्ष्णज्ञानी, धर्म का सार बताते।
सम्यकमार्ग पर खुद भी चलते शिष्यों को भी चलाते।।
गुरु की शिक्षा को अपनाकर, हम सद्गुणों का चयन करें।। धन्य.....
संस्कार देकर देव बनाते, अनगढ़ इंसानों को।
सत्य गवेषक, अद्भुत चिंतन देते आप जहाँ को।।
कलिकाल सर्वज्ञ दिवाकर! के चरणों में नमन करें। धन्य.....
गुरुवर ज्ञानी, हम हैं अज्ञानी, सम्यक् ज्योत जलादो।
क्षमा के धारी, दुःख परिहारी, मुक्ति का राज बतादो।।
''राज'', ''क्षमा'' तव चरणों में आकर मुक्तिरमा का वरण करें। धन्य.....

रचनाकार-आ. राजश्री क्षमाश्री

''आचार्य श्री का संदेश''

शब्द संकलन - प.पू. आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

तर्ज -(संदेशा भेजा माँ ने.....)

विमल भावना से भेजूँ संदेशा देखो आज मैं।
कनकनंदी का हृदय पुकारे दर्द भरी आवाज में।।
नाना भाषा के भाषी क्यों अपनी भाषा भूल गये।
गरिमा छोड़ी संस्कृति मोड़ी क्यों भोगों में झूल गये।।
निज भाषा के गौरव की भी चर्चा होवे राज में। कनकनंदी.....।
न भारत मां की रक्षा न राष्ट्र का भी ध्यान है।
गलत शिक्षा ने हमारा तोड़ दिया अभिमान है।।
अब तो कठिन परीक्षा होगी इस कलयुग के राज में। कनकनंदी.....।
आज भ्रष्ट देशों में गिनती कैसे अब बर्दशात है।
अपने स्वाभिमान को भूले ये भी इक अभिशाप है।
नैतिकता के फूल खिलाओ अपने-अपने बाग में। कनकनंदी.....।
कतरा-कतरा लहु का देकर आजादी दिलवायी है।
आज उन्हीं को भूल के तुमने उनकी हंसी उड़ाई है।।
संस्कारों को फिर से ले आओ उन वीरों की याद में। कनकनंदी.....
आज कसौटी पर कसना है फिर से अपनी भावना।
स्वारथ का नाता तज दो करो पुण्य की कामना।।
हर मानव जब आदर्श बनेगा बने आदर्श समाज रे। कनकनंदी.....
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई या हो बुद्ध पारसी भाई।
भारत माता के आँचल में सबने छाया है पाई।।
अब उत्थान की अलख जगायें फिर से अपने राज में। कनकनंदी.....

प्रस्तुति-क्षमाश्री

गुरुवर का आदर्श-हमारा कर्त्तव्य

तर्ज -(वह शक्ति हमें दो.....)

हमने जग को तो जगाया है, खुद को भी आज जगायेंगें।
गुरुवर की शपथ निभाने को, हम अपना कदम बढ़ायेंगें।।

धैर्य, क्षमा की भूमि में निष्ठा के बीज लगाना है।
तप, त्याग और संयम की क्यारी को आज सजाना है।।
सत साम्य सुखामृत सुमनों की मनहर सुरभि पा जायेंगे। गुरुवर.....

शुभ संकल्पों की ले मशाल क्रांति की अलख जगाना है।
निज आत्मभाव के शंखनाद से निज चैतन्य बुलाना है।।
निज स्वभाव में ध्यान लगा आनंदामृत पा जायेंगे। गुरुवर.....

संकीर्ण स्वार्थमय पंथवाद की उलझन में न आना है।
सब ग्रंथवाद व संतवाद को भी अब दूर हटाना है।।
सुख साम्यवाद को अपनाकर हम सत्यवाद को लायेंगे। गुरुवर.....

छल द्वेषदम्भ पाखण्ड छोड़ निज पद का भी हम ध्यान रखें।
शालीनता और सरलता से हम स्व पर कल्याण करें।।
वैयावृत्ति, सेवा, सहयोग की सदवृत्ति अपनायेंगे। गुरुवर.....

सीपुर से शिवपुर पाने का हमको शुभ लक्ष्य बनाना है।
ये दीन हीन याचक वृत्ति तज स्वाभिमान जगाना है।।
हम हैं वीर की सन्तानें हम वीर वृत्ति अपनायेंगे। गुरुवर.....

आचार्य कनकनंदी गुरुवर के आदर्शों को निभायेंगे।
स्वार्थ त्याग कर शान्ति समन्वय के हित कदम बढ़ायेंगे।।
गुरुवर के अनुशासन में रहकर हम धर्म ध्वजा फहरायेंगे। गुरुवर.....

प्रस्तुति-आर्यिका क्षमाश्री

गुरुवर को पड़गायेंगे

तर्ज -(पलके ही पलके बिछायेंगे.....)

अपने-अपने द्वारों को सजायेंगें, अपने प्यारे गुरुवर को पड़ गायेंगे।
नाना विधि से हम बुलायेंगें, अपने प्यारे गुरुवर को पड़ गायेंगें।। (2)

घर में शुद्धिपूर्वक हमने चौका लगाया।
शुद्ध आहार हमने भावों से बनाया।।
अपने मित्र जन को बुलायेंगें। अपने.....

कनकनंदी गुरुवर ने हमको सिखाया।
इंग्लिश, हिन्दी, संस्कृत में हमको समझाया।।
आहार दान देकर ज्ञान पायेंगें। अपने.....

गुरुवर हमारे हैं जग से न्यारे।
दिगम्बर मुद्रा धार एक भुक्ति पालें।।
आहार देकर स्वर्ग मोक्ष पायेंगे। अपने.....

पाणी पात्र में जो आहार हैं लेते।
भूखे रह जाते पर न याचना करते।।
बिना कहे गुरु को हम बुलायेंगे। अपने.....

धन्य कुमार ने गुरु को बुलाया।
पैर पकड़ गुरु को पड़गाया
उनके जैसा हम भी खीर खिलायेंगें। अपने.....

गुरुवर हमें यही समझाते हैं
दान देने वाले स्वर्ग, मोक्ष पाते हैं।
हम भी स्वर्ग, मोक्ष पायेंगे.....। अपने

रचियित्री-आर्यिका क्षमाश्री

प्रार्थना (गुरुवंदना)

हे परम कृपालु गुरुवर हम सब विनय भक्ति से नमन करें।
सूरी कनकनंदी की शरण में निज भावों को सरल करें।।
सत्य, साम्य की शिक्षा पाकर हम भी तुम सम बन जायें। 2
कुपथ मोह से त्रस्त दुखितजन उनके दुखों का दहन करें।। हे परम कृपालु .....
भारत का भ्रष्टाचार नशे गुरुवर चिंतन यही करते हैं।
शांति क्रांति हो आज विश्व में पाप-ताप का शमन करे।। हे परम कृपालु .....
ज्ञान ज्योति विकसाये हम सब, तम अज्ञान विनश जाये।
वीर महापुरुषों के पथ का, मन, वचन, तन से चयन करें।। हे परम कृपालु .....
विनय करें हम वृद्धजनों की, और छोटो से प्यार करें।
क्षमा धर्म का पालन करके, मुक्ति महल में गमन करें। हे परम कृपालु.....

रचनाकार-आर्यिका क्षमाश्री माताजी

परिच्छेद-VI

पूज्य - पूजा - आराधना

सीपुर वाले काले-काले बड़े बाबा की जय

तर्ज - (नरेन्द्र छंद.....)

सीपुर वाले श्रेयांस प्रभु श्रेयस पद श्रेय दिलाते हैं।
सब भक्त हाथ में पुष्प लिये भक्ति भावों से बुलाते हैं।।
काले-काले बाबा मेरे मन मंदिर में आओ।
आतम उद्धारक हे प्रभुवर मेरे मन में ही बस जाओ।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

स्वर्ण मयी जल की झारी निर्मल जल से भर लाता हूँ।
त्रय रोगों से मुक्ति पाने श्री प्रभुवर चरण चढ़ाता हूँ।।
सीपुर बाबा अतिशयकारी सबको अतिशय दिखलाते हो।
जो भी तव भक्ति करता है तुम उसको पास बुलाते हो।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशानाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

चंदन केसर कर्पूर मिला सुरभित चरणों में लगाता हूँ।
शीतल छाया प्रभु की पाकर अद्भुत शांति पा जाता हूँ।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयासनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदन निर्वपामिति स्वाहा।

अक्षय अनंत सुख के धारी हो अक्षय सुख के भण्डारी।
अक्षय अनुपम तंदुल लाया स्वीकार करो हे सुखकारी।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्

निर्वपामिति स्वाहा।

मनहर पुष्पों से सुरभित मन चरणों में पुष्प चढ़ाता हूँ।

मैं कामजयी प्रभु के चरणों में आतम सुखी बनाता हूँ।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशानाय पुष्पाणि निर्वपामिति स्वाहा।

नाना व्यंजन के थाल सजा प्रभु चरणों में ले आया हूँ।

क्षुधा विजेता प्रभुवर को चढ़ा मन में अति हर्षाया हूँ।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाल से दीपावली रोज मनाता हूँ।

हे प्रभु चरणों की अर्चाकर मोहान्ध आज विनशाता हूँ।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

आठों कर्मों को नाश प्रभु सिद्ध परम पद पाया है।

कालागुरु आदि धूप चढ़ा हमने तुमको ही ध्याया है।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

अंगूर, अनार, आम, केला जो प्रभु को रोज चढ़ाते हैं।

इस भव में सुख शांति पाकर वे मोक्षमहाफल पाते हैं।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामिति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य की थाल भँरू सातों दिन नित्य चढ़ाऊँगा

हर शनिवार को हे भगवान तेरा शुभ दर्शन पाऊँगा।। सीपुर.....

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पंचकल्याणक (शेर छंद)

तर्ज - (हे दीन बंधु .....)

पंचकल्याणक प्रभु के रोज मनाओ।

उत्सव हृदय में धारकर शुभ भाव बनाओ

विष्णुराज के राज्य में सुर रत्न बरसायें

माता सुनंदा भी धन्य कहाये

प्रभु का गर्भ अवतरण सिंहपुरी मनाये

रत्नों से पूजा करे पुण्य कमाये।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ग्यारस वदी फागुन प्रभु ने जन्म था लिया।

माता-पिता को नाथ ने धन्य कर दिया।।

देवेन्द्र ने मेरू पे अभिषेक है किया।

जन्म कल्याणक मना जन्म सफल कर लिया।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा एकादश्यां जन्ममंगल मंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रेयांसप्रभु को न राजपाट सुहाये।

त्यागे सभी वे मोहजाल निज ध्यान लगायें।।

एकादशी फागुन वदी थी तिथि न्यारी।

प्रभु का तपकल्याणक मनाये नर नारी।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रेणी चढ़े श्रेयांसनाथ मुक्ति को पाये।

माघ कृष्णा अमावस को धन्य बनायें।।

ज्ञान कल्याणक सुर नरों ने मनाया।

दीपोत्सव मनाकर अपना ज्ञान बढ़ाया।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा अमावस्यायां केवलज्ञानमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रावण सुदी पूनम को प्रभु कर्म नशायें।

सौधर्म इन्द्र देव सभी कल्याणक मनायें।।

सीपुर तीर्थक्षेत्र पर हम सभी आयें।

एक शत आठ किलो का लाडु भी चढ़ायें।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मंगल मय शुभ कलश ले शांतिधार सुखकार।

पुष्पांजलि के पुष्प ले जजुँ चरण मनहार।।

शांतये शांतिधारा.....दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

जाप्य मंत्रः ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

तर्ज - (हे वीर तुम्हारे.....)

दोहा - सीपुर अतिशय क्षेत्र में श्रेयांसनाथ भगवान।

भक्ति से जयमाल पढ़ गाऊँ मैं गुणगान।।

शुभ छंद

श्री श्रेयांसनाथ प्रभुवर के दर्शन को यहाँ सब आते हैं।

सीपुर के पावन तीरथ पर सब अपने कष्ट नशाते हैं।।

सुनंदा नंदन जगत वंदन के सभी गुण गा रहे।

बाजे बधाई सिंहपुरी में राज धन लुटा रहे।।

श्रेयांस प्रभु ने राज्यकर कई वर्ष प्रजा पालन किया।

देखा ऋतु को बदलते तब वन की ओर विहार किया।।

तत्क्षण सभी कुछ त्यागकर प्रभु मुनि दिगम्बर बन गये।

तपत्याग में लवलीन हो मुक्ति रमापति बन गये।।

सीपुर क्षेत्र का इतिहास भी प्रभुभक्ति से अब जुड़ गया।

समता सागर मुनिराज से भगवान रायकिया ने कहा।।

हे मुनि सीपुर गाँव में जिनचैत्य अति प्राचीन है।

धूली भरा जिनचैत्य है दीमक चढ़ी जिनबिम्ब है।।

पुण्य उदय से क्षेत्र में मुनिवर नितिन संग आ गये।

चातुर्मास यहीं करें यह भाव नितिन से कहे।।

अध्यक्ष बन मणिलाल जी व्यवस्थायें वे करने लगे।

महावीर व अन्य भक्त भी भक्ती से यहाँ जुड़ने लगे।।

क्षेत्रपाल बाबा भक्ति भावों से यहाँ पर आ गये।

रक्षा करी मुनिराज की नितिन उन्हें मन भा गये।।

अभिषेक हेतु जल न था बाबा ने जल बहा दिया।

क्षेत्रपाल बाबा नित नये चमत्कार दिखाते हैं यहाँ।।

आये संघर्ष अनेक यहाँ तो भी मुनिवर न घबराते।

बाबा नितिन के माध्यम द्वारा जिन धर्म ध्वज फहराते।।

बाबा की सभा शनिवार को लगती यहाँ निराली।

आते भक्ति से भक्त यहाँ न कोई जाता खाली ।।

छः वर्ष में पंच चातुर्मास बिन श्रावक घर के हुये यहाँ।

पंचम चातुर्मास हेतु सूरी कनकनंदी पधारे यहाँ।।

पच्चीस सौ सैंतीस किलो का लाडू चढ़ाकर इतिहास बनाये हैं।

प्रत्येक निर्वाणोत्सव में शत आठ किलो लाडू चढ़ाते हैं।।

इक्कीस चातुर्मास हेतु नितिन भावों से श्रीफल चढ़ाते हैं।
देश-विदेश के भक्त यहाँ आकर के लाभ उठाते हैं।।
हम भी भक्तिमय भावों से जयमाल प्रभु की गाते हैं।
सीपुर क्षेत्र में आकर हम अतिशय पुण्य कमाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा - सीपुर अतिशय क्षेत्र में नित हो शांतिधार।
ग्यारह लीटर दूध से कर होता हर्ष अपार।।

इत्याशीर्वाद : दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

रचनाकार - आ. क्षमाश्री माताजी

सीपुर अतिशय क्षेत्र
श्रेयांसनाथ भगवान की आरती

तर्ज - (घुंघरू छम-छमा.....)

घुँघरू छम छमा छम छन नन नन बाजे रे- बाजे रे.....
श्रेयांस प्रभु की आरती में मेरा मनवा नाचे रे।। घुघँरू.....
सीपुर क्षेत्र है अतिशयकारी,
प्रतिमा है सुखकारी
भव्यजनों के मन को हरती,
लगती सबसे न्यारी।। घुँघरू.....
अनंतगुणधारी प्रभुवर की,
आरती हम सब गायें
अनंत सुख स्वामी बनकर,
सारे दुःख नशायें।। घुँघरू.....

मनहर प्रभु की मुद्रा लख,
भक्त शरण में आये
नृत्य गान से भक्ति बढ़ाकर,
अतिशय पुण्य कमायें।। घुँघरू.....
नीतिन जी काले-काले,
बड़े बाबा कहकर बुलाये
तव भक्तों को धागा बाँधे,
कष्ट दूर हो जाये।। घुँघरू.....

रचनाकार - आ. क्षमाश्री माताजी

सीपुर को तीर्थ बनाया है

तर्ज - (स्यादवाद के इस.....)

सीपुर को शुभ तीर्थ बनाने का अभियान चलाया है।
कनकनंदी जी गुरुवर ने क्रांति का बिगुल बजाया है।।
गुरुवर का आशीष यहाँ पर भक्तजनों ने पाया है। कनकनंदी.....
हम रूग्ण, वृद्ध, उपेक्षित साधू संतो का सम्मान करें।
उनकी सेवा हित संत-सदन आदि का भी इंतजाम करें।।
यह भाव नितिन हरदम रखते यह देख हृदय भर आया है।
यहाँ संत साधनारत होकर संकल्प-विकल्प का त्याग करें।
आत्म शांति की प्राप्ति हेतु नित स्वाध्याय व ध्यान करें।।
इसी लक्ष्य को लेकर यह तीर्थ यहाँ बनाया है। कनकनंदी.....
कई युवक यहाँ से जुड़े हुये अपना तन, मन, धन लगा रहे।
संतो की सेवा करने नित नई योजना बना रहे।।
धन्य समझ इन युवकों को सबने ही हाथ बटाया है। कनकनंदी....
गुरुवर कहते हैं धन्य हैं वे जो सेवा कर उपकार करें।

ऐसे लोगों पर संत वृद्ध भी गहरा आत्म विचार करें।।

गुरुवर ने आगम युत चलने का स्वयं विचार बनाया है। कनकनंदी....

अब संतों को यही सूत्र गुरुवर जी नित सिखलाते हैं।

कलह, विषमता, पंथवाद, मतवाद का त्याग दिलाते हैं।।

यहाँ पे रहने वाले संतों हित उद्देश्य बनाया है। कनकनंदी.....

नितिन भाई गुरुवर की चर्या से अति हर्षाते हैं।

इक्कीस चातुर्मास हेतु श्रीफल भी रोज चढ़ाते हैं

भक्ति भावना देख गुरुवर ने उनका भाव बढ़ाया है। कनकनंदी.....

इन चरणों को न छोड़ूं वे यही भावना भाते हैं।

सुबह कहो या शाम कहो गुरु भक्ति में रम जाते हैं।।

ऐसी भक्ति देख-देख गुरु का मन हर्षाया है। कनकनंदी.....

प्रस्तुति-आर्यिका क्षमाश्री जी

वैश्विक विचारक वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव का पूजन

गुरु पद प्रक्षाल हेतु दोहे :- (जल)

निर्मल जल की झारी से करता पद प्रक्षाल।

निर्मल तव मन सम गुरु मम मन हो खुशहाल।।

-जलेन पादप्रक्षालनम् करोमि.....

(चंदन)

चंदन सुरभित चरण चढ़ा दूर करे संताप।

शीतल वाणी पा नशें भविजन के सब पाप।।

-चंदनेन पादप्रक्षालनम् करोमि.....

(दूध)

पवित्र दूध की धारा से यजे चरण सुखकार।

क्षीर-नीर विवेक धरे भवदधि तारणहार।।

-दुग्धेन पादप्रक्षालनम करोमि.....

(पूजा)

तर्ज - (नरेन्द्र छन्द)

वैश्विक विचारक जग उद्धारक परम गुरु का अभिवंदन।

सब रंग-बिरंगें पुष्पों से करते गुरुवर का आह्वानन्।।

हर हृदयासन पर बुला रहे करने गुरु गुण का शुभ अर्चन।

सानिध्य आपका सदा रहे इन भावों से सन्निधिकरण।।

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आव्हाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठःठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पावन जलझारी भरभरकर गुरुवर के चरण चढ़ायेंगें।

वात्सल्य समतामयी शीतल छाया में ममता को दूर भगायेंगें।।

अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी बन अध्यात्म रस का पान करें।

ऐसे गुरु का अर्चन करके नरजन्म सफल अभियान करें।।

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

चंदन केशर कर्पूर मिला सुरभित चंदन घिस लाते हैं।

समताधारी निष्पृहवृत्ती पथगामी चरण लगाते हैं।। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामिति स्वाहा।

मुक्तामणि या धवलाक्षत के शुभ पुँज चरणों में चढ़ाते हैं।
अक्षय पद के अभिलाषी गुरु अक्षयपथ दर्शाते हैं।। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामिति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित पुष्पों को चुन ताजे बगिया से लाये हैं।
आत्मबिहारी गुरु चरणों में रोज चढ़ाये हैं।। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

तत्त्व गवेषक निज अन्वेषक क्षुधा परिषह भी सहते।
हम क्षुधा से मुक्ति पाने को नैवेद्य थाल अर्पण करते।। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हे ज्ञानी! अनुभव के धारी नव चिंतन जोत जलाते हैं।
मिथ्यात्व दूर करने हेतु हम गुरु को दीप चढ़ाते हैं।। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रज्वलित अग्नि में धूप खिरा कर्मों का धूम नशायेंगें।
गुरु के शोधमयी अनुभव से नयी क्रांति लायेंगे।। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

हम आम, अनार, अंगूर लिये गुरु चरणों को नित ध्याते हैं।
मुक्ति पथिक अनुगामी का हम सत्संग पाने आते हैं।। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामिति स्वाहा।

एकांतवास के विश्वासी हो मौन तपस्वी दृढ़ त्यागी।
चिंतन मनन में रत गुरु को हम अर्ध चढ़ा बने वैरागी। अभीक्ष्ण.....

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो अनर्घपप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अध्यात्म गुरु के चरण में नमन करूँ त्रयबार।
शांतिधारा धार दे पुष्पांजली मनहार।।

शांतिधारा, परिपुष्पाजंली क्षिपेत

जयमाला

दोहा :- ज्ञान भानु गुरु के चरण भक्त यजे त्रयकाल।
गुरु गुण पाने हम पढ़ें गुणमाला जयमाल।।

सूरी कनकनंदी जी निराले, चौपाई बचपन से हैं प्रतिभा वाले।
गुरु का व्यक्तित्व सबमें आला, विश्व में ध्वज फहराने वाला।।
विद्यार्थी जीवन से जिज्ञासु, सत्य धर्म के आप पिपासु।
अध्यात्म प्रेम के बन अनुरागी, विश्व ज्ञान प्रतीति जागी।
सर्वोच्च विकास का ध्येय बनाऊँ, अपना आतम सुखी बनाऊँ।
उत्तम लक्ष्य गुरु मन भाया, साधू बनना लक्ष्य बनाया।।
व्यापक दृष्टिकोण बनाये, पठन पाठन में समय बिताये।
देश-विदेश का धर्म समन्वय, करते गुरुवर बिन धन अपव्यय।।
विदेशों में भी अलख जगायें, अपने शिष्यों को पहुँचाये।
हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, दिगम्बर श्वेताम्बर सब भाई।।
कोई प्रोफेसर कोई कुलपति, कोई वैज्ञानिक कोई धनपति।

राष्ट्रीय अंतर राष्ट्रीय शिक्षायें, शिविर संगोष्ठी से सब पाये।।
दो सौ ग्रंथ शोधार्थ लिखे हैं, जिससे शोधार्थी शोध करे हैं।
चौदह प्रदेश के शत विद्यालय, साहित्य केन्द्र के बन गये आलय।।
यू.जी.सी. से मान्यता पायें, शोधार्थी सब लाभ उठायें।
अपने शिष्यों को ज्ञान करायें, भारत विश्व गुरु बन जाये।
देश-विदेश के भक्त मिले हैं, श्रम-शक्ति धन खर्च करे हैं।।
स्व प्रेरणा से भाव जगाये, समय साधन सभी लुटाये।
शिष्य आपका प्रतिनिधित्व निभाये, विश्व धर्म संसद में जाये।।
गुरुवर विश्व सदस्य कहाये, पीस नेक्सट संस्था कहलाये।
दृष्टिकोण गुरु का हितकारी, युगीन सामयिक विश्व बिहारी।।
चौदह भाषा के गुरु ज्ञाता, सभी विषयों के हैं विख्याता।
फिर भी सत्य अनुभव के पुजारी, निष्पृह वृत्ति है अविकारी।।
इतने कार्य स्वयं हो जायें, अयाचकवृत्ति गौरव पायें।
श्री गुरुवर के गुण नित गायें, भाव सुमन की माल बनायें।।

ॐ ह्रीं परमपूज्य आचार्य श्री कनकनंदी गरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा - जय - जय श्री गुरुदेव के गुण हैं अपरम्पार।
'क्षमा' अल्पमति है गुरु कर न सके विस्तार।।

इत्याशीर्वाद, परिपुष्पाजंलि क्षिपेत्

रचनाकार-आर्यिका क्षमाश्री

"कनकनंदी है नाम तुम्हारा"

तर्ज-(घुंघरू छम छमा छम .....)

घुंघरू छम छमा छम छन नन नन बाजे रे। बाजे रे.....

गुरुवर जी की आरती में मेरा मनवा नाचे रे।।
कनकनंदी है नाम तुम्हारा सुरी पद के धारी।
कुंथु गुरु के प्रथम शिष्य है सावलिया मनहारी।।
घुंघरू छम छमा छम छन नन नन बाजे रे। बाजे रे.....
तीर्थंकर सम बनने जो बाईस परिषह झेले।
बालकपन से खेल छोड़ जो ज्ञान की होली खेले।।
घुंघरू छम छमा छम छन नन नन बाजे रे। बाजे रे.....
आत्म शक्ति को पाने हेतु आत्म ध्यान लगाये।
स्वहित परहित में ही जानों यही बात बतलाये।।
घुंघरू छम छमा छम छन नन नन बाजे रे। बाजे रे.....
भक्ति भाव सहित दीपक ले गुरु की आरती गाये।
'फाल्गुनी', भी भव पार करे ये आश हृदय भर लाये।।
घुंघरू छम छमा छम छन नन नन बाजे रे।
गुरुवर जी की आरती में मेरा मनवा नाचे रे।।

रचनाकार - ब्र. फाल्गुनी

आरती

तर्ज-(हाथों में ले के .....)

हमने लिया है दीपक प्रजाल,
आये गुरुवर हम तेरे पास
करे हम आरतियाँ कनकनंदी गुरु,
वात्सल्य मूरतियाँ कनकनंदी गुरु।। (2)
साम्यता की मूरत, देती सत्य संदेश ये न्यारा।
आरती करे हम, दे दो अपने अनुभव का सहारा।।
ढोलक ले, झांझर ले

गायें हम आरतियाँ कनकनंदी गुरु
वात्सल्य मूरतियॉ कनकनंदी गुरु।।
विश्व में ज्ञान फैलाते, अपने शिष्यों को ज्ञानी बनाके।
जैन अजैन सभी मिल, गुरुवर का ज्ञान हैं पाते।।
जगमगाते दीपक ले
गायें हम आरतियाँ कनकनंदी गुरु
वात्सल्यमय मूरतियॉ कनकनंदी गुरु।।
धर्म के रहस्य निज, अनुभव से जो हैं बताते।
व्यापक धर्म की ज्योति, सारे जग में हैं आप फैलाते।।
क्षमा गुरु शरणों में
गायें हम आरतियाँ कनकनंदी गुरु
वात्सल्य मूरतियॉ कनकनन्दी गुरु।।

आरती

तर्ज-(उच्चे-उच्चे शिखरो वाला है .....)

आरती करने आये रे, गुरुवरजी तुम्हारी।
भक्ति करने आये रे, मुनिवरजी तुम्हारी।।
गुरुवर तुम्हारी हो, ऋषिवर तुम्हारी।
आरती करने आये रे गुरुवरजी तुम्हारी।।
बालपन में प्रतिभाधारी, पाई जिनने शिक्षा न्यारी।
सब जन कीरत गाये रे, गुरुवरजी तुम्हारी।। आरती करने.....
देश विदेशों का ज्ञान जो करते, जैन धर्म का प्रचार भी करते।
बन गये आत्म विहारी रे, गुरुवर जी हमारे।। आरती करने.....
सत्य साम्य मृदु वचन जो कहते, भक्तों जो भगवान हैं लगते।
दिगम्बर मुद्रा धारी रे गुरुवरजी हमारे।। आरती करने.....
तुम्हारी शरण में जो भी आते, सुख शांति का अनुभव पाते।
'फाल्गुनी' आरती गायेरे, गुरुवर जी तुम्हारी।।
आरती करने आये रे गुरुवरजी तुम्हारी।

विश्व मैत्री भावना

परम पूज्य वैश्विक विचारक आचार्य रत्न कनकनंदी जी गुरुदेव की भावना

तर्ज-(जिया कब तक.....)

विश्वशांति विश्वमैत्री का भाव जगाना है।
कनकनंदी कहें सबसे वैश्वीकरण लाना है।।
अध्यात्म भरा भारत क्यों अब दुख पाता है
भ्रष्टाचार व पतन को अब क्यों अपनाता है,
प्राचीन संस्कृति समझकर पुरुषार्थ जगाना है।। कनकनंदी.....
प्राचीन काल भारत में जो आर्य रहते थे
पशु, पक्षी आदि भी प्राकृतिक में पलते थे,
सिंह, नेवला, व्याघ्र आदि का अहिंसक बाना था।। कनकनंदी.....
सब जीव सुखी निर्भय सदाचार से रहते थे
कल्पवृक्षों से अशन, वसन व भोजन मिलते थे,
न चंदा की किरणें सूरज का तपाना था।। कनकनंदी.....
स्वामी, सेवक, राजा, प्रजा का भेदभाव न था
निरोगी काया व सुखमय ही जीवन था,
प्राकृतिक वैश्वीकरण फिर से अपनाना है।। कनकनंदी.....
सब हितकारी दुखपरिहारी धर्म हमारा है
विश्वशान्तिकारक आध्यात्मिक सबसे न्यारा है,
हो धार्मिक वैश्वीकरण का भाव लाना है।। कनकनंदी.....
सब जीवों की रक्षा पर्यावरण सुरक्षा है
आधुनिक विज्ञान से पूर्व जिनागम कहता है,
अहिंसा परमो धर्मः जीवन में लाना है।। कनकनंदी.....
जियो और जीने दो प्रभु वीर बताते हैं
आधुनिक विज्ञानी भी इसको अपनाते हैं,
वैश्वीकरण की पुस्तक से इसको अपनाना है।। कनकनंदी.....
राजनीति सेवा धर्म आधुनिक वैश्वीकरण
उदारवादी बनकर हम करें मनन चिंतन,
वैश्वीकरण से भारत को महान् बनाना है।। कनकनंदी.....
राजनीति सेवा धर्म आधुनिक वैश्वीकरण
उदारवादी बनकर हम करें मनन चिंतन,
वैश्वीकरण से भारत को महान् बनाना है। कनकनंदी.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

भारत के घर गली की वधशाला/यातना गृह बंद हो

वैश्विक विचारक परम पूज्य आचार्य रत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव की भावना

तर्ज-(बाबुल की.....)

भारत की भूमि में पहले नारी का भी सम्मान हुआ।
उनसे जनम लेने वाला कोई महापुरुष भगवान हुआ।।

आज भारत में नारी की निर्मम हत्यायें होती हैं
गर्भ में ही रहकर कन्यायें अपने भाग्य को रोती हैं,
सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा का मन्दिर बनाकर मान दिया।। भारत.....

शिशु हत्या, दहेज, बलात्कार इस देश में जिनका होता है,
समाचार पत्र में मुख्य पृष्ठ में वर्णन होता खोटा है
आदर्श भुलाकर धन के स्वारथ ने यह अपमान किया।। भारत.....

ऋषभदेव तीर्थंकर ने नारी शिक्षा प्रारम्भ करी
महापुरुषों ने नारी की मर्यादा की आन रखी
नर मादा में भेद समझ, विज्ञान का अपमान हुआ।। भारत.....

परिणाम भी अपना फल देकर सबको सबक सिखाते हैं
कनकनंदी जी निज लेखनी से आँकड़े भी दर्शाते हैं,
लिंगानुपात को जानकर अब क्यों भारत हैरान हुआ।। भारत.....

कनकनंदी निजमन की पीड़ा निज ग्रंथों में ही लिखते हैं
कन्याओं के अभिशापों से क्या कोई सुखी रह सकते हैं,
महिलाओं पर प्रतिवर्ष अत्याचार का मान दो लाख हुआ।। भारत.....

भारत को आगे बढ़ाने हेतु अब हमको आगे आना है
नारी रक्षा अभियान बना काले कुकृत्य हटाना है,
ममता की रक्षा जहाँ हुई वह देश सदा खुशहाल हुआ।। भारत.....

प्रस्तुति - आ. क्षमाश्री माताजी

आ. कनकनन्दीजी के साहित्य कक्ष की स्थापना एवं शोधकार्य सम्बन्धित विश्वविद्यालय

इस कार्य के पुरोधा डी.लिट्, डी.एस.सी., जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी, समाज भूषण प्रो. डॉ. सोहनराज जी तातेड़ हैं, शोधार्थी इनसे संपर्क करें। मो. 9829650702

क्र.सं.	वि.वि. का नाम	जिम्मेदार महानुभाव	फोन नं.
1.	राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)	डॉ. बी.एल.सेठी (संस्थापक एवं शोध निर्देशक)	94147 43340
2.	सेठ मोतीलाल पी.जी. कॉलेज, झुंझुनु (राज.)	डॉ. बी.एल.सेठी (संस्थापक एवं शोध निर्देशक)	94147 43340
3.	जैन विश्वभारती वि.वि. लाडनूँ (राज.)	प्रो.जे.पी.एन मिश्रा	94143 42003
4.	एल.डी. इंस्टीट्यूट, अहमदाबाद (गुजरात)	डॉ. जितेन्द्र बी.शाह	098258 00126
5.	जयनारायण व्यास वि.वि., जोधपुर (राज.)	डॉ. चन्द्रशेखर	98280 82560
6.	अखिल भारतीय दर्शन परिषद्, जबलपुर (म.प्र.)	प्रो. एस.पी.दुबे	092291 32699
7.	बनारस हिन्दू वि.विद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)	डॉ. विजय कुमार जैन	094502 40359
8.	तीर्थङ्कर वर्द्धमान वि.विद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)	डॉ. आर. के. मित्तल	098379 33666
9.	सिंघानिया वि.वि. पचेरी बड़ी, झुंझुनु (राज.)	प्रो. योगेश कुमार शर्मा	99826 09201 94143 47157
10.	जोधपुर राष्ट्रीय वि.विद्यालय, जोधपुर (राज.)	डॉ. प्रदीप कुमार डे	93515 90734
11.	गुजरात वि.विद्यालय, अहमदाबाद (गुज.)	डॉ. दिलीप चारण	098251 48840
12.	श्रीधर वि.विद्यालय, पिलानी (राज.)	डॉ. श्याम सुन्दर पुरोहित	96172 00650
13.	आर.सी.एस.एस. कॉलेज, वीहट (बिहार)	डॉ. विद्यासागर सिंह	099737 47234

क्र.सं. वि.वि. का नाम	जिम्मेदार महानुभाव	फोन नं.
14. लखनऊ वि.विद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)	डॉ. अमरजीत यादव	094157 74470
15. मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि., उदयपुर (राज.)	लायब्रेरियन	
16. विक्रम वि.विद्यालय, उज्जैन(म.प्र.)	डॉ. वीरबाला छाजेड़	
17. एन.एम.आर. इंजी. कॉलेज, हैदराबाद (आ.प्र.)	श्री किरण कुमार जैन (वैज्ञानिक)	095021 62631
18. मुम्बई विश्व विद्यालय, मुम्बई (महाराष्ट्र)		
19. जम्मु विश्व विद्यालय (जम्मु-काश्मीर)		
20. कोलहान यूनिवर्सिटी, चायवास, जमशेदपुर (करीम सिटी कॉलेज लायब्रेरी)	प्रो. अशरफ बिहारी	
21. पंजाबी वि.विद्यालय पटियाला (पंजाब)		
22. पंजाब वि.विद्यालय चंडीगढ़ (पंजाब, हरि.)		
23. आन्ध्र वि.विद्यालय विशाखापट्टनम् (आ.प्र.)		
24. एम.डी.एस.डी. गर्ल्स कॉलेज, अम्बाला सिटी (पंजाब)		
25. लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, मुम्बई (महा.)		
26. बाहुबली प्राकृत संस्थान, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)		
27. एस.के.सोमैया, जैन स्टडी सेन्टर, मुम्बई (महा.)		
28. महात्मा गाँधी ग्रामोदय वि.वि., चित्रकूट (म.प्र.)		

क्र.सं. वि.वि. का नाम	जिम्मेदार महानुभाव	फोन नं.
29. टिबरवाल यूनिवर्सिटी, झुंझुनु (राज.)		
30. महात्मा ज्योतिबा फुले वि.वि., जयपुर (राज.)		
31. भगवन्त वि.वि., अजमेर (राज.)		
32. अमिति (AMITY) वि.वि., जयपुर (राज.)		
33. डॉ. हरिसिंह गौड वि.वि., सागर (म.प्र.)		
34. जगन्नाथ वि.वि., रामपुरा, जयपुर (राज.)		
35. विनोबा भावे वि.वि., हजारीबाग (झारखंड)		
36. इण्डियन बोर्ड ऑफ आल्टरनेटिव मेडिसिन, कलकत्ता (प. बंगाल)		
37. पश्चिमी गुजरात वि.वि., सूरत (गुजरात)		
38. प्राकृत भारती अकादमी, 13 A गुरुनानक पथ, मेन मालवीयनगर, जयपुर (राज.) 302017	सुरेन्द्र जी बोथरा	0141-2569712
39. आई.ए.एस.ई.यूनिवर्सिटी, सरदारशहर, जि.-चुरू (राज.)	डॉ. दिनेश कुमार बैद	9414086003
40. आई.सी.पी.आर.अकादमिक सेन्टर 3/9 विपुल खण्ड, गोमती नगर लखनऊ (उ.प्र.)-226010	डायरेक्टर-डॉ. मर्सी हेलन (P&R)	0522-2392636
41. कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र (हरि.)	प्रो. आर.एस.यादव, चेयरमैन (Dept. of Political Science)	09896088655

क्र.सं. वि.वि. का नाम	जिम्मेदार महानुभाव	फोन नं.
42. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर मराठवाड़ा वि.वि. औरंगाबाद (महा.)-431004	रजिस्ट्रार	0224-2334431
43. विश्वेश्वरैया टेक्नीकल यूनिवर्सिटी, ज्ञान संग्राम, बेलगाँम (कर्नाटक)-590018	प्रो. एच.पी.खिंचा, वी.सी.	09845010476
44. नागपुर यूनिवर्सिटी, रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्ग नागपुर (महा.) 440001	रजिस्ट्रार	0721-2532841
45. लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी जालन्धर, दिल्ली जी.टी. रोड़ (NH-1), फगवाड़ा (पंजाब)		01824-501200 (O)
46. द्रोणाचार्य कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग खेन्तावास,फारुखनगर,गुड़गाँव(हरि.)	एडवाइजर (R&D) डॉ. सी. रामसिंगला	09873453922
47. बी.आर.अम्बेडकर बिहार यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर (बिहार)-842001	रजिस्ट्रार	09431670221
48. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राज. संस्कृत वि.वि.,जयपुर (राज.)		
49. मेवाड़ यूनिवर्सिटी, चित्तौड़गढ़ (राज.)		
50. जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर (राज.)		
51. पद्मपत सिंघानिया यूनिवर्सिटी, उदयपुर (राज.)		
52. देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इन्दौर (म.प्र.)		
53. कर्नाटक यूनिवर्सिटी, धारवाड़ (कर्नाटक)		
54. एम.एस.यूनिवर्सिटी ऑफ बडोदरा (गुज.)		
55. उ.प्र. राजर्षिटण्डन ओपन यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद (उ.प्र.)		
56. राज. विद्यापीठ डीम्ड यूनि., उदयपुर (राज.)		
57. वर्धमान महावीर ओपन यूनि., कोटा (राज.)		

आचार्य कनकनंदी द्वारा अध्यापन

आचार्य कनकनंदी गुरुदेव द्वारा स्वसंघ तथा स्व-शिष्य डॉ. कछारा, प्रो. सुशीलचन्द्र, प्रो. प्रभात कुमार सपत्नीक, छोटूलाल चित्तौड़ा आदि को अध्यापन कराते हुए। (गुरुभक्त सांस्कृति ग्राम - रामगढ़, 2009)

संस्था के संरक्षक को गोल्ड मेडल

डॉ. लिट. प्रो. डॉ. सोहनराज तातेड़ संरक्षक ''इण्डो नेपाल समरसता संस्था'' में भारत के राजदूत 'गोल्ड मेडल' से 'रशियन एम्बेसी' काठमांडू (नेपाल) 1-10-2010 को अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में विभूषित करते हुए।डॉ. तातेड़ आ. कनकनंदी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त संस्थान के संरक्षक तथा शोधकार्य (झ.हव) हेतु भारत के 14 प्रदेशों के 57 वि.वि. में ''आचार्य कनकनंदी साहित्य कक्ष'' के संस्थापक है।

संस्था के संरक्षक द्वारा अ. संगोष्ठी में अध्यक्षता

प्रो. डॉ. सोहन राज तातेड श्रीलंका सरकार के वि.वि. ''दी ओपन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी फॉर काच्लीमेण्टरी मेडिसीन'' द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्षता करते हुए। (श्रीलंका 13-11-2010) डॉ. तातेड आ. कनकनंदी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त संस्थान के संरक्षक हैं।

संघस्थ ब्रह्मचारी द्वारा धार्मिक विद्यालय में अध्यापन

आ. कनकनंदी संघस्थ ब्र. सोहनलालजी द्वारा 5 ग्राम में ''धर्म दर्शन विज्ञान विद्यालय'' में अध्यापन हो रहा है। आ. कनकनंदी के शिष्य मुनिश्री चिन्मयानन्दी भी विराजमान है। प्रस्तुत चित्र चावण्ड, उदयपुर (राज.)